भृगुसहिता

भृगुसंहिता

भूमिका

यह श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र प्राचीनकाल से श्रवण गोचर होता रहा है और कोई २ पंडित कवि महाशय इस विद्याके ज्ञाता भी होते चले आये हैं और इस समय भी विद्यवान हैं उन्होंने इसही विद्या द्वारा सहस्त्रों रुपया प्राप्त किया और कर रहे हैं जिसको इस विद्याकी पूर्ण सिद्धी प्राप्त होजाय वह पुरुष अवश्यमेव अति माननीव देवरूप हो सकता है इस विद्याके मुख्य आचार्य श्री भृगुजी महाराज हैं तिसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगुसंहिता के नामसे जहां तहां प्रकट है परन्तु विशेष निर्णय करने पर जानागया है कि इसके कर्ता अनंत महाकवि प्रतीत होतेहैं यह महाविद्या शास्त्र जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है सो इसमें कोई संदेह नहीं है इसकी समान ज्योतिष में जन्मपत्र के फलित का ग्रन्थ अबतक कोई भी न देखा गया न सुना गया इसमें भृगु शुक्र के संवाद द्वारा जन्मपत्र की अद्भुत रचना निकलती है यद्यपि इसके सत्या सत्य होने में बहुधा लोगों को परम संदेह होता है और होता रहा है परन्तु हमारे सिद्धांत द्वारा यह पूर्ण रूप से सत्य है तिस पर भी विशेष सिद्धांत यह है कि सच्चों को सच जो झूठ समझे झूठ चित्त की प्रकृति के अनुकूल फलदायक है जैसे ईश्वर परम सत्यता से सर्वत्र व्याप्त है परन्तु पापी पुरुष उसमें भी अनेक प्रकार से दूषण लगाते हैं और उसके पूर्ण रूप को नहीं देख सकते किंतु पूर्ण ज्ञाता महात्माजन ही उसका दर्शन कर परम आनन्द पाते हैं तैसे ही अविश्वासी अज्ञाता पुरुष इसके पूर्ण आशय के न जानने वाले इसे असत्य कहें तो क्या आश्चर्य है देखो नास्तिक लोग ईश्वर को भी नहीं मानते तो फिर और कहना ही क्या है तिससे अधिक लिखना व्यर्थ है ॥

पूर्व काल में गुणग्राही राजा लोगों ने इस विद्या की अतिशय मान्यता की है और विद्या के ज्ञाता पुरुषों ने अब भी बड़ी बड़ी प्रतिष्ठा कीर्ति तथा धन प्राप्त किया है और कर रहे हैं इस महाशास्त्र का संग्रह बहुधा पंडितों ने किया है परन्तु इसका अन्त पाना असंभव है तथापि भी अति परिश्रम करने पर मनोरथ की सिद्धि होती ही चली आती है और आजकल तो राज्य के प्रबंध के कारण समस्त विद्या की वृद्धि है ॥ इति ॥

सूचना :— इस पुस्तक का सब अधिकार एक्ट २५ सन् ६७ के अनुकूल यन्त्राधीश प्रकाशक के आधीन संरक्षित है बिना आज्ञा कोई न छापे ॥

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयातकन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमश्वध्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचिंतं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्च नूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिबामभागेव्रणंयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्ररामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेनापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्णं दानव्रताचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णंभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीवकी चिंता रहे और बड़े २ लाभ के उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावे कभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में व्रन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत होगया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च
उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात महच्छोचश्चजायते सहसीदृढसंकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसगात्रिनिर्मुख चौरभीति
भवेच्चास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मंगलगृहमध्यश्चनृत्यगीतादिकंभवेत पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च
मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमंगलं पराक्रमीचयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं
देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु
प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत् सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापीकूप
तड़ागेशुआराममोदसंभव प्रथमेद्वितियेऽब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेऽब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे
सप्तमेऽब्देषुमंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसंप्राप्तं पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं
नवमेऽब्देजलोद्भीतो दशमकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचितातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं
प्रजायत मातृचिंतापराभूत्वा किंकरोमिकुतःसुखम् चतुपञ्चदशेऽब्देषु कांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका
भर्णंप्राप्यतनवित्तयशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधीप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम्
नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशाष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित
वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल
गानञ्चनववनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोषयतेविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिंशेद्विंत्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिंकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्धसंजाते
नगरामवाधिततं यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणांरुष्टतांब्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागा
त्रिंशमितेवर्षेंचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत गृहद्वाटधनंसर्वंविलगच्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेंनानाक्लेशसमुद्भवः
परन्तुधनलाभञ्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्त्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युंजयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेंमंगलं
ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत सून्यबाणमितेवर्षें अकस्माद्धनप्राप्यते मंत्रयंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रवाण
मितेवर्षें तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था
धनीनरः शरपञ्चमितेवर्षें पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनन्दमंगलं
लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेंसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेंअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्यकी बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वालाहो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्यमार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों कीं संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जापसे विशेष सुखकी वृद्धि हो पुत्रकी इच्छा पूर्णहो एक अल्पसे अधिक भयहो पाप ग्रहोंका पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा तिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्रसहित संकल्पकरे श्रेष्टब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मआनन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यःकामिनिप्रिय कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्कचित भोगमैश्वर्ययुक्तश्च कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिग्रहाक्रूर शास्त्रवावयनविश्वसेत कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्टुरोकटुभाषिणः साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोगप्रपीड्यं तेनचिरंविद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदातव्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापदुदुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रौप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसंचित्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च गंधंपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनंपञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंचवर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुकिंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयातकिंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

र्भातिसमायुक्तहीनजातिश्च साभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानश्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिंवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े२ आनंद भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्ज़त प्रतिष्टा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंशकी वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटम्ब का पालन करे श्रेष्ट संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राणसे अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें जीवका भयहो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्तहो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत होजाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हे पुत्र पहिले जनम में ये जीव बडा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्थातक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अंत को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यंत पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रतापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरंश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित ; रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षेंसुखंगता सवलंदीर्घदेहस्ततमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सवैंहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबुद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुर्भक्तभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षंभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंते विस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विंद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवें तातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तंदेव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दंसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिबुद्धिमंतोविशेषतः ; विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशत्तथैवच मानवृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वादाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविह्वलम् बाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुण्यकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाब्दसप्राप्य षष्टात्रिंशावधिंक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणपदुदीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षैकलाबृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुप्त आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत सर्ववाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् अन्यदेशाब्दनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाब्दगेकाव्यतथाचनभवेदकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवनं सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौख्यंप्राप्नुर्यंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनी तस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाब्दमायुष्यंप्राप्यतेमुनिमत्तम मंत्रदानमहापुण्यसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परंतु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे तिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल बंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परंतु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊको अत्यंत कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पापसे इस जन्ममें चिंता अधिक रहै घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहै लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न होतो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पापकी शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्र ाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वं प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वैं हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य
वादी सुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
बुद्धिमान्पंडित.शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वं
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोऽयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागमम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मंचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा
जय वाहनादिसुखकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददेहदीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविन्हलोजातंदीर्घ
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविन्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त
चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रञ्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणाज्वरप्रपीडिता
पञ्चमेसप्तमवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्यथाभूयसेक्कवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षैपञ्चचंद्राद्धकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतु:चन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट विंशाद्धकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुवि: सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैव च एतद्वर्षान्तरंशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्रविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्टतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम् चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्यशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्मायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लेनवम्यांचभृगुगुरुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णमायु:भवेत्तत ।। भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त हो भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्याबुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्री वंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुए तिसी से ये जीव महा पाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधी से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ।।

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभव द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेब्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत चक्षुरोगविजानीयात किचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णंपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनर्कष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिवांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानापिनृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाद्धके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच वित्रा हादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घंगुप्तचितायदाकदा गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंमप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येश आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिंगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसम्प्रयुक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिंवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्ठा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुखः हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनंद हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे । हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यंत युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधू मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखलोके भवितव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागमोनित्यं मध्यसौख्योह्यमाप्नुयात अहन्तारोहृदेगुप्तं लोभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिवत्स सर्वंआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वं दीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुण द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन सिद्धति अन्त्यसर्वसुखप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्द्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमन सत्यवक्ता सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफलप्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासांश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पापकर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत्त नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा वदवागतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महादानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण । पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घ चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभुतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेननरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दमाप्यते पूर्वयंजायते॥५म् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहै कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युजय का जाप वेद की विधी से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारो अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेद पाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदत्ता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योंमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्भयसमन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्यंतेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दीचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितुर्द्रव्यविनाशीचसुयत्नेनविवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलज्ञान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यज्ञविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामी निर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणंमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेंगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामवाधाप्रपीडत मित्राणांचञ्चलोबुद्धि किंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविव्हलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राब्दमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्ठयुग्मयदारभ्य रामरामाब्दमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ओंऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाब्दकेतथा तावत्कालगतेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभं गुप्तचिंता भवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तमे
कार्यजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंक्कापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोअजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षैंसुखंज्ञात्वादीर्घं
कार्योंसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी
सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं
रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणांशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णतोये
नित्यश षष्टमासाद्धयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव बृहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितदांते
चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्या
रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रेसुकुले
जन्मनात्रकार्यविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतये शुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकुरु महासि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वहबड़ा भागवाला हो दासदासी और सवारियों के सुखपावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुखपावे क्यों की इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बनगया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अंत में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय येजीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुवा था बहुतसा पुण्यदान किया परंतु एक समय बहुत सी मदराका पानकर उन्मत्तहो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वशहो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोधकर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यानको बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादिका नाशकरे क्लेश का अधिकारी हो हेशुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुखका नाशहो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवंमहासौख्यं मोदवृद्धि दिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे
द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे
आनन्दंवर्द्धतेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणारोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च
लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात सर्वसौख्या
गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेण आशक्तमनः
क्वचित भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात नारीभोगञ्चस्वेच्छया चंद्रजीवपरंप्रीती
आशक्तञ्चविशेषता कामरोगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थंनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मथावा
क्वयश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणाम्
चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्धतंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ
कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधीविनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्ध
मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोक्वे क्रमणप्राप्यतेसर्व द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन
पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीत्वदृश्यंते गुप्तक्लेशाविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व
पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोक्वे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज
कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्त आशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टभवैद्यो
पायंचनिस्फलं अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात मासेवर्षेंसुखंजातंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्ममन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घंकार्यंवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासीसमायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंमवें प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचिनं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यंतिभजनानन्दमर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेंयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहतेहैं हेपुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुखपावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता २ रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता २ रहजाय पुत्रके सुखमें विघ्न हो और कभी २ विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते २ उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभवश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हेपुत्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पाँच तोले स्वर्णकी गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयञ्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चितातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यञ्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाख्यात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभाग्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तं शोत्रवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीघबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्राचनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसयुक्तआशक्तश्चापिविन्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौच्छायाप्रपीड्यन्तेद्धयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतये रामाब्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीड़ाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षेराजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्चयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविघ्नानप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मैणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिध्रुवंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायते द्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवर्धिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहै सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मंत्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े २ खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहै प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जनम में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मंत्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ता अग्रेफलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिकयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्ताधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यवहारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थेमोदतेभुवि कांवत्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टि दृष्टेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनश्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंकिंकरे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीरंरक्षणार्थायराहूपूजाचकारयेत घृतंपूर्णघटंदान
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रेचत्रिंशाद्वेवेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
बृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षें ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वेवन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्ठमे
वर्षेंव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंकविद्याचपाठति अष्टमेऽब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमेकादशेद्वेषुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षें जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसप्राप्यबाणमेकं तथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वेचविशूचिरोगसंभवम्

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगमंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीड्यन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुण षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाङ्कके आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाङ्ककेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणीतले कदाचित्समयेकाऽन्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षट्त्रिंशाङ्कसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभंविजानीयास्थानञ्चवर्द्धते पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशातपुण्येननानासौख्यमगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाङ्ककेतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेसून्यसप्ताङ्कप्राप्तने मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसन्तानयानञ्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्वलक्षणसंपन्नबातपीड़ विशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ **भाषा** ॥ इस अङ्कको कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीनहो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्तहो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीनमन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुखभोगे हेशुक्र येजीव पूर्व जनम में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपती राजाकी तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परंतु कामवश होकर फिर वैश्या गामी होगया और जप दानादिक क्रिया सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वंगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यःकामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग संजातंसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धोनसंशय अति मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं त्वतां साधवानांखलानांचसुखार्थंप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तौ शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातंप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपालन्त बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकेवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारुणम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षंचपंचमे षष्ठमसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरेचनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राङ्ककंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि नविद्याप्राप्यतेदीर्घं निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षंचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घं यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तस्थापयेत आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत दानंकृत्वासुयत्नेन सर्वकष्टविनश्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्ठविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रश्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभश्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत् गुप्तशत्रुविरोधश्च प्रत्यक्षंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभश्चकस्माद्धनमागम चिन्तोद्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तश्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलःवह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकमिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिने नवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुखरूपंचलुब्धके षष्टवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्य गायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाण्येव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वंपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबज्रदानंचशांतये नंद षष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्रके ग्रह कुछ विशेष बलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी २ घरमें पीड़ा करलावे भ्राताका सुखहो या प्रेमी मित्रहो खर्च विशेष हो कृपणता नहो सके एक जीवकी चिंता बनीरहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्याबुद्धि विशेष बढ़े पुत्रोंका सुखमिले हीन ग्रहके योगसे काम अधूरा होता २ रहजाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्नहो अति परिश्रम करने परभी मनोर्थ पूर्ण नहो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवाकरे विशेष कार्य का अधिकारीहो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभहो कभी विशेषहो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबूसे बाहरहो प्राणोंका भय जानपड़े अधिक दानमंत्र उपाय करनेसे अवस्था दीर्घहो विशेषसुखभोगे पहले जन्ममें ये जीव स्वर्णकारथा स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छलकरे अन्यायसे अधिक द्रव्य लिया तिससे पापका भागी इस० जन्ममें पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पापकी शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहफलदश्रेष्ठमनानालाभसमागम भुमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीर्मुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोक्ताव्यग्रबुद्धिनसुस्थिरंभव उद्योगकुरुतेदीर्घलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचिंत्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुहलीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्वौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचारणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोर्पविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदत्तोमति जीवध्यानंचसंमग्न यौवनंरूपचितनम श्रेष्ठकर्मरतो चापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवनां आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसिद्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मदंदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेंसुसंजातं भाग्योदय विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षंच दन्तपीड्यज्वरादिकं व्रणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षें उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्धद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंताचदारुणम् अनुष्ठानमहादानं महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षें षोडषाद्धचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम् द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्रगत ।व्य त्रिशवर्णेंक्रमंतथा नूतमकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नत प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षावधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णंनष्यतिक्षुधा लवणाश्चहरितिक्ष्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधितत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वग्रहसुप्रतिष्ठित शत्रुपक्षविवादंचकार्यभंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोह्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिंकंतथा निजकृत्यमहल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रश्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलंसंप्राप्यचिंत्तंआशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वंपूर्वंयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगतिं कर्मभेदेनभोप्राज्ञसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्टा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीवकी चिंता मिटे परन्तुइस जीवकी बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुंचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बातपर क्रोध आजावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्बका पालन करे पराया काम मनसे करे ईश्वर की भक्ति में मनलगावे परन्तु स्थिर न रहे हटजाया करे कामकी उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंशुवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकत्याधिकारीत्रप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवःस स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मणाविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंअकीर्तिश्चभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षैंसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागर्विचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य धनार्थेचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः धर्मवार्तासदाधृत्तिसज्ञातिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यबुद्धिविजानीयात भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलबृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ द्वेषष्टमेवर्षैं अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षैंसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्य विंसवर्षावधिंततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्य:सर्वजनैपुंस: सर्वसंग्रहतत्पर: स्वयंधर्मरतोभोगी:बहुभृत्यप्रसेवित: श्रीमान्विचक्षण:प्राज्ञ कलाभिज्ञोनृपश्चय: अत:परंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरं निर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससंप्रीति: पितृभक्त:सुतर्पित तुरगात्मनं ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुत: कष्टपोड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगमोनित्यभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपचारोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्स: पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्णं भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्टहो बड़े२ कारबार रोजगारकरे परन्तु न्यूनफल कारक ग्रहोंका दान मन्त्र उपाय करनेसे पुत्रोंका सुख और विशेष धनका लाभहो किसी समय कुटम्बसे विरोधहो धन खर्चमें आये शत्रु नुकसान पहुंचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर विशेषहो बड़े२ आदमी इज्जतकरें प्रतिष्ठापावे ईश्वरका चिंतवनकरे अनर्थकी बातपर ध्यानकरे श्रेष्टसंमतिदे बुरेकामसे बचे श्रेष्ट मित्र में चित्तरहे खरचीला हो पोचबात न कहै चित्तमें गुप्तचिंता रहै इज्जतका विशेष ख्यालहो खर्च विशेषरहै एक समय प्राणों का भयहो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहोंके प्रभावसे प्राणोंकी रक्षाहो सारीअवस्था इज्जतके साथ आनंदमें बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मोसे सुखपावे हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांत धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आगया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसीसे विशेष पापका भागी हुवा सो इसकी शांतिके निमित्त काशीके थालमें चावल भरकर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाशयंति श्वकुलंदीपकंतथा बहुकोर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चञ्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुखवर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रंरक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिक्प्रकोपीचकामाधिक्यवलान्वितः सुशीलश्चञ्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धनयुतःपुंसः मीननादपरंप्रिय वृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत् क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसशयः शूरोथवाग्रामे पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायते क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगश्चक्लेशिता पितुर्चिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम् ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्युभीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः घातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षे पितुर्चितासमन्वित निजकृत्यलभेद्द्रव्यभवेद्बृद्धिदिनेदिने शुभकार्यधनंधातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठाग्रसंध्यासवंभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसशय

शुभकार्यव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षैकमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ
प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तंविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षंमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी
चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिंवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम्
पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रियत्ववतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्ठविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा
अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णाश्चवाजपः लक्षमेकप्रमाणश्च सर्वकष्ट
निवारयेत तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य
पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म
नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परिलोकं
फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षं आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय. ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्रीके ग्रहोंका बड़ा भारी फल है
पृथ्वी पर आनंद भोगेगा और कुलमें दीपकके समान चांदनाकरे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भलेमें रहे एक जीवमें चित्त विशेष फंसारहे
नई२ बातोंका चिंतवनकरेहै हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतुका पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति
पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थानके ईशकी पूजन दान वंशकी वृद्धिको अत्यन्त श्रेष्ठहै गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा
अन्यकर्ता परोपकारी होनेसे सब सुखपाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्टपावे प्राणोंका विशेष भयहो परन्तु पुण्य कर्मोंके प्रभावसे पूर्ण
आयुहो कहीं अकस्मात धनकी प्राप्तीहो भूमी लाभहो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भलाचाहे मनकी विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से
पूर्ण होगी हेशुक्र येजीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवानथा बद्रीनारायण के दर्शन को जाताथा सोते समय मार्गमें धनवस्त्र आदि चोर हरकर
लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण
पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छा भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविषेशेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात
भयमागम दीघद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणनूतनजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोक उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीघमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यंधनव्यय
सप्तमशोपिसंपूज्य जायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्मोद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतंवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशमित
श्रेष्ठलक्षणसंग्राहीउत्तमाचरणलोकमि हीनकार्यंयदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणवातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं रुर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतर्नाशोविशेषतः जन्मतेःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टबाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयन्नसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यानकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुतापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनक्कापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यआनन्दञ्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्ययनानासौख्यसमागम चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थयात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाब्दमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितोपिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहंप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चिंतवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षिणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तःव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्कमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतञ्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्स्वगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छंतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षद्वितीयेब्देज्वरबाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनबृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्धेभयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेत्तरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाक्वे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

भद्रयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुत्रापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनकापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यआनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणांशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभुत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घं नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्त्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वें जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिंकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थयात्रारतोचापिभजनानदसर्वदा वन्हिपंचाद्धमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितोपिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षें निधनंदेवसंभव दाहंप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चित्तवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्कमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतञ्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरोपाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षेद्वितीयेऽब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाऽवरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्ठत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतन वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेंदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोऽयदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकीर्तिश्चचित्तमोदमपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्टत्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानऽव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीतादिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्मपत्रमें ऐसे ग्रह पड़ें पुत्रोंके जोड़ोंका ध्यानरहै कन्याभीहो वंशकी वृद्धिहो धनवान् लक्ष्मीवान् परोपकारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरानमाने बड़ा प्रतिष्ठित नामीहो कईवर्ष विशेष धनकी प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्यकी न्यूनता करने वाले आवें पुत्रोंकी चिंतारहै संतान गोपालका मन्त्र वंशकी वृद्धिको श्रेष्ठहै लाभस्थानके ईशकी पूजा दान जापसे विशेष लाभहो और पृथ्वी पर बड़े२ कौतुक देखे चिंता औरभीहो अपने समझे वअपने कहे तथा समतिके नहों घरमें कभी पीड़ाहो जायाकरे एक अल्पभारीआवे प्राणोंका भय रहै आयु पूर्णहो कैसाही भारी खर्चहो कार्यहो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्णहोवे हे शुक्रपूर्व जन्ममें येजीव ब्रह्मवंशमें उत्पन्नहुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुरथा राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्तहो गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासु आन्वित पत्नी सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य नूतनमागमः दीर्घकृत्योवृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य आमाविचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति वर्द्धनं चंद्रशोकरिथताचितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलेपीड्य अकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्प विषेशेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिच्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजातो भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषञ्चपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारञ्चयशंभूरिमहोतले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्य नाशनं दर्शनेअरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीर्यसि तथापिसौख्य संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तयेवर्षेंव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भुमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथात्रिंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके त्रिदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दंमङ्गलोनित्य विवाहोदिमहोत्सवं सून्यबाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाब्दमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेष्ठस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्य[illegible] पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पृजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशक्तोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घ पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्प्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यंरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाञ्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः अग्निहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभत्र नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेऽब्देच
पितुपाप्तिमहर्द्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेऽब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगंचक्रीड़िता
सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेत्रधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्टहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसी द्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायनम्पुनःदीर्घधनं लब्ध्वाकार्यचिंतावलीयसीहीनकार्यभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेंधनपुत्रसुखान्वितः आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेंत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा च्चितयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधिं काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिंकाव्यचितनंचापिदीर्घता चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रंचमोदिता षष्टपंत्रगतेवर्षेंशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गौदानं श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणंजपेत अल्पायुनश्यतेवत्सदानमंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेंपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वंइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्रमें ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वालाहो मध्यम और श्रेष्ट दोनों दशा भोगे किसी समय कहींसे धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहोंके प्रभावसे चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ को सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक काम हीन बनजावे सो पीछे मनमें बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्रीकी चिंताका ध्यान तथा जीवकी लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धनसंतान का सुख विशेष भोगे कुलकी रक्षाको संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ट बनजाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े२ दुख सुख भोगे परन्तु चित्तको दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी२ भ्रम सा हो जाया करे नई२ वार्ता भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्तदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरं चेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् भ्रमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्च कारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मैंणसुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नश्चसत्यवचनंत्यजेत परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यबृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचिन
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचितनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्त्वाकदाचन लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभंचचित्तआशात्रपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपिड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिमकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपंचमेवर्षैंबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षैंसून्यचंद्राङ्केतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षैंणपूरित शशिचंद्राङ्कमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणब्रत्वंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाङ्कमारभ्य
विंशवर्षैंचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलंचगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गैंधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाङ्केतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाऽव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्योदयमहत्फलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाब्दमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्कवस्त्रभूषणं सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाब्दमारभ्यवन्हिषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तशरोकाऽव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपोत्रञ्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपाड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ।। भाषा ।। इस कुन्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रोंमें लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहै धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोषी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्तमें समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घरमें पितृ पीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करनेसे वंशकी बृद्धिहो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईशके पूजन से विशेष लाभहो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्णहो हीन दशामें हानिभी हो परन्तु अन्तमें सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदीमें नाव चलाने वाला प्रधान था नवकाके कृत्य से बहुत धन प्राप्तकिया एकसमय एकसेठ श्री अयोध्याजी की यात्राको आया सो बहुत धन नवकामें भूलकर चलागया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्य कार्य में लगने वाला धन अपने घर में धरा तिससे पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवोंमें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ।।

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धंसुखीनरः धनाध्यक्ष इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्ट दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये मनेच्छापूजितंचापि भाग्यबृद्धिदिनेदिने वंशबृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यबहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवन्हिवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानञ्च शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोबालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यश्छायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसिविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणो जाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकःतिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्धगेकाव्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठंचकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययंचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिचवृहद्भाग्योभूवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपंचावधिक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगावो दासदासिश्चमोदिता। ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदंचगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकीर्तिनूतनं पूर्वपुण्येनभोक्तससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्धमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यङ्किवामन्द्रनूतनं जायाकष्टंविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्धमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं विलम्बसे फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्टा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहें श्रेष्टकुल विद्यावान अवल तेज दूसरे की बातको तोले सत्या सत्यको पिछाने एक जीवकी आशा लगी रहा करे और जीवोंके खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहोंके दान मन्त्र जाप करनेसे मनोकामना पूर्णहो भाग्य और वंशकी वृद्धिहो येजीव तरह२ के दुख सुख गायत्री का जाप्य करानेसे घरकी पितृपीड़ा शांतिहो कितनेही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरूष हो हीन दशामें विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ट दशामें अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्याराहै एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरूषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाकांतिप्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरंव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडशाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायागर्भयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजायते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षेवामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यश्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा वर्धिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्ठिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वाजातितोषयेत प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशासित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् बृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतेमहाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं भवेत्सौख्यंअग्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ओं नमोअकाल पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवजपित्वा सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणाम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वालाहो विद्यासे बुद्धि विशेषहो कईबार धन इकट्ठा करे फिर खर्चहो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसामें रहे है उपाय दान मंत्रसे मनोकामना पूर्ण होगी और कहीसे धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभहो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिर मानता रहै पुण्य कर्मसे सब सुख मिले भूमि लाभहो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भलेमें रहै कभी किसीका आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें यह जीव शूद्र वर्ण था परंतु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुतसा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वसहो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसीसे पाप का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्द्विजायते [illegible] पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थबुद्धिमान्नर निजकृत्य

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वितः केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीत्तिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीत्रगौरांगीस्वल्पभक्षिण अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम् उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त पिशुन्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्धित्रिभवतिच चौराद्वाऽटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मोन्यधनंसर्वंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेबृणंज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्धित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टंविजानीयात पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहेपिमंगलं कार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अष्टोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाद्धमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणः खवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताद्धमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्यानिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल यहहै कि दो दफे रोजगार की वृद्धिहो और फिर मध्यम होजावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभालकर रोजगार के कामकरे परन्तु नाकिस दशामें चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनंदमें बीचे कभी किसीका आस्तीक नहो अपने कृत्यसे निर्वाहकरे एक समय ऐसा भाग्य उदयहो कि सर्व प्रकार के आनंद भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करनेसे सब प्रकारके सुख प्राप्तहों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपायसे सब शांत हो आयु बड़ीहो पुत्र तथा गृह सुखकी प्राप्तिके निमित्त संतान गोपालका जाप्य कराना श्रेष्टहै वंशकी वृद्धिहो पुत्र पौत्रोंके सुख देखे एक जीवमें विशेष प्रीतिहो हीनदशामें विशेष चिंता और क्लेशहो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव कुरुक्षेत्र में जन्मले नगर का प्रधान अतिधनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जानकर देदेतेथे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलविदं मनेच्छापूजितंलोके [विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्माननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रव्यशुभकार्येंधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोबार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणोयुक्तसुशीलो क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा शत्रुप्रवलतांयाति: चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृत्तेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्मं कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागत्रर्षक्रमंतथा बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्धके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषोमित्रतांव्रशेत क्रीडितश्चविशेष विद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशा आदौयत्नमहत्फलं सर्वक्लेशाविनश्यंतिपुनरंतेसुखपदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राद्धकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राद्धप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वंपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चिन्नंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यंपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्वलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योमचत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुण्यफलोदयंन्त्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाङ्केतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्यान्वितोभवत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्ठावधिंतातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीका फल यह है कि विलब से मनकी कामना पूर्णहो रोजगार लाभ बढ़े युवा वस्थामें विशेष भाग्य उदय होगा बड़े२ रोजगार करे किसीसे मिलकर धनका विशेष लाभहो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चातमें मनकी अभिलाषा पूर्णहो प्रथम बहुत जीवको दुखमाने फिर संतोष होजावे यह जीव विशेष छलछिद्री नहो और छलको पसंद नकरे नेक नियत के रोजगारसे पालन करने की अभिलाषाकरे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्ठमूर्तिहो एक अल्पसे बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहै फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े२ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीतिकरे किसीका बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी२ दर्दसा हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जातिथा अपने षटकर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथको मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक होगया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानुरक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराड्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः मिष्टानलवणंभोज्यंपक्कमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत शुभम् धर्मेणधनबृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्ठरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्मप्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरोधीचक्रुपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधर्मप्राप्यरोगशांतिश्चजायते बृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्यपरीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणशुभध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोगितथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्माद्यत्नंचकारयेत् बृहत्वोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातमहाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंजभेत मिष्टंमनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहूक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगानमहोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेणचित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्न्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदधृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहरद्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहूद्रव्यव्ययोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानञ्चविःहल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रञ्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानञ्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणा कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षैत्रिंशवर्षा वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यञ्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णंसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् शून्यषष्टमितिमायुपुण्य कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीमें ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टावाला भाग्यवानहो सब तारीफ करें सलूक करनेवाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्यके काम करे भूके कोदे ईश्वरका भक्त सत्यभाषण करने वाला कईबार बहुत धन प्राप्त करे रोगोंसे बचे सत्यासत्यको पहिचाने शरीरमें फोड़ेका चिन्हहो कामदेवकी उन्मत्ततामें न्यूनबुद्धि होजाया करे जीवकी चिंताको गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्नकिये अधिक क्लेश पावे धनका संदेह जीवकी चिता आदिहो गुप्तशत्रु विशेष हानि पहुंचावे शरीरमें पीड़ारहै काम होता२ रुकजाय तथाअधूरा होजाया करे इस जीव को बड़े२ भारी खर्च के कामआवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़े२ दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्टितोगृहे व्ययदीर्घसुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवग्रन्यवार्ताचतौलकः चातुर्थबहुज्ञाताचग्रन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधञ्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः ग्रकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयेद्धंशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोग्रल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा व्रणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुमंहाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्थविनश्यति ग्रतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणंकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयग्रथवास्वल्पद्रष्टय ग्रंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वाजतंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा ग्रष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राद्धकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षातंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य
व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्धमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः ग्रौषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेग्रानन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदोस्थत अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामिमितेवर्षेत्राणत्रिंशाद्धकेतथा महाविपत्तिकालञ्चशोकचिंतातिदुःखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभञ्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाद्धके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिर्दिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताद्धपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहूलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यतः पञ्चसप्ताद्धमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुवि: तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैर्वाविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्मुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा नहो खर्च विशेष रहै रोजगार करे बड़ी हिम्मत वालाहो दूसरेकी बातको तोले श्रेष्ट आमदनीमें कुटंबका पालनकरे कैसीही धनकी न्यूनताहो परन्तु खर्चका काम कभी नरुके इज्जत से काम हो जाय चित्तमें भयसा रहा करे परन्तु भाई बंधु अपनी सम्मतिके नहों युवावस्थामें कई बार धनकी चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंशकी वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहै घरकी पीड़ाका यत्न करे एकबार कहींसे धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मंत्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्णहो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव क्षत्रि कुलमें नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेनाका अफसर था युद्ध विद्यामें अति चतुर था एक समय संग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंबृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणश्रमोपिबहु मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंबृहत्वोपिसर्वैंपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं चापिमिष्टवाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धंप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो रूपचिंतनं प्रथमेद्वेरुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेंचपञ्चाब्देबृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा क्रमंवर्षंतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलश्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय पूर्वंदानंसुयत्नेनअल्पायुयोगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेंतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घंउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमांप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासत्रविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मंसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वं पुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हिगतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंतिराजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेंचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिविशेषेणापद्दीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दंईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घंतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्ययपौत्रजन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्धमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहनादिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्तमितिमायुभुञ्जीतोपरायमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े२ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनीरहै परन्तु खर्चके कारण धन जमा नहो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसाही भारीकाम हो ईश्वर की कृपासे सब इज्जत प्रतिष्ठाके साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जतकरें किसीसे तृष्णा नरक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन नरक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करे कईबार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रोंसे मेल रहै मिष्ट बाणी बोले किसीको कठोर वाक्य नकहे बहुत निष्प्रयोजन नबोले पंचम स्थानके ईशकी पूजा और दान मंत्रादिसे पुत्रोंका विशेष सुख मिले जीवकी आशा पूर्णहो अल्पोंके दान मन्त्रादि उपाय करानेसे आयुकी वृद्धि को श्रेष्टहै हे शुक्र पहिले जन्ममें ये ग्वालवंशीथा विशेष धनवान हो कुवां खुदवाताथा तिस भूमिसे परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होनेसे कुछ द्रव्य राजाने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाय सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूरग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलंभवेत् उद्योगलाभकृत्यश्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशश्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वंमित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शभानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्माद्भयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णंभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जोतोकर्मबंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीचचोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्रसुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतबाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेव्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ामनंदिता सुवर्णरजिताभर्णवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वाबालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतोकामाक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राक्रमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्यनिश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखंप्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभगनीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बुद्धिविद्यानप्राप्नोतिकार्यंमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंमित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोऽज्ञातव्याकार्यं मात्रञ्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षितं भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवआशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिंकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं वापिकामन्द्रंदासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े२ भाग्यवान ग्रह पड़ेहैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यूनसा कर दिया नहीं तो पृथ्वीपै बड़े२ आनंद भोगता सो अबभी पापग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा आदि करनेसे फल प्राप्त होगा जीवकी चिंता मिटेगी शुद्ध चित्तसे मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फलकी प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी येजीव लाभके उद्योग में रहे परन्तु मरजीके माफिक कार्य विलम्बसे बनेगा और काम की सिद्धी होगी बड़े२ खर्च सिरपै झेले घरमें पीड़ा क्लेश होजाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ हो न सके मित्रमें मन फंसारेहै और शुभकाममें विशेष धनखर्चहो बड़े२ फिक्र और आनंद देखे एकसमय नया जन्महो चित्तमें नई बातसोचे मित्रको और लाभकी बातोंमें चित्तलगारहै यत्नसे आयुपूर्णहो हेपुत्र पूर्व जन्ममें येजीव शिवमन्द्र का पुजारीथा चर्सभंग बहुत पीता औरोंको पिलाता एकसमय शिवरात्रि को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके धनसे खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्धिजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्ठआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीडाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकाणोभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेत्रपीडित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीडाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीडितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्णभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीडासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलञ्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीडाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रञ्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रञ्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसंविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाद्वत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोह्यानंदतापिस्यात कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयानाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योंपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागबृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्ठितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वंआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्मपत्रीमें जो ग्रह पड़ेहैं उनका यह फलहै उच्चपदवीपावे किसीके चित्तको दुखनदे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वालाहो कैसाही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्यनमाने अपने लाभका ध्यान बनारहै चित्तमें प्यारे मित्रकी याद बनीरहैं उत्तम आजीवका से पालनकरे बड़ी इज्जत प्रतिष्टा वालाहो बहुतसे मनुष्य इसकी आशामेंरहैं अच्छे२ वस्त्राभूषण घरमें स्थितरहैं एकसमय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सोकुछ नसमझे पुत्रोंके विशेषसुख और लाभके कारण संतान गोपालके मन्त्रका जाप्य करातारहै तो वंशकी वृद्धिहो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भगसा होजायाकरे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतहो हेशुक्र पूर्व येजीव ब्राह्मणथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपालयतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेद्यत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांअन्नभक्षणं कार्यंशुद्धिभवेल्लाभंचित्तआशासुपूजितं बृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्ठित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णंभविष्यति
शत्रुश्चपतितंनूनंनकश्चित्हानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थितेमनः आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्यमनंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत भ्रातृजन्मभयंचापिमातृकष्टञ्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिअंकाभ्यासञ्चवर्द्धन बालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानञ्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाद्धमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापि कामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं
तातमातअनन्दिता नगचंद्राद्धमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति अनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घंव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आप दुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुल बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाद्धकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभंविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरच्चत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य भूयसे सुतपौत्रसुखंसर्वंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधितत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंशिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वआशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताद्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहै कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहै तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहै चित्त में कपट न हो आनन्द में रहैं एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहै अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातु[illegible]यौषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे व्रणव्याधि

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेंसप्तवर्षादिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविह्वलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातञ्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यंधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगञ्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रञ्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालकीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राङ्केवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुं समंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतञ्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगञ्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानञ्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमण्डले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामञ्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यवाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेबंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तबार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टञ्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्रराममितेऽब्देचबाणराममितेतथा शून्यनंदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवातयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंनसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्यं
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्आतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओंऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मणाअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारणः बहुहिंसावधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाङ्केवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षट्बाणाङ्केशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्ठया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेऽब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयातस्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापितहैं तिनका येफल है कि बड़े भागवाला जीवहो कुलदीपकहो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बीहो न्यून कारणसे चिंता विशेष मित्रसे मिलने की इच्छा रहे दो समय धनकी विशेष प्राप्तिहो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थानके ईशके कारण चित्त हटजाया करे दो ग्रह बलवान पड़ेहैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता२ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभके कारण एकादश स्थानके ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्पसे नया जन्महो ३४,४४,५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसीका बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्चझेले हेशुक्र पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्बालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःप्रमान देवद्विज

Nepal Sanskrit University, Balmiki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यबादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घंआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम् वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाब्दमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभञ्चदीर्घोवागुप्तचिंता शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाब्दकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा आंततेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥ शुक्रोवाच॥ केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्तिं विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्ससर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशयः पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेऽब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगतनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुन्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घरमें मंगलाचार खुशी जीवका ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थानके ईशकी पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चितवन संतोष वृत्तिहो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिलजाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमतता में बहुत दुख दिया तिसके शाप के कारण जीवकी चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात भाग्य
वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम् अर्थप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो
वार्तयाचिंतः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतिष्ठया रोगश्चप्रथमेवर्षे
द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेव्रणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग
सप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम्
नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र
वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय
शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते
तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येबातपित्तेनपीडनम् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनदानेन
पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वार्तार्थयात्रकम्
पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टंचनददेत साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण
संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाङ्ककथ्यंतेबालबृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा
होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज
द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति
चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

नसंशयः षष्टवेदाङ्कवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभमयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णंपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यबृद्धिदिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंबाराायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्धेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंबृथा माघेशुक्लेनवम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मनकी कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार हैं प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ संपूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य संपूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागोचलोकमा [illegible] सुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः

Nepal Sanskrit University Balmiki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागोचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमिलाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखंवाच्यंबालबृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमंवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बालक्रीड़ाकिलोलश्चजीवबुद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिण्ठश्चविद्यायांअंतविद्याविसार्जनम् वहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभभविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम् पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृतेदानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेब्देचव्योमराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्यविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापंचभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारण गोवच्छबधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षेशून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः सर्वंसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम् पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत पूर्णयत्नेनभोकाव्यनिश्रमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वांअग्रजन्मपुनःपुनः चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेंव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदानग्रशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसी विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेब्देचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखश्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ट है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्यकरे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ट है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला ग्वालबंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश होकर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित होकर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

जावे और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेऽब्देज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात् रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमातसुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंममः तातलाभधनंबृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समबालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्यगाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धिविशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेऽब्देचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन् कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्रराममितेऽब्देचशरराममितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यकृत्यनसंदेहोद्रव्यलाभप्रतीततः षट्रामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासोप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलांतरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाङ्केवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रह ंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूमकाणिकानिच्चः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेंशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्ठमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचारयेत् चंद्रषष्ठमितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफवायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णपक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहे पश्चात् आराम मिले अल्प बीचकर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्टा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मनसे करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ट है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्टहै मित्र में विशेष मन रहै मीन रेखा हाथमें श्रेष्टहै एक बृणका चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्टहै किसी के चित्त को यह जीव न दुखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंशमें था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहप्रकाशस्थेसबुद्धिकल्पदीपकम् [illegible] विद्याविनयसंपन्नोभगणपरिभाषितः देवद्विज १

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विजरतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्त्या कस्मिन्कालश्रुणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम् दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेबाजतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा भगिनअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रश्चमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पजीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चन्द्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनन्दभूमिमण्डले जीवचिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चन्द्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्केशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त नान्यथावचनंकर्त्रे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चंद्रवेदमितेङ्केचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टबाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीनरः चंद्रसरमितेऽब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीनर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिर्भविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेऽब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्महत्व्याधिऔषधी सेवनंबृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधबंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस प्राणी की कुन्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डराकरे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूंजा दान करना बहुत श्रेष्ट है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमानसी हो जाया करे एक समय अचानक विपत्ति रंजसा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ट हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्टा वाला ग्राम पति जमीदार था दान पुन्य भी विशेष करता था एक समय इस जीवने हवन करके यज्ञ करो थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमत्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष बृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापितासर्वगाथाचकथ्यते [illegible] दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विज १

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विज रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ा ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहञ्चजायते वृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंच्चितव्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो बालक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेंशून्ययुग्ममितेत्तथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येंचसिद्धति द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरबृषमितेत्तथा व्योमरामाद्धमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाद्धकेवर्षेशून्यवेदमितेत्तथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्यपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण वेदाद्धकेतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवास अकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यघृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वऐकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादंचधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंतौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपचईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्रागवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृधिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन की प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष बृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की बृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उनका उपाय जो कुछ लिखाहै सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक२ प्रकार की बार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीवका दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फलभी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्रपर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवाकर और तांबे के कलश में घृत भरकर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रिके समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंशकी वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोअसत्यबचनंब्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदिने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये वृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतञ्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यंखंडित पितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः चंद्रराममितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्व गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचिंतवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयात्गुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम् अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मात्उपद्रोवाकिंचित कालशांतये चंद्रवेदमितेब्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पंश्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेद्वेचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्ठया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्टमितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूलिलाभ भवेतशुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ।। भाषा ।। हे शुक्र इस प्राणी की पत्रीका फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेषरहा करे और हेशुक्र इस जीवका खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईशका पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो आत योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीवका दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युञ्जय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहै चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्टहै विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ।।

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतःश्रीमान्जन्मबाधाविधानतः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति नवीनोचितवनंकृते प्रथमेऽब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोजकं वृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिअथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिता शरीरजं षट्मेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवत्र भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधि हवनंब्राह्मणं भोज्यंवस्त्रआभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडव्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छाथांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो वत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वआयुहर्षकम् पूर्णआयुदशांरेखासुवृद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारा।त्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणा।परिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोव।किञ्चितकालशांतये चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्ठमितेतथा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रृणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् . तनमध्येकामबीजञ्चग।यन्त्रीसंपुटंलिखेत संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चद्रषट्मितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिचतीर्थकं व्या।त्रिदेहप्राप्नोतिप्राणगत्रनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहै यह जीव धनका उद्योग बहुत करता रहै और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ट फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य बार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की बार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्य पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुलमें चित्र गुप्तवंशमें था और हस्ती घोड़े बाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्यायसे अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सरवस्व जाता रहा सो पंडाने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिसके कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहएत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसतकरनीविद्याचतुरसर्वप्राणिप्रियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्कर्मीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसतकीर्ति कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रञ्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितीयेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगञ्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिश्चमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलञ्चआनंदभूमि मंडले तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणञ्चसुताजन्मन संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनंव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते चंद्रराममितेवर्षेबाणलोकमितेतथा शून्यवेदाब्दकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नोपिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तञ्चधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षे शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यंधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनाबाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनबांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयातश्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेऽब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केंद्र में श्रेष्ठ होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहै चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन बार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईशकी पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैकड़ों चौपाये और सैकड़ों मनुष्यों को पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैलका अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

Nepal Sanskrit University, Beljhundi-Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रियः शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेंमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो जातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेंभगनीभ्रातृप्राप्नुयात् तातमातमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेंशून्यनेत्रमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयातऔषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेंबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोंवामध्यगाथाच कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचयुक्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्तव्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येतुसर्वगाथाच कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्रदानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितत्रन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवाञ्छितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणानान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवें शरबाणमितेतथा व्योमरसाद्ध केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यंभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मातमहाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने ,चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय: संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नश्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणञ्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फलहै कि ग्रह बलवान आनकर विराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े२ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बचकर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े२ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश होकर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में होगई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंब्रजेत दयावंतसमादृश्योपरकार्योंपितत्परः सदाहर्षं महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तबृचिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेंदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृण व्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्येंधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षें शून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीतिममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानञ्चशांतये पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेंबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाङ्कवर्षेंचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमि मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशञ्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्रराममितेवर्षेंबाणरामञ्चमध्यमा शून्यवेदाङ्कंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते अर्धआयु गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययो योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाङ्कंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमा मंत्रजाप्यञ्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोभंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत नवीनोवार्तयाचितवाहनादि सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगत्रनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेत्विप्रसंकल्पंनृपतिकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योगका यह फलहै कि बड़े२ खर्चके काम संपूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्चका भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीज्ञनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीवकी आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक बार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हान हो चित्त में भय सा रहै फिर धनकी प्राप्तिहो स्त्री से प्रीत और घरमें पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्पसे बचे जीवका दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पंडा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचत्रालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकेसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकेसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषत: प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुमर्वप्राणियां शुभकर्मरत:पुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च, अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदं भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तंमानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिन्ताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग व्रणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं अष्टमेद्वादशेव ॅ त्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताञ्चतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्च विद्या प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति पत्नोगर्भंप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान् चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहा भाग्यवृद्धिविशेषत: पत्नीगर्भंचप्राप्नोति सुतजन्म नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वा मंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यं व्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत बृणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टय: धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल मध्येपपाथय: जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृत: चन्द्रराममितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य वेदाङ्केमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि प्राप्तये वाणिज्योकार्यकंकृत्वा धनवानोविशेषत: गुप्तञ्चधनंविप्र भूमिमध्ये स्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्त वैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषत: किंचित्कष्ट

विजानीयात ऋौषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति ऋानंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रब्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्र्यंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमि नाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोभंद्रवासकं ऋकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपद्मभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येऋानंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफलंलभेत ऋंतऋायुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेंवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि इस जीवका चित्त शुद्ध सच्चा है ऋौर ऋभिमान नहीं है किसीका बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर ऋाधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो ऋौर घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण ऋौर धन का विशेष लाभ ऋायु में एक ऋल्प भारी है ऋायु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एक ब्राह्मण तिसका मित्र था कुटम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के ऋौर से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मरगया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा ऋनर्थ किया तिसके निमित्त ऋब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली ऋन्त ऋायुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग शुभ्रमअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षें ज्वरपीड़ाच रेचनं मातृकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षें मंगलाचारकंतथा आदिपठनश्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षें शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोति पत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यतिं तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरज चंद्रनेत्रमितेवर्षें बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात् तातचिंताचमातकं गुप्तश्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया नानालाभकंप्राप्ति भाग्य वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षें शून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंति भृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्रराममितेवर्षें बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धमध्योपि सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथा वर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षें बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंता शरीरेच रविदानश्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यंकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात व्याधीवृद्धिदिनेदिनें महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधींचधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्टा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनंद दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तातका धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घरमें मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तातको लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्टहै नहीं तो जीवकी चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वालाहो इन्द्री में पीड़ा कामकी उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े२ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्पसे नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनीरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यो का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यकृतजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहूभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने
देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहूसेवीनराभवेत मित्रप्रीतिपरुपकारी
सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यात्तो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह
विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृत्तेबालतातमातश्चहर्षकं बालक्रीड़ाकिलोलञ्चभग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये
व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षें त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रात्तसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच
प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षें शून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः
सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यंकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त
वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षें
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यते शुभकार्य
धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरज चंद्ररामभितेवर्षें बाणराममिते
तथा शून्यवेदाद्बमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा
पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा
शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेब्देच शून्यबाणमितेतथा चंद्रअल्पदुखंशुक्र दानमंत्रञ्चशांतये
करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानश्चशांतये भुमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्ष सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थ ईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णाविजानीयात व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा व्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय ॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धनका मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडाजी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर ग्रहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ठ वर्ण होवे ॥

॥ श्रीगणेशायनमः एकययोगश्चप्राप्नोति ग्रह भागी चबालकः [illegible] दाताभोक्ताकृतज्ञश्च भृगुणापरिभाषित प्रथवी

श्रीगणेशायनमः एकस्ययोगञ्चप्राप्नोति बहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामांदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पञ्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगञ्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्ययवामयोगञ्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलाभयंपशुपीड़ाउपरञ्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रञ्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्चपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मातउपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंतात्रप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यंमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तञ्चधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्ररामभितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशञ्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगश्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढसुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका यह फलहै कि ग्रह बहुत उम्दा आनंदसे अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदांत मतहो स्त्रीको चित्तमें पुत्रोंकी लालसा बनीरहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभकी वृद्धि हो अकस्मात् प्राणोंका भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर नरहै गुप्त धन मिलें शत्रू हो जोर नचले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तटपर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी बृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान् सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहुप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणंकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेरंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रश्चल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो
कार्यंकंचिताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचयुक्षचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यंकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचिंतःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचितनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधोऔषधीसेवनंवृथा वेदसप्ताद्धकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रतापके बैठेहैं मनका गुप्तभेद किसीको नदे विद्यासे बुद्धि विशेषहो सत्य बोलने वाला सबका भला चाहे पराये काम मनसे करे पिछली आयुमें बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीवकी तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईशकी पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्णहो एक जीवमें चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोकांति विद्यावान्धनीनरः राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणा परिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरस्सूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्ठया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशमितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्चदशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपरन्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रप्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री चद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः महामृत्युञ्जयंजापचंद्रलक्षप्रमाणक दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनंव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि दिनेदिने शुभंकार्यधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यश्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणकृयतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेस्तथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षे षट्रसआद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवासुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी कालमें हो सत्य वचन बोले श्रेष्ट जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह २ के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेषहो अकल तेजहो दूसरे की बातको तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनिका मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे काहो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी कालमें खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काममें खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूहका सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दंड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्ठश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् वृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं सुकीर्तिंचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्ठत ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता चित्तंचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्य पुनरन्तेसुरक्षणा पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्धंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंवृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भबाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकृतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगाविनश्यति आनंदंकौशलञ्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंरुजंसर्वं विनाशनं देदवर्षाचपञ्चाब्देषष्ठमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल मंगलजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुर्चिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोत्तदा तातलाभ विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलञ्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्य चचिंतनं शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिस्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण लुभ्यतेजननाजनै त्रियोविंशाष्टत्रिंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः एतस्मात्कारणांवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुखंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थांविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योर्हर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं अद्रनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूर्यंतेबहूचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखोलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रभूषणांश्च ष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये वृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुण्यसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात नगवेदमितेवर्षे शशिपश्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपश्चांतरोकाव्य व्यालपश्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वं प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमितिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फलहै कि ग्रह श्रेष्ट हैं और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुखदुख देखे इज्जतके साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीवकी चिंता रहै छलछिद्रसे जले सत्यासत्यको पिछाने किसीका बुरा नचाहे हीनदशामें फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्तिसे रहै आनंद मानकर बिताये एक अल्पसे प्राणोंका भयहो सुयत्नसे प्राणोंकी रक्षाहो पूर्णआयु भोगे तथा लाभेशके पूजन दान आदिसे विशेष लाभहो हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव ग्वालवंशी था बड़ा धनपात्र था मथरापुरीके समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकारका आनंद पाताथा एक समय भूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसको ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण्येनविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मंकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदनगतोकालव्ययययोगविशेष्त चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वंपूर्णो भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षमौख्यां वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यांपतृपीड़ागृहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता वृणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालबृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वाातमातश्च मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेरंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदबृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंगमहोत्सवं विद्याबुद्धि बृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसभव रूपयौवनद्रष्टव्या लुभ्यतेललनाजनै महर्घंभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंश.के स्वकृत्य कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अथत्नंचतदाकाळ्यविपाकेशोकदायक तस्मात्तसर्वप्रयत्नेनपुरयकर्मसुभक्तित: सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं
सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाळ्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्प्रभवेल्लोकेराजद्वारेधनागम: गुप्तशत्रुविशेषेणभय
भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहामोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण
स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाद्बमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावतकालंचदैत्येशळ्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति
सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह
नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्टित: चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चद्रचत्वारिवर्षाणि
तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयावन्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान
पुरयप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यत्राणागतेवर्षैपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु
सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेनथाभव पुरयकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित ळ्यालषष्टाद्बमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण
निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवदिश्यामिमयानघ: ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवानहैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार
मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्टा
तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े २ खर्च के हैं सो
चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और
न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दौनो भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो
श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा
पूर्ण हो बड़े २ सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

सब माल इसने रख लिया सो तिस [illegible] में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येंविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यबृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरायते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेकृताभाग्यमदंता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यंरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्तामतापीचविनितश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घंवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्ववाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेव्रणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहञ्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचित्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोगृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैन्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाद्वेसुता
पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनं सत्यवादीगुरुभक्तनृपात्मामान्यभवेत्सदा द्विजदेवसुभक्तिश्चविचित्रोवाक्यंब्रवीत्चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित बृहद्भाग्योधिकारीअद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्ययेमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वैंपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिमुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख
महत् प्राप्ते चंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलञ्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै प्रथम मध्यम भाग्यहो
पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो
जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे
लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्रसे गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहै तथा एक जीवकी चिंता से
क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया
जन्म माने आयु पूर्ण हों पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना
पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष
विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जो बाकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाअधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनततदा काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमगलाचारं जीवहर्षञ्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचरणायुतोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचित्यं परनिंदाविनिर्मुखः वृणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुन्य प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले जन्मतःप्रथमेवर्षें द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालबृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम ग्रहचिंता विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथो कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बतसरोवृद्धि बालक्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षें नगनागदशाद्धके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चलचपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंव्ययोद्रव्य आनन्दहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभव्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशिचन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसु रावजं प्रायचितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिंच मासेवर्षेंसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणो पेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वपारिष्टताशनं षोडशेविशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाब्दमायात शर विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले बृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेणा सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोकं जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षणा चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलाण्येवं सिद्धतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णाग्निकारेण महादानेनशांतये चत्वारिंशावधितांत अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति विशेषेण भूमिमंदिरश्चनूतनं वान्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वं स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फल नहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगल केतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्यकी बृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय नबनेगा मध्यम लाभहो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रताप से आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशा में कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसी की बुराई निन्दा न करे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्मभोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

भोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥ १

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रञ्त्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यंते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहूकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घं सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आँनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदेहोपिद्रश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालबृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालबृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षंयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यबृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वं भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्धमारभ्य वह्निनेत्रांतरोनथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वं यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घं न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवन्हिगतेकाव्य तथाचपचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वेषांशुभचितकः दानमन्त्रसुपुण्येन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदज्ञात्वा नवदाशोकमाश्रय षष्ठवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्दकेतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुतकष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदेता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम्. सर्वसाख्याधिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवर्धितत: द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददीर्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशागत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम् पञ्चपंचाद्धमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्मयाचक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारेमतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रसषष्टमितिमायुं कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहताहै गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के व्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

धन लिया तिसो से महा पापका भोगी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥ ५

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंपाप्य बहुकार्यरतोभव यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोक्कार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदमाप्नुयात् अतिकष्टमहा अल्पं नूतनोजन्ममण्यते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं व्रणचिन्हञ्चशीर्षोंपि किंवाशस्त्रघातकम् उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशाषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षांत्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सुयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्ध पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य षोडषाब्दादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च चञ्चलः मित्रपक्षपरंप्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राब्दमारभ्यद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वंकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतन ग्रहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावचिंतन एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सुतापुत्रसमायुक्तो लाभकृत्याविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपिस्याद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धन क्षत्र चिंतागतोगुप्तं स्वात्मजसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितवर्षे शरत्रिंशतमांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्य सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यश्च पदद्दीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य द्विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मनेच्छापूर्णंतोषिता। द्विकन्यानेत्रपुत्रश्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्भयमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्ठांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदरुग् रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्ते। वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव को मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसेकरे किसीकाबुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्ठहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकः उत्तमश्चकुलंश्रेष्ठईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तानकथ्यं ।गूढतत्वापिदशंक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्ठाभंगचिंतयेत् जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौम :मोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशा श्रेष्ठसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने दिने स्वकृत्यपरमोलाभंअकस्माद्धनप्राप्नुयात मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्वजायतेकुल दुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरं आयुपूर्णपुनर्भवंत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंते भूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घटाकर्ण तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् देदवर्षंसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिः सद्यशांतिभवेत्तेन आनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स तथाचसरचंद्रके विद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्माज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागोचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िता बुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमे श्रेष्टसंगप्रभावेणपनरंतेमहत्सुखं विंशै ोपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनागम द्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितो रसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावर्जीयनी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यत्तंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्बुयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्टित पददीर्घमु
पस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो
दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्वत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्व
वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे
तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुण्येनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद
त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय
ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवा ग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता
मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोषोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा
रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य
प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुण्यकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्रहो लाभ मध्यम रहे काम होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेशपावे सूर्य मंगल और राहुका दानमंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

१ सदा दान को धनल सब कार्य किये विशेष सुख भोग सौ श्रव गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्गसुख प्राप्तकरे ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि
परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभुयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं
नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स
चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुद्दष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातःसर्वपूर्णोविनिश्चितं
(सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल
सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णंभवेनरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुराय
कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रञ्चशांतये तातचिंताविनश्यंति
मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि
बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव
व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रञ्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख
संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राङ्ककेकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीति रूप
यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनरदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राद्धमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता
विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै
भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राङ्ककेकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् त्रित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे
मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोह्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभावन सुदुग्धंमहिषीगावदापदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोत्रसुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखान्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घसुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेंचत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चावकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरत्ननासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजातेअकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुण सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यञ्चप्राप्यतेनरनारीसुक्रीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसबैं मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्ठांतरोकाव्य ज्वरतप्तं विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिंचास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितिय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीत रहे अपने दुखसुखका सब वृत्तान्त उससे कहदिया करे और विशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीति रक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त न दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभ खुशी देख और नाकिस दशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेष दीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंता सी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेतुक पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिडार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशाय नमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतेमातबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं
मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहा भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं
मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप
क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च
महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीते सर्वकर्मैंशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वैषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम्
पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र
प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं
वृणपीड़ातृतीयेब्देच्चचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचयुक्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश
समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे
द्वादशेवर्षे मध्यतद्वदाम्यह पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम
किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मैणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष
आरक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविषेशेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम्
पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात् भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहाविदाशंत प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदिता दीर्घचिंताविनश्यंति
जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनदिता वन्हिनेत्रगतेकाब्य नगयुग्माद्धकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात सर्व
चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़िता सुतःपत्रसमुत्पन्नोमंगलहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेण अन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वच्च रूपयौवनविव्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रोड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुलदीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिर्ब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौरभीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्रमनंदिता षष्टांषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणंश्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ठ और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्द में प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्थफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घं ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचिनंउद्यमणाधनाक्षय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोषणेरतः दशान्यूनमहाचिंताऽद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंश्चर्द्धकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसोउद्यमोपुंसश्चंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्धितःयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णंगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तगृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुज मातृक्लेशमहदुखंजीवश्चाशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनश्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचगलंश्चा ।शिशुक्रोड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाद्धमारभ्यर्विशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम् कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाद्धकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रवित्तवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तंअजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मा[illegible]ज्ञापनत्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतरेविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवह्निसुवर्षाणिपञ्च त्रिशांतरेतथा। व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यनेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणासर्वसौख्यविनश्यति कर्म श्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाद्धमारभ्य चत्वारिंशांतरेतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेण भोकाव्यकार्यसिद्धिविशषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वच्छमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाद्धमध्यमा ब्रहल्लाभप्रभावेणचित्तोह्यानंद ीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंत्वादौपौत्रजन्मसुमगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रंकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरं ताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुर्वृद्धिविशेषेण भाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढशुक्लसप्तम्यां निधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुन्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करवे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत मान धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करनें से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े २ काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसवावस्थासुमोदिता भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्ठसुखोलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्ठविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र महापुण्यसर्वंशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वंआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंत्तिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्णं सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाब्दमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहोतातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगोपिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षंगतेवत्सप्राणचंद्राब्दमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंतेआशक्तंचयदाकदा विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शनं रसचंद्राब्दमागत्यविंशवर्षादनंतरं तावतकालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागमः फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंताविशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वंश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय सुसंगातश्रेष्ठपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपीतुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजावततफलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्वतोदिशिमंगल शशिविंशगतेयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिर्दिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंताविशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुपक्षश्चक्लेशित कुलबंधुहृदवैरप्रत्यक्षनप्रकाशता मानसीविविधाचिंताआपदुद्धारणंपेन

शांतिव्रतिसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्यैरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य धनसंतानप्रतिष्ठित रसविशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवह्नितथांतरे गुप्तकष्टनपाड्यंतेअजीर्णं वातसभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेंधनपुत्रादिप्राप्यते षष्ठत्रिंशाद्वमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वैंशून्यपञ्चावधिलभेत पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासु ीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणांभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्वाधितंततः वेदबाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगबाणाद्वमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदप्रर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनैभ्योप्रशासितः शून्यरसाद्वमायुष्यंनिधनंजायते पुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोज़गार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पञ्चमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोज़गार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृत्ति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घत्रस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान कीर्तिवृहन्नित्यंदीर्घंभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलश्चापिसुखं सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेच्चिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्ततसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषे।सुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले भ्रातभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतो सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनंमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहाद महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति चितनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगत्रिंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भंचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिवलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेंसुखंजातभूमिमंद्रव्य
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोंजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यांविशेषेणगोदानतत्रकारयेत गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंनर्वमानवृद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदमर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिश्चपुण्यपात्रप्रशंसिता अत:परिसुखं
सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रव्य ।।षिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सराणाषष्टांतरोतथा ग्रहसाख्यविशेषेणसर्वआज्ञा
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ।। भाषा ।।

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र
जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक
प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत
करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले
जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान
लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और
फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहांचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैः त्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्क्रियायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्निनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वयोविन्मासेचसप्तमे प्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजुं तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते भातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलञ्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्धं
तिचदिनेदिने पितुदेहभवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित तेनसौख्यसमृद्धिस्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टञ्चजायते देहोदाघदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयात्व्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेत्रविद्याप्रठतिमध्यमा मासेमासेसुखचैवहर्षयंतिदिनेदिने ब्रक्षाञ्चपतनंज्ञेयंअथवाउञ्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यतेभयदारुणं
नग द्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत् स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जोवोमहाप्रीतीआशक्तञ्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
कनशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभञ्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा मूलमश्वध्रुवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाश्चितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवामभागेवृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भौमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्ररामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेचापिभूतले पुनर्पुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्णां दानव्रताचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्समवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोमपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ।। भाषा ।। हे शुक्र जिस जीवकी पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीवकी चिंता रहे और बड़े २ लाभ के उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावे कभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में व्रन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत होगया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ।।

निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमावे शुभ रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदं भाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात महच्छोचश्चजायते सहासीदृढसंकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसगात्रिनिर्मुख चौरभीति भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मंगलगृहमध्यञ्चनृत्यगीतादिकंभवेत पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमंगलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यबृद्धिसुखं देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत् सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणक्लेशितां प्रायशिचत्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापाकूप तड़ागेशुआरामेमोदमंभव प्रथमेद्वितियेऽब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेऽब्देचतुर्थेंव्रणपीडिनं नेत्ररोगणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे सप्तमेऽब्देषुसंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसंप्राप्तं पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं नवमेऽब्देजलोद्भोता दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा किंकरोमिकुतःसुखम् चतुपञ्चदशेऽब्देषु कांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका भर्णंप्राप्यतनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधाप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविशमितेवर्षेभाग्योदयविनिशिचतम् नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित्र वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल गानञ्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोषयतेविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्धित्रिशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंत्स्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिंकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्धसंजाते नगरामवाधितत यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्धिजोनतुतुष्यति नागत्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत गृहहाटधनंसर्वंविलगच्छप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः परन्तुधनलाभञ्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युंजयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यते मंत्रयंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाणमितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्थाधनीनरः शरपञ्चमितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम् सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनन्दमंगलंलोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्यकी बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वालाहो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्यमार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों कीं संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जापते विशेष सुखकी वृद्धि हो पुत्रकी इच्छा पूर्णहो एक अल्पसे अधिक भयहो पाप ग्रहोंका पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा तिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्रसहित संकल्पकरे श्रेष्ठब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे [illegible] आयु वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मग्रानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यःकामिनिप्रिय कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्ययुक्तश्च कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिग्रहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्टुरोकटुभाषिणः साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोगप्रपीड्यंतेनचिरंविद्यतेसुखम शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानिकरोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोग्रारामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदातव्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापदुदुखलभेर्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रौप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसंचिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च गंधंपुष्पविभूषित ग्राद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यर्पडनंपञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमवर्षें विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय ग्रष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं ग्रौषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंचवर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुर्किंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् ग्रष्टविंशमितेवर्षें चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भौतिसमायुक्तहीनजातिश्च साभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रस्त्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुस्त्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षे किंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभबाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानश्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सूर्न्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े२ आनंद भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्ज़त प्रतिष्टा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशको पूजादान करने से वंशकी वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटम्ब का पालन करे श्रेष्ट संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राणसे अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें जीवका भयहो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्तहो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत होजाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हे पुत्र पहिले जनम में ये जीव बडा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्थातक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अंत को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यंत पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आद्यक्रीडायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाङ्गमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित ॥ रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षेसुखंगता सवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वे हेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबुद्धिश्रेष्ठ
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभृत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुर्भक्तभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गचक्लेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्ठमेवर्षे पितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंते विस्फोटकभयंभवेत सप्तमेनवमेवर्षेविवाहोर्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विंद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तंदेव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्ठोपिबुद्धिमंतोविशेषतः ॥ विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानवृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वादाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविव्हलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिंक्रमात द्रव्यलाभं विशेषेणपदुदीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलाबृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागताः शरीरोपीड़ितंगुप्त आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत सर्ववाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेणअन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्धगेकाव्यतथाचनभवे दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवनं सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेन्नत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौख्यंप्राप्नुर्यंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनी तस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परंतु पूर्व पाप के कारण जीवको चिंता विशेष बनी रहे तिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल बंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परंतु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊको अत्यंत कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पापसे इस जन्ममें चिंता अधिक रहै घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहै लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न होतो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पापकी शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रःचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वं प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वें हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञोचधनाढ्यश्चसत्य वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम् बुद्धिमान्पंडितःशूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वें प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोऽयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागमम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मचक्रोशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपराजय वाहनादिसुखकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददेहदीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणाम् अल्पञ्चप्रथमावस्था मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रश्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेंच बृणज्वरप्रपीडिता पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्यथाभूयसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राद्धकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्टविंशाद्धकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथाविंशेत्रिविंशषष्टाविंशति त्रिंशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरंशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्रविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्ततिसौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्ठवेदनभेगञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम् चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनऽयशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्मायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णमायुःभवेत्तत ।। भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्याबुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्री वंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुए तिसी से ये जीव महा पाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधी से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ।।

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभव द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत चक्षुरोगविजानीयात किंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनर्कष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो द गमेकादशेवर्षेद्वादशे चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राङ्ककेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माङ्ककेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय भ तस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिवांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेंच याचमानापितृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाङ्कके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण
भोजनंदद्यात्सर्वंकष्टनिवारणो क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घंगुप्तचितायदाकदा
गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन
धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा
कार्या मासविंमप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येश आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं
ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाङ्कसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम
पंचावधिगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा
युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुखः हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनंद हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे । हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यंत युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधू मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवितव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागमोनित्यं मध्यसौख्योह्यमाप्नुयात अहन्तारोहृदेगुप्तं लोभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वं दीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुणद्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन सिद्धति अन्त्यसर्वंसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्द्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमन सत्यवक्ता सुखीलोके असत्योक्तोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि लभेद्द्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफलप्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासोश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पापकर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा वद्वाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महादानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पद्दीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा
सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा
वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घ चित्त
आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेकचित् अभुतस्वकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते
एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा त्रिचचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं
ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहै कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युजय का जाप वेद की विधी से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेद पाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता कामपीड़ाविशेषेण अकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्भयसमन्वित दुष्टकर्मणनपीड्यं तेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मैसुखसंभव बंधुवर्गापवादीचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा पितुर्द्रव्यविनाशीचसुयत्नेनविवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यंकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणासमायुक्तः कुनखीसेवकः प्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणंमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षैगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामबाधाप्रपीडत मित्राणांचञ्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्रीप्रीतिसंपन्नो आशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राब्दमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नातिसुन्दरं मोदबृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्टयुग्मयदारभ्य रामरामाब्दमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ओंऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिंशाब्दकेतथा तावत्कालगतेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभं गुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविप्रोत्तमेकार्यंजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंकापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकालसुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोग्रजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षैसुखंज्ञात्वादीर्घ
कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टय: विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते ग्राज्ञाकारी
सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते ग्रायुवान्संततिपश्च ग्रन्येचस्त्रलपजीवनं
रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंतत्तकृत्वा ग्रौषधिभक्षणंशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णतोये
नित्यश षष्टमासाद्धयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेन्नर:सदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घग्रौषधीफलवर्जित कालेयम्रृयतेसापितदांते
चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवग्राशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्या
रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत ग्रंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेत्तनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रथाग्रेसुकुले
जन्मनात्रकार्यांविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतये शुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकृतु महसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वहबड़ा भागवाला हो दासदासी ग्रौर सवारियों के सुखपावे धनपुत्र संयुक्त हो ग्रति सुन्दर स्त्री भोगे ग्रौर सब सुखपावे क्यों को इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बनगया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति ग्रावे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो ग्रौर ग्रंत में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय येजीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुवा था बहुतसा पुण्यदान किया परंतु एक समय बहुत सी मदराका पानकर उन्मत्तहो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव ग्रति ग्रभिमान वशहो मदसे ग्रचेत हुवा उन ऋषि को ग्रनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि ग्रतिशयसंतापित होने के कारण क्रोधकर यह शाप देते भये ग्ररे ग्रधनतैने धन ग्रौर मदमें उन्मत हो ग्रतिक्लेश दिया ग्रौर हमारे ध्यानको बिगाड़ा तिससे ग्रगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही ग्रपने सम्पूर्ण धनादिका नाशकरे क्लेश का ग्रधिकारी हो हेशुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुखका नाशहो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे ग्रौर सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे ग्रौर जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

ब्राह्मणोंको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणोंको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे द्वितियेवर्षैदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे आनन्दंवर्द्धतेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घंतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षैद्वादशाद्धविधिक्रमात सर्वसौख्यागमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेण आशक्तमनः क्वचित भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात नारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती आशक्तञ्चविशेषता कामरंगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मथावाक्यश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम् चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावार्द्धतंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभकर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधीविनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्धमारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोकवे क्रमेणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीत्रदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्वपापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निजकृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्योपायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात मासेवर्षेंसुखंजातंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्ममन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घंकार्यंवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्ठकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासीसमायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंमवें प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुण्य नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुण्यविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुण्यदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णानसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहतेहैं हेपुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुखपावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता २ रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता २ रहजाय पुत्रके सुखमें विघ्न हो और कभी २ विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते २ उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभवश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हेशुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पाँच तोले स्वर्णकी गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयश्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेह्रास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतौपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चितातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुरस्थित विशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभाग्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोच्चधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तेशोत्रवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुरूष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्राचंनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसयुक्तआशक्तश्चापिविन्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौच्छायाप्रपीड्यन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घच्छायादाने
चशांतये रामाब्देपञ्चवर्षाणिवृणपीड़ाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याच्छायादानञ्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षेराजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोऽव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्चयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविघ्नोनप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिश्रुवंयातोऽव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायते द्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवर्धिकाब्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहै सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मंत्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े २ खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहै प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जनम में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मंत्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वंग्रहाप्रोक्ताग्रग्रेफलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीणदेहोकफादिकयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुनसौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्ताधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्पभक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यवहारे क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थेमोदतेभुवि कावित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषान्वितः दीर्घदेहविषदृष्टि दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यममागमः सेवितंकिंकरे धूर्तैंनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्ठुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबुद्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजाचकारयेत घृतंपूर्णघटंदानं खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात सुगन्धियुक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च मोदिता सप्तचन्द्रेचविंशाद्धेवेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्यबृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षें ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्धेवन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्ठमे वर्षेंव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंकविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीभतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम् नवमेकादशेद्धेषुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षें जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितवर्षें ज्वरव्याधिश्चजायते चतुर्दशाब्देसप्राप्यबाणमेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्धेचविशूचिरोगसंभवम्

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगमंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षें विंशवर्षंतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेंवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीड्यन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणे षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेंवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेवरणांतजे कदाचित्समयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षट्त्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानश्चवर्द्धते पूर्वयात्राभवेत्पश्चात धर्ममार्गेंधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशातपुण्येननानासौख्यमंगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेंसून्यसप्ताद्धप्राप्तने मासेवर्षेंमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसन्तानयानञ्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेंसर्वकार्यविनिश्चितं सर्वलक्षणसंपन्नबातपीड़ विशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ भाषा ॥ इस अङ्ककी कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीनहो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्तहो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीनमन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुखभोगें हेशुक्र येजीव पूर्व जनम में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपती राजाकी तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परंतु कामवश होकर फिर वैश्या गामी होगया और जप दानादिक क्रिया सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूंनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेऽव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यःकामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धोनसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तौ शत्रुवत्तप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातंप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपालित
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणांज्ञेयां विपाकेर्वीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षंचपंचमे षष्ठमसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वंकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेऽब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रश्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभश्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत गुप्तशत्रुविरोधश्च प्रत्यक्षंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभश्चकस्माद्धनमागम चिन्तोह्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तश्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलःवह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकगिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिने नवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचितनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्ठवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्य गायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलासयेव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वं पौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबव्रदानंचशांतये नंद षष्ठमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्रके ग्रह कुछ विशेष बलवान नहीं हैं परन्तु तथापि व्रद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी २ घरमें पीड़ा करलावे भ्राताका सुखहो या प्रेमी मित्रहो खर्च विशेष हो कृपणता नहो सके एक जीवकी चिंता बनीरहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्याबुद्धि विशेष बढ़े पुत्रोंका सुखमिले हीन ग्रहके योगसे काम अधूरा होता २ रहजाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्नहो अति परिश्रम करने परभी मनोर्थ पूर्ण नहो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवाकरे विशेष कार्य का अधिकारीहो प्रदेश बासंहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभहो कभी विशेषहो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबूसे बाहरहो प्राणोंका भय जानपड़े अधिक दानमंत्र उपाय करनेसे अवस्था दीर्घहो विशेषसुखभोगे पहले जन्ममें ये जीव स्वर्णकारथा स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरस किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छलकरे अन्यायसे अधिक द्रव्य लिया तिससे पापका भागी इस जन्ममें पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पापकी शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा चेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप
ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीर्मुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाव्यन्नुद्धिनसुस्थि
रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं
असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचित्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुह
लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताढ्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा
रणम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोर्पविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निंदतोमति जीवध्यानंचसंमग्न यौवनंरूपचितनम श्रेष्टकर्मरतो
चापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि
द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मंदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेषुसजातं भाग्योदय
विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षंच दन्तपीड्यज्वरादिकं बृणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षें
उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय
विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंताचदारुणम् अनुष्ठानमहादानं
महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षें षोडषाद्धचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्
द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जांवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि
नूननयौवनंप्रियं गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र
गत [illegible]व्य त्रिंशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वंपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नत प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाऽव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताऽव्ययोदीर्घं मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षावधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घंअजीर्णंनश्यतिक्षुधा लवणञ्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणाऽव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वग्रहसुप्रतिष्ठित शत्रुपक्षविवादंचकार्य भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोह्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यऽव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवं लघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलंसंप्राप्यविनंआशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिंवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगतिं कर्मभेदेनभोप्राज्ञसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्टा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीवकी चिंता मिटे परन्तुइस जीवकी बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुंचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बातपर क्रोध आजावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्बका पालन करे पराया काम मनसे करे ईश्वर की भक्ति में मनलगावे परन्तु स्थिर न रहे हटजाया करे कामकी उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घ [illegible] नमिश्रितं गृहान्यूनफलंकरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच्चप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मणिविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिंचिंतयेनित्यंअकीर्तिंच्चभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेच्चमोदिता व्ययोदीर्घंसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यञ्चसकुटंबदयान्वित्त सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीच्चमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसज्ञातिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात
भृगुवाक्यनसंशय पंडितंसंगतिप्राप्यशीलबृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वेषष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच्च षष्ठविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिंवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी
समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्य विसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गेंधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपुंसः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगीःबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ कलाभिज्ञोनृपश्रयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरं निर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससंप्रीतिः पितृभक्तःसुतर्पित तुरगात्मनं ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणिविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेंतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगमोनित्यभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपचारोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिंवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्णं भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्टहो बड़े२ कारबार रोजगारकरे परन्तु न्यूनफल कारक ग्रहोंका दान मन्त्र उपाय करनेसे पुत्रोंका सुख और विशेष धनका लाभहो किसी समय कुटम्बसे विरोधहो धन खर्चमें आये शत्रु नुकसान पहुंचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर विशेषहो बड़े२ आदमी इज्जतकरें प्रतिष्ठापावे ईश्वरका चिंतवनकरे अनर्थकी बातपर ध्यानकरे श्रेष्टसंमतिदे बुरेकामसे बचे श्रेष्ट मित्र में चित्तरहै खरचीला हो पोचबात न कहै चित्तमें गुप्तचिंता रहै इज्जतका विशेष ख्यालहो खर्च विशेषरहै एक समय प्राणों का भयहो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहोंके प्रभावसे प्राणोंकी रक्षाहो सारीअवस्था इज्जतके साथ आनंदमें बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मोंसे सुखपावे हेतुक पूर्व जन्म में येजीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आगया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसीसे विशेष पापका भागी हुवा सो इसकी शांतिके निमित्त काशीके थालमें चावल भरकर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदा[illegible] आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाशयंति श्वकुलंदीपकंतथा बहु

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाश्यंति श्वकुलंदीपकंतथा बहुकीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चञ्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुखवर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशांसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रंरक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णंसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिकप्रकोपीचकामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चञ्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धनयुतःपुंसः मीननादपरंप्रिय वृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांब्रजेत् क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसशयः शूरोथवाग्रामे पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायते क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगञ्चक्लेशिता पितुर्चिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम् ग्रामाद्धनप्रलाभञ्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्युभीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुर्चितासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्बृद्धिदिनेदिने शुभकार्यधनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठाग्रसंध्यासर्वभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्यंव्ययोचापि यथालाभेतथव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेङ्कमंतथा बहुविद्यानमाप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यक्षंनैवकथ्यत मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागा चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिंवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्टविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षमेकप्रमाणञ्च सर्वकष्ट निवारयेत तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परलोकं फलप्रदा खनवाङ्कमितेवर्षं आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्रीके ग्रहोंका बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनंद भोगेगा और कुलमें दीपकके समान चांदनाकरे और इज्जत प्रतिष्टा पावे सबके भलेमें रहे एक जीवमें चित्त विशेष फंसारहे नई२ बातोंका चिंतवनकरेहै हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतुका पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थानके ईशकी पूजन दान वंशको वृद्धिको अत्यन्त श्रेष्टहै गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होनेसे सब सुखपाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्टपावे प्राणोंका विशेष भयहो परन्तु पुण्य कर्मोंके प्रभावसे पूर्ण आयुहो कहीं अकस्मात धनकी प्राप्तीहो भूमी लाभहो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भलाचाहे मनकी विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हेशुक्र येजीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवानथा बद्रीनारायण के दर्शन को जाताथा सोते समय मार्गमें धनवस्त्र आदि चोर हरकर लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छ भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेद दीर्घमान्योप्रसिद्धक [illegible] मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्ठत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविषेशेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात भयभागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोक उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीघमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यंधनव्यय सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंमित श्रेष्ठलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्यंयदाभूत्यामनोद्वेगश्चिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं पुत्रंकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सवंप्रयत्नेन शांतनीयोविशेषतः जन्मतेःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टबाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयन्नंसौख्यसंभव मासेवर्षें सुखंजातमातृकष्टांवशेषतं षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारणा मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्याभ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगांचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनश्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुत्रापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकुत्रोपिज्ञातव्यंनक्कापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापं आनंदं जायतेध्रुवं सतश्द्विमिनेत्रषेंत्रिशेशोलाभ जायते विवाहोमंगलं कार्यं आनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाऽव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वंथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घं नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वें जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिंकाऽव्ययनानासौख्यसमागम चित्तोह्यानंदतापिस्याद्वहुलाभप्रभावत तीर्थं यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्धमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहंप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चित्तवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षिणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाज़ायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तित्रिवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतञ्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरोपाकेस्वज़नैरिपुतांब्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छंतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितत्पश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षेद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनबृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनायोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान् शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टत्रिंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेत्रकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथत्रा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैत्रच नतमसत्यामारभ्यचित्तंनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धतिभजनानदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकीर्तिश्चचित्तमोदमपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्टत्रिशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीतादिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्मपत्रमें ऐसे ग्रह पड़ें पुत्रोंके जोड़ोंका ध्यानरहै कन्याभीहो वंशकी वृद्धिहो धनवान् लक्ष्मीवान् परोपकारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरानमाने बड़ा प्रतिष्ठित नामीहो कईवर्ष विशेष धनकी प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्यकी न्यूनता करने वाले आवें पुत्रोंकी चितारहै संतान गोपालका मन्त्र वंशकी वृद्धिको श्रेष्ठहै लाभस्थानके ईशकी पूजा दान जापसे विशेष लाभहो और पृथ्वी पर बड़े२ कौतुक देखे चिंता औरभीहो अपने समझे वअपने कहे तथा सम्मतिके नहों घरमें कभी पीड़ाहो जायाकरे एक अल्पभारीआवे प्राणोंका भय रहै आयु पूर्णहो कैसाही भारी खर्चहो कार्यहो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्णहोवे हे शुक्रपूर्व जन्ममें येजीव ब्रह्मवंशमें उत्पन्नहुवाथा सो नाट्यविद्यामें बड़ा चतुरथा राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्तहो गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्ठिता [illegible] विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासु[illegible]न्वित पत्नी

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योगृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य
ग्रामाविचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वर्द्धनं चंद्रशोकस्थिताचिंतंसुखश्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यअकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्य। नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्प
विषेशेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणीश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिच्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजातो भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषश्चपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्य
नाशनं दर्शनेअरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीर्यसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तयेवर्षेव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रहं नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविह्वलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नञ्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तञ्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथात्रिंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्वेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा मासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषाद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनष्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वंधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्ठाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणंध्रुवम् ।। भाषा ।। इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेयस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ठ सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेधु वप मध्यश्रेष्ठदशाभुक्तो पूजितंसप्तकोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रु वम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र
वदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशक्तोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंदीर्घ पुत्रकांताप्रतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्प्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः अग्निहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेऽब्देच
पितुप्राप्तिमहर्द्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेऽब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगंचक्रीड़िता
सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्टहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसी द्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायनम्पुनःदीर्घधनंलब्ध्वाकार्यचिंतावलीयसीहीनकार्यभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वितः आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधिं काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभश्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिंकाव्य चिंतनंचापिदीर्घता चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रंचमोदिता षष्टपंचगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैय्यादानंसुयत्नत गोदानं श्रद्धायुक्तोआपदु द्धारणंजपेत अल्पायुनश्यतेवत्सदानमंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायु भाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्रमें ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वालाहो मध्यम और श्रेष्ट दोनों दशा भोगे किसी समय कहींसे धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहोंके प्रभावसे चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ को सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक काम हीन बनजावे सो पीछे मनमें बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्रीकी चिंताका ध्यान तथा जीवकी लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धनसंतान का सुख विशेष भोगे कुलकी रक्षाको संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ट बनजाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े२ दुख सुख भोगे परन्तु चित्तको दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी२ भ्रम सा हो जाधा करे नई२ वार्ता भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्तदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्ठसु[illegible]परोपकारककर्तागौबद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरं चेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्च कारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मणासुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत परनिंदाविरोधितंसुखाभिलाषितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचिनचैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्त्वाकदाचन लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजातिमानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभंचचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपिड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपंचमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविह्वल दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणब्रत्वंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविह्वलः नगमेकाद्धमारभ्य विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलंचगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनमंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाऽव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्योदयमहत्फलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्धमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्तिख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाद्धमारभ्यवन्हिषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविषेशेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तञ्चरोकाऽव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपोत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ट रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रोंमें लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्टा के कारण चिंता विशेष रहै धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोषी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्टा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्तमें समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घरमें पितृ पीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करनेसे वंशको बृद्धिहो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईशके पूजन से विशेष लाभहो प्रतिष्टा पावे मनेच्छा पूर्णहो हीन दशामें हानिभी हो परन्तु अन्तमें सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदीमें नाव चलाने वाला प्रधान था नवकाके कृत्य से बहुत धन प्राप्तकिया एकसमय एकसेठ श्री अयोध्याजी की यात्राको आया सो बहुत धन नवकामें भूलकर चलागया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्य कार्य में लगने वाला धन अपने घर में धरा तिससे पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवोंमें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धंसुखीनरः घनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यबहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतियुक्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपुर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवन्हिवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानश्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोबालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं
नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्णे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसिविविधाचिंत्यसुकर्मश्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोभाग्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीतिंख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्धगेकाव्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठंचकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययंचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिंचवृहद्भाग्योभूवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपंचावधिंक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुरायोदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगावो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदंचगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षं सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुरायक ँतिनूतनं पूर्वपुरायेनभोग्तससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्धमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यक्रिवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्धमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुरायविशेषेणाकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं विलम्बसे फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्टा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहें श्रेष्टकुल विद्यावान अवल तेज दूसरे की बातको तोले सत्या सत्यको पिछाने एक जीवकी आशा लगी रहा करे और जीवोंके खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहोंके दान मन्त्र जाप करनेसे मनोकामना पूर्णहो भाग्य और वंशकी वृद्धिहो येजीव तरह२ के दुख सुख गायत्री का जाप्य करानेसे घरकी पितृपीड़ा शांतिहो कितनेही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरूष हो हीन दशामें विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ट दशामें अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्याराहै एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरूषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उतपन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् [illegible] शीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणावेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टितकुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृप मीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाक्रांतिप्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरंव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडशाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायागर्भयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजायते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षेवामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रञ्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशावधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्ठिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वाजातितोषयेत प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशासित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वंपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतमहाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नंभवेत्सौख्यंश्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ओं नमोअकालपुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवजपित्वा सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंञ्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगञ्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभस्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीघंवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेचमहोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वालाहो विद्यासे बुद्धि विशेषहो कईबार धन इकट्ठा करे फिर खर्चहो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसामें रहे है उपाय दान मंत्रसे मनोकामना पूर्ण होगी और कहींसे धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभहो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिर मानता रहै पुण्य कर्मसे सब सुख मिले भूमि लाभहो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भलेमें रहै कभी किसीका आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें यह जीव शूद्र वर्ण था परंतु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों कैसे थे ठेके के कामों में बहुतसा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वसहो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसीसे पाप का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जप तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थबुद्धिमान्नर निजकृत्य कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन भविष्यंति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोलजीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणा अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण विशेषेण,सर्वसौभाग्यसंयुत आंतलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम् उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त पिशुन्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनासिञ्चउपकारीविचक्षणा स्वार्चितं धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मोन्यधनंसर्वेंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेबृणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्त्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टंविजानीयात पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहेपिमंगलं कार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोत्राव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाद्धमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणः खवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताद्धमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल यहहै कि दो दफे रोजगार की वृद्धिहो और फिर मध्यम होजावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभालकर रोजगार के कामकरे परन्तु नाकिस दशामें चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनंदमें बीचे कभी किसीका आस्तीक नहो अपने कृत्यसे निर्वाहकरे एक समय ऐसा भाग्य उदयहो कि सर्व प्रकार के आनंद भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करनेसे सब प्रकारके सुख प्राप्तहों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपायसे सब शांत हो आयु बड़ीहो पुत्र तथा गृह सुखकी प्राप्तिके निमित्त संतान गोपालका जाप्य कराना श्रेष्ठहै वंशकी वृद्धिहो पुत्र पौत्रोंके सुख देखे एक जीवमें विशेष प्रीतिहो हीनदशामें विशेष चिंता और क्लेशहो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव कुरुक्षेत्र में जन्मले नगर का प्रधान अतिधनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां **सूर्य** ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जानकर देदेतेथे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण फल पावते ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्माननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद् अल्प कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रष्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोबार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणोयुक्तसुशीलो कांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशांतश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्च क्रियावृत्तेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वमित्रशत्रुवदाचरेत प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्धके विद्याब्रुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चग्रहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषोमित्रतांव्रशेत क्रीडितश्चविशेष विद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशा आदौयत्नमहत्फलं सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राद्धकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं घहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राद्धप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशव ˚क्रमंतथा चित्तचिंता विशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चिन्नंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यंपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्वलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पण्यफलोदयंनित्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पाददिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाद्धकेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्यान्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुर्निधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीका फल यह है कि विलब से मनकी कामना पूर्णहो रोज़गार लाभ बढ़े युवा वस्थामें विशेष भाग्य उदय होगा बड़े२ रोज़गार करे किसीसे मिलकर धनका विशेष लाभहो प्रतिष्टा बढ़े पश्चातमें मनकी अभिलाषा पूर्णहो प्रथम बहुत जीवको दुखमाने फिर संतोष होजावे यह जीव विशेष छलछिद्री नहो और छलको पसंद नकरे नेक नियत के रोजगारसे पालन करने की अभिलाषाकरे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्तिहो एक अल्पसे बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहै फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े२ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीतिकरे किसीका बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी२ दर्दसा हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जातिथा अपने षटकर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथको मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक होगया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानुरक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराड्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः मिष्टानलवणंभोज्यंपक्कमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत शुभम् धर्मेणधनबृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्टरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरोधीचक्रुपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वैं परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते बृणाचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपश्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि तथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोऽर्चिताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्माद्यत्नंचकारयेत् बृहत्वोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातमहाचिंतोबालबृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेबृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत् मिष्टं मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहूक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियत्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोह्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यबृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहूद्रव्यव्ययोभवेत बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणि कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहोभविश्यतियथाचितम् उरूरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरिसुखंदीर्घंदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधिंतथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्टमितिमायुपुण्यकर्मेंबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीमें ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टावाला भाग्यवानहो सब तारीफ करें सलूक करनेवाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्यके काम करे भूके कोदे ईश्वरका भक्त सत्यभाषण करने वाला कईबार बहुत धन प्राप्त करे रोगोंसे बचे सत्यासत्यको पहिचाने शरीरमें फोड़ेका चिन्हहो कामदेवकी उन्मत्ततामें न्यूनबुद्धि होजाया करे जीवकी चिंताको गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्नकिये अधिक क्लेश पावे धनका संदेह जीवकी चिंता आदिहो गुप्तशत्रु विशेष हानि पहुंचावे शरीरमें पीड़ारहै काम होता२ रुकजाय तथाअधूरा होजाया करे इस जीव को बड़े२ भारी खर्च के कामआवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़े२ दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिसने दोषका भागी हुवा सो सब दीनों को

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्टितोगृहे व्ययदीर्घसुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुच्चितनं गृहबंधुविरोधश्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त मोदेनपूरिताः कारयेद्वंशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य जानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचितातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी स्वाजतंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेत्रवर्षेसुखंगत तात्तलाभभवेल्लोके बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र मितेब्देतुशरचंद्राद्वकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षातंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्धमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंते गुप्तचिंताहृदोस्थत अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामामितेवर्षेत्राणत्रिंशाद्धकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेघृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाद्धके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताद्धपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहूलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यतः पञ्चसप्ताद्धमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुवि: तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवांवरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्मुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा नहो खर्च विशेष रहै रोजगार करे बड़ी हिम्मत वालाहो दूसरेकी बातको तोले श्रेष्ट आमदनीमें कुटंबका पालनकरे कैसीही धनकी न्यूनताहो परन्तु खर्चका काम कभी नरुके इज्जत से काम हो जाय चित्तमें भयसा रहा करे परन्तु भाई बंधु अपनी सम्मतिके नहों युवावस्थामें कई बार धनकी चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंशकी वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहै घरकी पीड़ाका यत्न करे एकबार कहींसे धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मंत्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्णहो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव क्षत्रि कुलमें नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेनाका अफसर था युद्ध विद्यामें अति चतुर था एक समय संग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चौंटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

अति चतुर था एक समय सङ्ग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे
उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चौंटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृवाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंवृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणभ्रमोपिबहु मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यवृहत्वोपिसर्वेपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं चापिमिष्टवाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंते अल्पायुयोगनाशनं पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो रूपचिंतनं प्रथमेद्धेरुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देवृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागञ्चनंदके बालक्रीड़ा क्रमंवर्षंतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलञ्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुयोगनाशनम् दशमेद्धादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययात्रत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वं पुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हि गतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथा त्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेंचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति विशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दंईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चाबधिकाव्यपौत्र जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्धमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना दिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्त मितिमायुभुञ्जीतोपरायमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े२ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनीरहै परन्तु खर्चके कारण धन जमा नहो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसाही भारीकाम हो ईश्वर की कृपासे सब इज्जत प्रतिष्टाके साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जतकरें किसीसे तृष्णा नरक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन नरक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करे कईबार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रोंसे मेल रहै मिष्ट बाणी बोले किसीको कठोर वाक्य नकहे बहुत निष्प्रयोजन नबोले पंचम स्थानके ईशकी पूजा और दान मंत्रादिसे पुत्रोंका विशेष सुख मिले जीवकी आशा पूर्णहो अल्पोंके दान मन्त्रादि उपाय करानेसे आयुकी वृद्धि को श्रेष्टहै हे शुक्र पहिले जन्मसें ये ग्वालवंशीथा विशेष धनवान हो कुवां खुदवाताथा तिस भूमिसे परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होनेसे कुछ द्रव्य राजाने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाय सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त मूर्खोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो यह पीड़ा शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शभानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्माद्भयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतंलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जोतोकर्म बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोक्वे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच चोरभीतोपिगुप्तता आदौमौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेव्रणविस्फोटकादय मातृ चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो कामाक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्रांकमंतथा। गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षसुखं प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बुहूविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंमित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्यं मात्रञ्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षित भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवआशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिंकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रञ्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं वापिकामन्द्रंदासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े२ भाग्यवान ग्रह पड़ेहैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यूनसा कर दिया नहीं तो पृथ्वीपै बड़े२ आनंद भोगता सो अबभी पापग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा आदि करनेसे फल प्राप्त होगा जीवकी चिंता मिटेगी शुद्ध चित्तसे मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फलकी प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी येजीव लाभके उद्योग में रहे परन्तु मरजीके माफिक कार्य विलम्बसे बनेगा और काम की सिद्धी होगी बड़े२ खर्च सिरपै झेले घरमें पीड़ा क्लेश होजाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ हो न सके मित्रमें मन फंसारेहै और शुभकाममें विशेष धनखर्चहो बड़े२ फिक्र और आनंद देखे एकसमय नया जन्महो चित्तमें नई बातसोचे मित्रकी और लाभकी बातोंमें चित्तलगारहै यत्नसे आयुपूर्णहो हेपुत्र पूर्व जन्ममें येजीव शिवमन्द्र का पुजारीथा चर्सभंग बहुत पीता औरोंको पिलाता एकसमय शिवरात्रि को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके धनसे खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गऊस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्विजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्टआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकारणोभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षातंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशाद्धमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रश्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसंविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाद्धत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यसर्वमंगलं चित्तोह्यानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्ठकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्यमवाप्यते भागबृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यश्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिंकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्मपत्रीमें जो ग्रह पड़ेहैं उनका यह फलहै उच्चपदवीपावे किसीके चित्तको दुखनदे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वालाहो कैसाही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्यनआने अपने लाभका ध्यान बनारहै चित्तमें प्यारे मित्रकी याद बनीरहै उत्तम आजीवकासे पालनकरे बड़ी इज्जत प्रतिष्टा वालाहो बहुतसे मनुष्य इसकी आशामेंरहैं अच्छे२ वस्त्राभूषण घरमें स्थितरहैं एकसमय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सोकुछ नसमझे पुत्रोंके विशेषसुख और लाभके कारण संतान गोपालके मन्त्रका जाप्य करातारहै तो वंशकी वृद्धिहो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजायाकरे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतहो हेशुक्र पूर्व येजीव ब्राह्मणथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासखीन्नर [illegible] भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपालयतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवचं दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेद्यत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांअन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेलाभंचित्तआशासुपूजितं वृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्ठित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णभविष्यति
शत्रुश्चपतितंनूनंनकश्चितहानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थतेमनः आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्यमनंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बनः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुणा भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिश्रंकाभ्यासश्चवर्द्धन बालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाद्धमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं
तातमातअनन्दिता नगचंद्राद्धमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति अनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घंव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुणा
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आप दुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणंदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षैंशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता ५ददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाद्धकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखलोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरचत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्यभूयसे सुतपौत्रसुखसर्वैंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधिंतत रामनामजपंनित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोकेसर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदश्चानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वआशापरित्यज सून्यसप्तगतेवर्षैंआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताद्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहै कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहै तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहै चित्त में कपट न हो आनन्द में रहै एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहै अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अग्नि के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्दे चदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे व्रणव्याधि

- अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ।। ८

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेंसप्तवर्षादिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतच्छायाचविह्वलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातञ्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यंधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगञ्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रञ्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेंसून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राङ्केवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुं समंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतञ्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगञ्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानञ्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाञ्चप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामञ्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यवाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेबंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टञ्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्रराममितेऽब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयातस्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवातयाचित्तशुभकार्यंधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओंऐंह्रींक्लीं

श्रीबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अरण्ययोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेण अल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारणः बहुहिंसावधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाद्धकेवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेऽब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयातस्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापितहैं तिनका येफल है कि बड़े भागवाला जीवहो कुलदीपकहो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बीहो न्यून कारणसे चिंता विशेष मित्रसे मिलने की इच्छा रहे दो समय धनकी विशेष प्राप्तिहो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थानके ईशके कारण चित्त हटजाया करे दो ग्रह बलवान पड़ेहैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता२ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभके कारण एकादश स्थानके ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्पसे नया जन्महो ३४,४४,५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसीका बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्चंझेले हेशुक्र पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे
स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यबादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद् सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयातघूटिकाप्रतिशांतये तातमातसुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयातमंगलाचारहर्षकम् व्रणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगञ्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेंसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेंबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभञ्चदीर्घोवागुप्तचिंता शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीतिनसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाङ्कवर्षेंबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेंबाणवेदमितेतथा देहकष्टविजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥ शुक्रोवाच॥ केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्तिं विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्ससर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशयः पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्ठसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्ठमितेब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगत्रनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुन्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घरमें मंगलाचार खुशी जीवका ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थानके ईशकी पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्तिहो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिलजाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमतता में बहुत दुख दिया तिसके शाप के कारण जीवकी चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

१ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥ १

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य बृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम् अर्धप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो वार्तयाचिंतः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतिष्टया रोगश्चप्रथमेवर्षे द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेबृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग समाप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम् नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येबातपित्तेनपीडनम् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनदानेन पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रुणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम् पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाङ्कथ्यंतेबालबृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा राजद्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्वय

नसंशयः षष्टवेदाङ्केवर्षेशून्यशरमितेतथा भुमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणाषरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंब्राह्मणायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्वेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुर्भवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मनकी कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ संपूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य संपूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

ग्मावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छूवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ।।

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घंता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं वाच्यंबालबृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बाल क्रीड़ाकिलोलश्चजीवबुद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिण्ठश्चविद्यायांअंतविद्या विसार्जनम् वहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलभ् त्रयोदशअष्टकंचंद्रव गाथाचकथ्यते तातलाभ भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र मितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेब्देचव्योमराममितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्यविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेत्तथा अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापंचभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारण गोवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः सर्वंसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तंच

फलित वृ०स० १८८

कारयेत पूर्णंयत्नेनभोकाव्यनिश्चमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वांअग्रजन्मपुनःपुनः चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मोस्थतंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदानश्चशांतये चंद्रशरमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसी विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेऽब्देचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखश्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले श्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ठ आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्यकरे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालबंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश होकर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित होकर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो

तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान करवाकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः एवग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेब्देज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात् रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमातसुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंममः तातलाभधनंबृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसर्जनम् समबालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्यगाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धिविशेषणकार्यकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीत्वजीत्वनंसुफलंममः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्याचदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेब्देचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन् कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्रराममितेब्देचशरराममितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यकृत्यनसंदेहोद्रव्यलाभप्रतीततः षट्रामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासोप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलांतरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाङ्केवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रह गलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टयं ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूमकाणिकानिचः धर्मकार्यंभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्चमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेंशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेत्तथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधञ्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वंसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्ण पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहे पश्चात् आराम मिले अल्प बीचकर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्टा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मनसे करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ट है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्टहै मित्र में विशेष मन रहै मीन रेखा हाथमें श्रेष्टहै एक बृणका चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्टहै किसी के चित्त को यह जीव न दुखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंशमें था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपंवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो
मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विज
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेबालतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनश्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भगिनअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रश्चमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प
जीवीचबालकः जापमंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चन्द्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनन्दभूमिमण्डले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चन्द्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्केशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वंसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकरे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चंद्रवेद
मितेद्वेचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वजदंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टवाणीच भाषणं पितपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्रसरमितेऽब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंकचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेऽब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्महत्व्याधिऔषधी सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधबंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस प्राणी की कुन्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डराकरे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ट है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमानसी हो जाया करे एक समय अचानक विपत्ति रंजसा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ट हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्टा वाला ग्राम पति जमीदार था दान पुन्य भी विशेष करता था एक समय इस जीवने हवन करके यज्ञ करो थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमत्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष बृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते समेदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंत्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विज

Nepal Sanskrit University, Balmeek Campus, Kathmandu.

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्ष्णः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहञ्चजायते वृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभगनीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते
कनिष्ठोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचितव्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा व्योमरामाङ्कमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुश्चबालकः
चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति
आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाङ्ककेवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्चपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाङ्ककेतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवास अकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वऐकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वविनश्यति शरबाणमितेऽब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादंचधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्ठोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंतौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपंचईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्रागवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृधिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन की प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष बृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की बृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उनका उपाय जो कुछ लिखाहै सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक२ प्रकार की बार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीवका दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्यं प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फलभी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्रपर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवाकर और तांबे के कलश में घृत भरकर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रिके समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंशकी वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

॥ श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः [illegible] प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच

१ और हे शुक्र उस जीवको स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम और सो आनंद में पूरा उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोअसत्यबचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेंतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदिने अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये वृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेंविंशवर्षोपिमध्यमा विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडित पितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं चंद्रयुग्ममितेवर्षेंशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः चंद्रराममितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धकंमध्येसर्व गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचिंतवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयात्गुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम् अन्यवर्षेंसुखंतथा अकस्मात्उपद्रोवाकिंचित कालशांतये चंद्रवेदमितेब्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पंश्रद्धाचब्राह्मणंददेत दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेद्वेचशून्यषष्टमितेतथा छ्त्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टंविजानीयात्व्याधिवृद्धिर्दिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानञ्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्र अतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदञ्चप्राप्तये भूलिलाभ भवेतशुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पञ्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्रीका फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेषरहा करे और हेशुक्र इस जीवका खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्टा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईशका पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो आत योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीवका दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युञ्जय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहै चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्टहै विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतःश्रीमान्जन्मबाधाविधोनतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोत्कं
वृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिअथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयाद्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिता
शरीरजं षट्मेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधि हवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रआभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः
पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वआयुहर्षकम् पूर्णआयुदशंरेखासुशुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिञ्चितकालशांतये चंद्रवाणमितेब्देचशून्यषष्ठमितेतथा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिंलिपिकृत्वागंगाजलश्नानकम् तनमध्येकाम बीजश्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगत्रनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहै यह जीव धनका उद्योग बहुत करता रहै और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ट फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य बार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की बार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुलमें चित्र गुप्तवंशमें था और हस्ती घोड़े बाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्यायसे अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सरवस्व जाता रहा सो पंडाने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिसके कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र
सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्याद्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसतकीर्ति
कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो
ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेंत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु
विरोधश्चत्तातचिंताचगुप्तता धनव्ययश्शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलश्चआनंदभूमि
मंडले तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं
पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखश्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा
चंद्रमित्रपरंप्रीतिछ्त्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणश्चसुताजन्मन
संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानश्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे
व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्ठश्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये वृणव्याधि
शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनंव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते
चंद्रराममितेवर्षेंबाणलोकमितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो
पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तंचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षें
शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः
किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्ययः मासेवर्षेंसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनाबाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमबारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनबांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केंद्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहै चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्टा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन बार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईशकी पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैकड़ों चौपाये और सैकड़ों मनुष्यों को पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैलका अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रियः शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दु:खंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके [प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभगनीभ्रातृप्राप्नुयात् तातमातमहासुखंजीवनंसुफलंमम: मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवाछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणनान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेव र्शरबाणमितेतथा व्योमरसाद्ध केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मातमहाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने, चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नश्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणन्नसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फलहै कि ग्रह बलवान आनकर विराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े२ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बचकर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े२ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश होकर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में होगई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

कारण श्रेष्ठ फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न धन वस्त्र दान करने से श्रेष्ठ फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंब्रजेत् दयावंतसमाहृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तबृत्तिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृण व्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्येधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीतिममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाङ्कवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्रराममितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाङ्कंमध्येसर्वंगाथाचकथ्यते अर्धआयुगतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्येधनव्ययंविवाहोत्सव मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययोयोगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाङ्कंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमामंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत् नवीनोवार्तयाचितवाहनादि सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मातमहल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यज्ञाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगत्ननंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तदद्देत्विप्रसंकल्पंनृपतिकुरु आचार्यदानहृष्टस्या अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योगका यह फलहै कि बड़े२ खर्चके काम संपूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्चका भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीवकी आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक बार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हान हो चित्त में भय सा रहै फिर धनकी प्राप्तिहो स्त्री से प्रीत और घरमें पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्पसे बचे जीवका दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पंडा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक [illegible] लोकसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः

१ राजा के दान की अभिलाषा थी सो ह शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का शुभ दान दन से निश्चय करके कामना पूरी हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकेसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदं भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तंमानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिन्ताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग व्रणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं अष्टमेद्वादशेव॑ त्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्च विद्या प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षें सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान् चन्द्रनेत्रमितेवर्षें बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यंकृतेनसंदेहा भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाश्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वा मंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यं व्याधीनष्टंदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये अकस्मात्उपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्रराममितेवर्षें बाणलोकमितेतथा शून्य वेदाङ्केमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि प्राप्तये वाणिज्योकार्यंकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्र भूमिमध्येच स्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्त वैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोभंद्रवामकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि इस जीवका चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं है किसीका बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एक ब्राह्मण तिसका मित्र था कुटम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मरगया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र
पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच
रेचनं मातृकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षे मंगलाचारकंतथा आदिपठनश्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति
कार्यमात्रश्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यधनव्ययः
तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीत्रचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा
किलोलकं पशुजलभयंजीत्र उपरश्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोति पत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ
विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचोरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरज चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय
मध्यंप्राप्तिविजानीयात् तातचिंताचमातकं गुप्तश्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया नानालाभकंप्राप्ति भाग्य
वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंति भृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा
लाभोभवतिंनान्यथा ग्रहापूजा नकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा
यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषतं चंद्रराममितेवर्षे बाणराममितेतथा
शून्यवेदाद्धमध्योपि सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रपक्षविरोधीच
धनमुद्राव्ययवृथा वर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंता
शरीरेच रविदानश्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यंकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधींचधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापारिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मातुउपद्रोवा गुरुचिंताशरीरजं मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुरुचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्टा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनंद दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तातका धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घरमें मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तातको लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्टहै नहीं तो जीवकी चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वालाहो इन्द्री में पीड़ा कामकी उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े२ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्पसे नया जन्म हो है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनीरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बड़े प्रतिष्ठा बड़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बड़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहूभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यंश्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यगयश्च बहूसेवीनराभवेत मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यात्तो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीज्वरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकं बालक्रीड़ाकिलोलश्च भग्नीभ्रातश्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात बालविद्यश्चप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगश्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचितवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिश्चदृश्यते शुभकार्य धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरज चंद्रराममितेवर्षे बाणराममिते तथा शून्यवेदाब्दमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेब्देच शून्यबाणमितेतथा चंद्रअल्पदुखंशुक्र दानमंत्रश्चशांतये करमानश्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षें शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखाव वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थ ईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णविजानीयात व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा व्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय ॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धनका मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्टा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेलें दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडाजी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर ग्रहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगञ्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदोसत्यवक्ताचपरकार्योंपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामोदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोधितवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पञ्च प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुहृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगञ्चप्राप्तये बधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगञ्चप्राप्तये अल्प विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरञ्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रञ्च मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नोप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मातउपाधीत्रधनव्ययविशेषतः चद्रनेत्र मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता शरीरजं कार्यंमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तञ्चधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशञ्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव मंगलम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनःर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षैंसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षैंशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंहृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढसुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका यह फलहै कि ग्रह बहुत उम्दा आनंदसे अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदांत मतहो स्त्रीको चित्तमें पुत्रोंकी लालसा बनीरहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभकी वृद्धि हो अकस्मात् प्राणोंका भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर नरहै गुप्त धन मिलें शत्रू हो जोर नचले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तटपर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत
समाहृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान् सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणांकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्यावृद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेरांतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवौनो
कार्यकंचिताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यंकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधौऔषधीसेवनंवृथा वेदसप्ताङ्केशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रतापके बैठेहैं मनका गुप्तभेद किसीको नदे विद्यासे बुद्धि विशेषहो सत्य बोलने वाला सबका भला चाहे पराये काम मनसे करे पिछली आयुमें बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीवकी तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईशकी पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्णहो एक जीवमें चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे [illegible] भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चञ्चलोङ्कांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यञ्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चञ्चलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशीलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणक दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यश्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रञ्चशांतये षट्बाणमितेवर्षैंशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणकुर्यतंमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षैंसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वंसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षे षट्रसआढ्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत उच्चपदंवासुखंप्राप्तिआनंदभूमि मंडले अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी कालमें हो सत्य वचन बोले श्रेष्ट जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह २ के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेषहो अकल तेजहो दूसरे की बातको तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनिका मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे काहो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी कालमें खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काममें खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूहका सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दंड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्ठश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत [illegible] विशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्ठश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् बृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं
सुकीर्तिंश्चिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्ठता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्य
पुनरन्तेसुरक्षण. पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भबाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीडाविशेषेणभूतछायाश्चविह्वल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगाविनश्यति आनंदंकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंरुजंसर्वं
विनाशनं वेदवर्षाचपञ्चाब्देषष्टमेसप्तमान्तरे बालक्रीडाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुश्चिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोत्तदा तातलाभ
विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीडाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीडामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिश्चपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेजननाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यश्रेष्ठोभिजायते पापादुखंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योहर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहूचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखोलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणंश्चेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये हृद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुण्यसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात नगवेदमितेवर्षे शशिपञ्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययशवंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चांतरोकाव्य व्यालपञ्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वं प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषट्प्रमितिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फलहै कि ग्रह श्रेष्ट हैं और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुखदुख देखे इज्जतके साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीवकी चिंता रहै छलछिद्रसे जले सत्यासत्यको पिछाने किसीका बुरा नचाहे हीनदशामें फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्तिसे रहै आनंद मानकर बिताये एक अल्पसे प्राणोंका भयहो सुयत्नसे प्राणोंकी रक्षाहो पूर्णआयु भोगे तथा लाभेशके पूजन दान आदिसे विशेष लाभहो हैशुक्र पूर्व जन्म में येजीव ग्वालवंशी था बड़ा धनपात्र था मथरापुरीके समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकारका आनंद पाताथा एक समय मूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसको ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो प्रतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो [illegible]

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीत्रदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण्येनविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्यययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वपूर्णो भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यांवितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता वृणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालवृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदबृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतमहोत्सवं विद्याबुद्धि बृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यफलदायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या लुभ्यतेललनाजनै महर्घंभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाऽव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाऽव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्भवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहामोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाद्धमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावतकालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चद्रचत्वारिवर्षाणि तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयातनृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्तंतेकिंचित्कालविनाशनं दान पुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणागतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानुसारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मैतथाभवं पुण्यकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाद्धमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवदिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवानहैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्टा तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े २ खर्च के हैं सो चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दौनो भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा पूर्ण हो बड़े २ सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म म ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीत्तिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवञ्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरायते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेकृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यंरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः बाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनितश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घंवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेवृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहश्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचिनंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्य अन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैप्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाद्वेसुता
पुत्रमनंदितालाभबृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनं सत्यवादीगुरुभक्तनृपात्मामान्यभवेत्सदा द्विजदेवसुभक्तिश्चविचित्रोवाक्यं ब्रवीत् चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुप्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहुसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकार्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित बृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाद्वसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वेंपत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिमुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुखं
महत् प्राप्ते चंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलश्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै प्रथम मध्यम भाग्यहो पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्रसे गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहै तथा एक जीवकी चिंता से क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हों पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जो बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाग्रधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्श्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचरणायुतोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः वृणचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुन्य प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालबृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथो कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बतसरोवृद्धि बाल क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्धके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनश्यन्ति द्रव्यलाभ व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशचिन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्रायचितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टताशनं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुण्येन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाब्दमायात शरविंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणाद्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालञ्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण चितचिंताव्ययपुण्यं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलाण्येवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णात्रिकारेण महादानेनशांतये चत्वारिंशावधितांत अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति विशेषेण भूमिसंग्रहनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंमवें स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फल नहीं करसक्ते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगल केतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्यकी बृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय नबनेगा मध्यम लाभहो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रताप से आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशा में कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसी की बुराई निन्दा न करे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्मभोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष बुद्धि हो ॥

किसी की बुराई निन्दा न कर शरीर में बृणको चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेतुके पूर्व जन्ममें [illegible] उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान् होगा घोड़े रथ
दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म
भोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रक्त्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः क्लेशरोगेणपीड्यंते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहूकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदहोपिद्रश्यंते भूतछायाश्च विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालबृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालबृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति विवाहोमगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टादशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वं भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्वमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वरतप्तेनपीड्यंते वृहःवरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वं यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम् शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवन्हिगतेकाव्य तथाचपचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वेषांशुभचितकः दानमन्त्रसुपुण्येन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्दकेतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुतकष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसाख्याधिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवर्धितत: द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददीर्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशागत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम् पञ्चपंचाद्धमारभ्य शून्यषष्ठादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृन्यस्श्माचक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे प्रतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रसषष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहताहै गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना

कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य कर्ता धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता। अब धन के व्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं नूतनोजन्ममरणयते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं वृणाचिन्हञ्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम् उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षांत्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सुयत्नंशांतिसर्वदा वेदाद्ध पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विंवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं ग्रहमंगलगोयन्ति नवनारिश्चमोदिता प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सुतापुत्रसमायुक्तो लाभकृत्यावशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपिस्याद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्यं सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र चिंतागतोगुप्तं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यसिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यश्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणंकष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्टविनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारो भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्चविकल्पोपि तातकष्टस्मृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मनेच्छापूर्णंतोषित। द्विकन्यानेत्रपुत्रश्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्धयमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्ठांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदरुण रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्ते। वह्निसप्ताद्धजन्ति श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीवको मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीरमें फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चितवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसेकरे किसीकाबुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेतुक पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हयातो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

न चाहे सब प्रशंसाकर कामदेवको उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लग्नेशको दान श्रेष्ठहै ॥ इसके पूर्व जन्ममें
मया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चात्में कुछ साधुब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका
पुण्य क्षयहो पापात्मक हवनसे ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवं सर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान् चतुरोधीमान् सत्यासत्यस्य चिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्ठईशज्ञातासुपुण्यवान् वृथावार्तानकथ्यं गूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनदृश्यंते गुप्तशत्रुभयंप्राप्यप्रतिष्ठाभंगचिंतयेत् जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमनमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशा श्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व जायतेकुल दुखसौख्यसमोदृश्यविशेषोऽव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरं आयुपूर्णपुनर्भवत सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घटाकर्ण तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्तंतथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिः सद्यशांतिभवेत्तेनआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स तथाचसरचंद्रके विद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्धाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्माज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िता बुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमे श्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं विंशैकोपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनागम द्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदान त्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियस्त्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितो रसविंशेचत्रिंशाब्दे चित्तचिंतावर्जीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोपत्यत्त्वंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्बयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्टित पददीर्घमुपस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरितः मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुण्येनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेदत्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेण किंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपारकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवा ग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाद्धमारभ्यवायुकोषोतिदारुणा तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुण्यकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिता फिक्रहो लाभ मध्यम रहे काम होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेशपावे सूर्य मंगल और राहुका दानमंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यगृहंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमप्राप्य बुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुदृष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातःसर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णभवेनरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानश्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राब्दकेकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीति रूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनरादेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राब्दमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल, कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राब्दकेकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभ'वन सुदुग्धंमहिषीगावदापदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तात्रत्कालान्तरोन्तसमुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखान्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्श :तथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशानकेनथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेत्रहुत्तरे विशेषोच्चिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चावकलिपता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजातेअकस्माद्धयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुण सर्वबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यञ्चप्राप्यतेनरनारीसुकीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगरेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतस्त विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टात्रधिंचास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का स्थान छोड़कर द्वितिय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीत रहे अपने दुखसुखका सब वृत्तान्त उससे कहदिया करे और विशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीति रक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त न दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभ खुशी देख और नाकिस दशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेष दीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंता सी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमींदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

जमींदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशाय नमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहा भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीते सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम् पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचयुक्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे द्वादशेवर्षे मध्यतद्वदाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः/मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविषेशेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम् पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात् भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहाविदाशंत प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदिता दीर्घचिंताविनश्यंति जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माद्धकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतःपत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेण अन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वच रूपयौवनविव्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यबृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषट्यथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र मनंदिता षष्टांषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्द में प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । इसुके पूर्व जन्ममें यजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घं ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचिनंउद्यमंणधनास्य कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोणरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते लाभंअर्द्धकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान मंत्रसुपुण्येनमनेच्छःसर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसोउद्यमोपुंसश्चंतेसौख्य विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णंगृहेपूज्यं उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेद्वादौपुनश्चदारुणोरुज मातृक्लेशमहदुखंजीवआशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षंसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षंगृहद्रव्यंसमागम चञ्चलांचलंचा ।शिशुक्रीड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच कुलस्त्रियः वन्हिमेकाद्दमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम् कामेचेष्टाविशेषेण सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाद्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तंअजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षंव्ययोमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणा बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवह्निसुवर्षाणिपञ्च त्रिंशांतरोतथा! व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यनेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मणसर्वसौख्यविनश्यति कर्माश्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाद्वमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकान्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तश्चिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वच्छमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाद्वमध्यमा बहलाभप्रभावेणचित्तोह्यानंदमीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंबहत्वोपदप्राप्नुयात ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्तवृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रम सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घंबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरं ताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत विष्णुवमंपठेन्नियमहाकष्टनिवारणं आयुर्वृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंमिता आषाढशुक्लसप्तम्यांनिधनंजायतेन्नरः ॥ भाषा ॥

इस कुन्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करवे फिर लाभ होता रहैं चिंता फिक्र बहुत मान धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े २ काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

ये जाव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा
रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने
अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचिंचचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखोलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वंमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपुजिता कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्बमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्बमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंतेआशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्बमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागमः फलमुलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपोतुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजावतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुपक्षश्चक्लेशित कुलबंधुहृदवैरप्रत्यत्तनकाशता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेन

शांतिप्रतिसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य
धनसंतानप्रतिष्ठित रसविशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता
द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवह्नितथांतरे गुप्तकष्टनपाड्यंतेअजीर्णं
वातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्द्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता
व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वंधनपुत्रादिप्राप्यते
षष्ठत्रिंशाद्भमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच्च
युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपश्चावधिलभेत पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या
भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपश्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदवाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं
औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगवाणाद्भमारभ्यजायासौख्यंविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूरितंलोकेचित्त
आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताद्भमायुष्यंनिधनंजायते पुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ।।

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घत्रस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलमाप्नुयात मान कीर्तिंवृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलश्चापिसुखं सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेच्चिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्ना निवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यंधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्तंतसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णता वय व्ययलाभविशेषे।सुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले भ्रातभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतौ सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनंमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहोद महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदशन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानद्रश्यते निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदंहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टो।नानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविं।गतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतःपुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भंचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घंमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानंयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाब्दमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिवलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातभूमिमंद्रव्य
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्ग्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यनेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाब्दमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तश्चमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसर्वमानवृद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतःपरिसुखं
सर्वैसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्ठांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रव्य ।क्षिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्ठगतोवत्सबाणषष्ठांतरोतथा ग्रहसाख्यविशेषेणसर्वआज्ञा
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताब्दमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणोशुक्लषष्ठ्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ।। भाषा ।।

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ठ मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे है शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैऋत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्क्रियायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः वस्तिगुह्यघ्निनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेऽब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलवरम पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूमप्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेऽब्देमुखंसर्वयोविन्मासेचसप्तमेप्राप्तेतू अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलञ्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्धतिचदिनेदिने पितुदेहभवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित तेनसौख्यसमृद्धिस्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते वर्षंतथाचषोडशाब्दके कष्टञ्चजायते देहोदाघदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्य विशेषतः मोदते भूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखचैवहर्षयंतिदिनेदिने व्रक्षाच्चपतनंज्ञेयं अथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यतेभयदारुणां नग द्रमितेवर्षेंव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र प्रमदासेवनंकरेत् स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जोवोमहाप्रीतीआशक्तञ्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी वनशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभञ्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलभश्चध्रुवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्च नूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवाममभागेवृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्ररामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेचापिभूतले पुनर्पुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्णां दानभृताचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्समवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययद्वादीर्घोमपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलान्येवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल को पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीवको चिंता रहे और बड़े २ लाभ के उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावे कभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत होगया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात महच्छोत्वञ्चजायते सहासीदृढ़संकल्पश्चन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगात्रिनिर्मुख चौरभीति भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मंगलग्रहमध्यञ्चनृत्यगीतादिकंभवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च मोदिता अकीर्तिभयमाहृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमंगलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यबृद्धिसुखं देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् शांतो मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत् सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापाकूप तड़ागेशुआरामेमोदमंभव प्रथमेद्वितियेऽब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेऽब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे सप्तमेऽब्देषुमंत्रंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसंप्राप्तं पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं नवमेऽब्देजलोद्भोता दशमकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचितातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं प्रजायन्त मातृचितापराभूत्वा किंकरोमिकुतःसुखम् चतुपञ्चदशेऽब्देषु कांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनकाभर्णंप्राप्यतनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधीप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम् नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपितवेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्देकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल गानञ्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः त्रिप्रान्तोऽग्रतेविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्धित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्धसंजाते नगरामवाधितत यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणांरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागात्रिंशमितेवर्षेंचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत गृहहाटधनंसर्वंविलगच्छप्रजायते शशिवेदगतेवर्षैनानाक्लेशसमुद्भवः परन्तुधनलाभञ्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युंजयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यते मंत्रयंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रवाणमितेवर्षें तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्थाधनीनरः शरपञ्चमितेवर्षें पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम् सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनन्दमंगलंलोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेंअथवापद्मसप्तति सर्वावस्थाविजानियात भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्यकी बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वालाहो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्यमार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों कीं संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जापसे विशेष सुखकी वृद्धि हो पुत्रकी इच्छा पूर्णहो एक अल्पसे अधिक भयहो पाप ग्रहोंका पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा तिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्रसहित संकल्पकरे श्रेष्टब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान्न और वस्त्रसहित संकल्पकर अष्टब्राह्मणों को द गोपाल मंत्रको जाप कराय और
सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मआनन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यःकामिनिप्रिय कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेकचित भोगमैश्वर्ययुक्तश्च कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिग्रहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्टुरोकटुभाषिणः साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोगप्रपीड्यं तेनचिरंविद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदातव्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापदुदुखलभेदीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रौप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसंचिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च गंधंपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनंपञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदशमितेवर्षें पितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंचवर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुकिंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भोंतसमायुक्तहीनजातिश्च साभवेत् त्रिंशेऽब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथा।चपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्तत्रिंशेवसुमार्गेपिधनऽव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेऽब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेऽब्दे धर्ममार्गेधनऽव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथा।विप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यञ्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनऽव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनऽव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बलत्वविशेषता। अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े२ आनंद भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्ज़त प्रतिष्टा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंशकी वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटम्ब का पालन करे श्रेष्ट संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राणसे अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें जीवका भयहो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्तहो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत होजाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हे पुत्र पहिले जनम में ये जीव बडा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्थातक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अंत को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यंत पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

दान सन्मानादिक से खूब संतुष्ट कर तो पूर्व जन्म के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागोसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षेसुखंगता सवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वे हेमरत्नानिभूषित सकामश्च श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबुद्धिश्रेष्ठ सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभृत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुभक्तभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्ठमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय व्रणव्याधीप्रपीड्यंते विस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तंदेव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्रतिष्ठोपिबुद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानवृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचिंतोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वादाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविव्हलम् बाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मेण

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणापद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोऽव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यसमागतः शरीरोपीड़िंतगुप्त आजीर्णनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत सर्ववाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्वगेकाव्यतथाचनभवे दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्च जायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवनं सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौख्यंप्राप्नुर्यंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनी तस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिव्रपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परंतु पूर्व पाप के कारण जीवको चिंता विशेष बनी रहे तिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल बंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परंतु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊको अत्यंत कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पापसे इस जन्ममें चिंता अधिक रहै घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहै लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न होतो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पापकी शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सब सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वं प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वैं हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञोचधनाढ्यश्चसत्य
वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयाकिंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
बुद्धिमान्पंडितःशूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वं
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागमम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मचक्कोशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा
जय वाहनादिसुखकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददेहदीर्घं पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घं
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त
चिंताविनश्यंतिसर्वंकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रञ्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षें द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेंच व्रणज्वरप्रपीडिता
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्यथाभूयसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षैंपञ्चचंद्राद्बकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वित: द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतु:चन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्टविंशाद्बकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुवि: सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टावेंशति त्रिंशचत्वारिंत्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैव न एतद्वर्षान्तरंशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्रविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्ततिसौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम् चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भव: वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरक: लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मणाभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचाशीतिमितेस्मायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत माघशुक्लनवम्यांचभृगुरुवारेणसंयुत: रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णमायु:भवेत्तत ।। भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्याबुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्री वंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुए तिसी से ये जीव महा पाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधी से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ।।

जिमावे सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और
ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेण आदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचितातुरोभव द्रव्यलाभविजानीयातबालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेंव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेंविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत चक्षुरोगविजानीयात किंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णंपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनर्कष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षें ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेंप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात् अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाञ्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्त्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेंवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय भर्तस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम धर्ममार्गेंमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेंच याचमानापिनृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाङ्कके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहो मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घंगुप्तचिंतायदाकदा गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेतत: महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंमप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येश आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाङ्कसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिगने मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकश: अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसम्मा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्ठा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुख: हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनंद हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे । हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यंत युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तसें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुरु दान करे और सदा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवितव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागमोनित्यं मध्यसौख्योह्यमाप्नुयात अहन्तारोहदेगुप्तं लोभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिंवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वं दीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुण द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमन सत्यवक्ता सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफलप्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासांश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेंमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पापकर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिंपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा वदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महादानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा वत्स मन्दसौख्यं चक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घ चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अमुतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणात्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहै कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युजय का जाप वेद की विधी से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यों में चित लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वितानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेद पाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वाभाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता कामपीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाढ्यसमन्वित दुष्टकर्मेणानपीड्य तेपूर्वपापेचदुखिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवादीचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा पितुद्रव्यविनाशीचसुयत्नेनविवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणंमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामवाधाप्रपीडत मित्राणांचञ्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्रीप्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नातिसुन्दरं मोदबृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्टयुग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ओंऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिंशाद्धकेतथा तावत्कालगतेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभं गुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविप्रोत्तमे कार्यंजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंकापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकालसुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोअजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयाव रामपंचाब्दमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षैसुखंज्ञात्वादीर्घ कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपञ्च अन्येचस्वल्पजीवनं रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणांशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचउष्णतोये नित्यश षष्टमासाब्दयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितदांते चमहोत्सवं षष्टोषष्टाब्दमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्ववाहनं दीर्घदानप्रदातव्या रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेत्तनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रेसुकुले जन्मनात्रकार्यंविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतये शुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं मर्हसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वहबड़ा भागवाला हो दासदासी और सवारियों के सुखपावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुखपावे क्यों की इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बनगया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अंत में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय येजीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुवा था बहुतसा पुण्यदान किया परंतु एक समय बहुत सी मदराका पानकर उन्मत्तहो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वशहो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोधकर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदसें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यानको बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादिका नाशकरे क्लेश का अधिकारी हो हेशुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुखका नाशहो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे आनन्दंवर्द्धतेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घंतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात सर्वसौख्यागमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः क्वचित भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयातनारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती आशक्तश्चविशेषता कामरंगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मथावा क्वयश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम् चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहिं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावार्द्धतंदुवख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधीविनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्धमारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोक्रवे क्रमेणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीचहृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व पापश्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यश्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्ठत व्योमवेदाविधिंवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टभवैद्योपायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात मासेवर्षेंसुखंजातंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्ममन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घंकार्यंवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देंहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासीसमायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंमवें प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचिनं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यंतिभजनानन्दमर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेंयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णंनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहतेहैं हेपुत्र इस योगसें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुखपावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता २ रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता २ रहजाय पुत्रके सुखमें विघ्न हो और कभी २ विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते २ उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभवश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हेशुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पाँच तोले स्वर्णकी गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयञ्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यञ्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतौपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चितातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यञ्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभाच्चास्यवाणिज्यतप्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तेशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्धोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीघबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्राचंनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसयुक्तआशक्तश्चापिविन्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछाया प्रपीड्यन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतये रामाब्देपञ्चवर्षाणिवृणपीड़ाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षेराजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्चयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधिंतथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिश्च वंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायते द्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवर्षिकाब्य आयुपूर्णंभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहै सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मंत्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े २ खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहै प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जनम में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मंत्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वंग्रहाप्रोक्ता अग्रेफलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिकयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वे मातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यवहारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थेमोदतेभुवि कवित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंकिंकरे
धूर्तैंनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहुपूजाचकारयेत घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रेचविंशाद्वेवेद नेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
बृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यं धनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वेवन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्ठमे
वर्षेंवृणरोगप्रजायतें सप्तमेज्वरपीड़ाच अंकविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमेकादशेद्वेषुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसप्राप्यबाणमेकं तथैवच गुप्तचिताहृदजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वेचविशूचिरोगसंभवम्

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगमंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षें विंशवर्षंतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तश्चक्रोडनम् शशिविंशमितेवर्षेंवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्मवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीड्यन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणे षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाङ्कके आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेंवाणरामाङ्ककेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेअरणतले कदाचित्समयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षट्त्रिंशाङ्कसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानञ्चवर्द्धते पूर्वयात्राभवेत्पश्चात धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशातपुण्येननानासौख्यमगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाङ्ककेतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेंसून्यसप्ताङ्कप्राप्तने मासेवर्षेंमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसन्तानयानञ्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेंसर्वकार्यविनिश्चितं सर्वलक्षणसंपन्नबातपीड़ विशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ भाषा ॥ इस अङ्कको कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीनहो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्तहो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीनमन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुखभोगे हेशुक्र येजीव पूर्व जनम में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपती राजाकी तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परंतु कामवश होकर फिर वैश्या गामी होगया और जप दानादिक क्रिया सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेऽव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यःकामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातंसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धोनसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातंप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपालनत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकेवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षंचपंचमे षष्ठंमसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षंचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत गुप्तशत्रुविरोधश्च प्रत्यक्षंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभश्चकस्माद्धनमागम चिन्तोह्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तश्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिशमेकमिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिने नवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्टवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्य गायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाण्येव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वं पौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबज्रदानंचशांतये नंद षष्टमितिमायुपूर्वअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्रके ग्रह कुछ विशेष बलवान नहीं हैं परन्तु तथापि व्रद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी २ घरमें पीड़ा करलावे भ्राताका सुखहो या प्रेमी मित्रहो खर्च विशेष हो कृपणता नहो सके एक जीवकी चिंता बनीरहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्याबुद्धि विशेष बढ़े पुत्रोंका सुखमिले हीन ग्रहके योगसे काम अधूरा होता २ रहजाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्नहो अति परिश्रम करने परभी मनोर्थ पूर्ण नहो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवाकरे विशेष कार्य का अधिकारीहो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभहो कभी विशेषहो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबूसे बाहरहो प्राणोंका भय जानपड़े अधिक दानमंत्र उपाय करनेसे अवस्था दीर्घहो विशेषसुखभोगे पहले जन्ममें ये जीव स्वर्णकारथा स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छलकरे अन्यायसे अधिक द्रव्य लिया तिससे पापका भागी इस जन्ममें पीड़ित हुवा अति चितातुर रहे इस पापकी शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

…पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पापको शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपापग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीर्मुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाव्यग्रबुद्धिनसुस्थिरंभव उद्योगकुरुतेदीर्घंलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम सत्यवक्तासुजीवोयं असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचिंत्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुहलीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्वौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचारणम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोर्पविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्यानंचसंमग्न यौवनंरूपचितनम श्रेष्टकर्मरतोचापिपरकार्यञ्चसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसिद्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मंदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेंसुसंजातं भाग्योदयविशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षेंच दन्तपीड्यज्वरादिकं बृणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षें उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंताचदारुणम् अनुष्ठानमहादानं महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षें षोडषाद्वचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम् द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि नूतनंयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्रगताव्य त्रिंशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नत प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षावधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणाश्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वग्रहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्यं भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोद्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलंसंप्राप्यचित्तंआशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिंवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वेंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगतिं कर्मभेदेनभोप्राज्ञसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्टा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीवकी चिंता मिटे परन्तुइस जीवकी बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुंचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बातपर क्रोध आजावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्बका पालन करे पराया काम मनसे करे ईश्वर की भक्ति में मनलगावे परन्तु स्थिर न रहे हटजाया करे कामकी उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वें दुष्टकर्मेणविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोह्लासनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंअकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्टग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षैसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवाग्विचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः धर्मवार्तासदाधृत्तिसज्ञातिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात भृगुवाक्यनसंशय पंडितंसंगतिप्राप्यशीलवृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ द्वेषष्टमेवर्षें अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभगनी समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्य विंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गैंधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपु सः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगीःबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ कलाभिज्ञोनृपश्चयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरं निर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससंप्रीतिः पितृभक्तःसुतर्पित तुरगात्मनं ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्च आनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगमोनित्यभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपचारोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्टहो बड़े२ कारबार रोजगारकरे परन्तु न्यूनफल कारक ग्रहोंका दान मन्त्र उपाय करनेसे पुत्रोंका सुख और विशेष धनका लाभहो किसी समय कुटम्बसे विरोधहो धन खर्चमें आये शत्रु नुकसान पहुंचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर विशेषहो बड़े२ आदमी इज्जतकरें प्रतिष्टापावे ईश्वरका चिंतवनकरे अनर्थकी बातपर ध्यानकरे श्रेष्टसंमतिदे बुरेकामसे बचे श्रेष्ट मित्र में चित्तरहै खरचीला हो पोचबात न कहै चित्तमें गुप्तचिंता रहै इज्जतका विशेष ख्यालहो खर्च विशेषरहै एक समय प्राणों का भयहो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहोंके प्रभावसे प्राणोंकी रक्षाहो सारीअवस्था इज्जतके साथ आनंदमें बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मोंसे सुखपावे हेतुक पूर्व जन्म में येजीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आगया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसीसे विशेष पापका भागी हुवा सो इसकी शांतिके निमित्त काशीके थालमें चावल भरकर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजना [illegible] तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाशयंति श्वकुलंदीपकंतथा बहुकीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चञ्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गोविप्रंरक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णंसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिकप्रकोपीचकामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चञ्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धनयुतःपुंसः मीननादपरंप्रिय वृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत् क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसशयः शूरोथवाग्रामे पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायते क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमद्वितीयेवर्षें ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगश्चक्लेशिता पितुर्चितापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम् ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन सुखावहम् चतुर्थेंपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्युभीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेंपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्द्रव्यभवेद्बृद्धिदिनेदिने शुभकार्य धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यश्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठाग्रसंध्यासवंभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

फलित

नृ०स०

२७०

शुभकार्यंव्ययोचापि यथा लाभेतथ व्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविधानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यत्तंनेवकथ्यत मानसीविविधा चिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षंमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापञ्चपीड़िता दीर्घभार्गाचजोवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञाला रूपयौवनचिंतनम् षष्ठविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षसंकप्रमाणञ्च सर्वकष्ट निवारयेत तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखमसर्वं परिलोकं फलप्रदा खनवाद्रमितेवर्षं आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्रीके ग्रहोंका बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनंद भोगेगा और कुलमें दीपकके समान चांदनाकरे और इज्जत प्रतिष्टा पावे सबके भलेमें रहे एक जीवमें चित्त विशेष फंसारहे नई२ बातोंका चिंतवनकरेहै हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतुका पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थानके ईशकी पूजन दान वंशकी वृद्धिको अत्यन्त श्रेष्टहै गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होनेसे सब सुखपाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्टपावे प्राणोंका विशेष भयहो परन्तु पुण्य कर्मोंके प्रभावसे पूर्ण आयुहो कहीं अकस्मात धनकी प्राप्तीहो भूमी लाभहो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भलाचाहे मनकी विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हेशुक्र येजीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवानथा बद्रीनारायण के दर्शन को जाताथा सोते समय मार्गमें धनवस्त्र आदि चोर हरकर लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छा भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेद दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सप्रसिद्धिसर्वोनरः

श्रादि चोर हरकर
लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्र आदि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण
पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छ भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्यं स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविषेशेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात
भयभागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोक उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीघमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यंधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोद्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंमित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्यंयदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशेषतः जन्मतेःपञ्चमेवर्षेबालकीड़ाक्रमंयथा कष्टबाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयन्नंसौख्यसंभव मासेवर्षें
सुखंजातमातृकष्टांवशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारणा मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यंसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनश्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वंसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुत्रापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनकापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापं आनंदंजायतेध्रुवं सतश्हिमितेवर्षैस्त्रिशेशोजामनायते त्रिवाहोमंगलं कार्यं आनन्दञ्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् धंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वं जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकान्यनानासौख्यसमागम चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्बमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव. देहंप्राप्य नदीतीरे स्वदेशेकुशलंविविधम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चिंत्तवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक पूजनकर ब्राह्मणोंको दे और अन्नवस्त्राभूषण दक्षिणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक मानकर ब्राह्मणों के और वस्त्राभूषण वक्षस्यादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान् सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज यावत्खेचरसंतानेसंयुतञ्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका ; यत्स्वगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरोपाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छंतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य वर्षद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनबृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनायोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्बेभयंप्राप्यपितृचिंतावली यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन पीडतम् पितुरंधनलब्धिश्चनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे वर्षेत्तरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचित्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलंचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान् शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाद्भमारभ्यषष्टविंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाङ्गवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यर्थचित्तंनैवोपिसुस्थितः गुह्यपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोऽव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकीर्तिश्चचित्तमोदभपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्टत्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यत्रेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीतादिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्मपत्रमें ऐसे ग्रह पड़ें पुत्रोंके जोड़ोंका ध्यानरहै कन्याभीहो वंशकी वृद्धिहो धनवान् लक्ष्मीवान् परोपकारी श्रेष्टहो लोग निंदाकरें तबभी बुरानमाने बड़ा प्रतिष्ठित नामीहो कईवर्ष विशेष धनकी प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्यकी न्यूनता करने वाले आवें पुत्रोंकी चितारहै संतान गोपालका मन्त्र वंशकी वृद्धिको श्रेष्टहै लाभस्थानके ईशकी पूजा दान जापसे विशेष लाभहो और पृथ्वी पर बड़े२ कौतुक देखे चिंता औरभीहो अपने समझे वअपने कहे तथा समतिके नहों घरमें कभी पीड़ाहो जायाकरे एक अल्पभारीआवे प्राणोंका भय रहै आयु पूर्णहो कैसाही भारी खर्चहो कार्यहो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्णहोवे हे शुक्रपूर्व जन्ममें येजीव ब्रह्मवंशमें उत्पन्नहुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुरथा राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्तहो गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंता विशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य नूतनमागमः दीर्घकृत्योगृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य आमाविचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यमंत्रजापसुभक्तित तेनश्चयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति वर्द्धनं चंद्रशोकस्थिताचिंतंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्य अकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्य। नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्प विषेशेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्यादीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिच्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थंधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजातो भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषञ्चपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारञ्चयशंभूरिमहोतले पितुश्चमरणंज्ञेयविपाकेवीर्यं नाशनं दर्शनेअरिर्निदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीर्यसि तथापिसौख्य संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तयेवर्षेंव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रहं नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविन्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्वेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्ररामगतेवर्षेतथाचनभवेदके त्रिदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिठ्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनष्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्धवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दमङ्गलोनित्य विवाहोदिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेयस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिंता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण प्रति दान हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचितान्वितोभवेत् चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचितनंकृत नारीचिताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोत्रुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमञ्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचित्यकामाशक्तोपि गुप्तता दानमंत्रजपंपुरायंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घं पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्भतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणञ्चपलंज्ञेयंकलत्रंकूरकर्मिणम् चतुष्पदात्तथारात्रौ विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आमिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभत्र नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्ठुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेब्देच पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया ह्यताद्यान्त्रसमुद्भवः तृतीयेब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगचक्रीड़िता सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच बालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नञ्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तञ्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथात्रिंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रञ्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा मासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथा!भूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके त्रिदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनष्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षातं नृपात्माभवद्भवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्ठाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेयस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रु वम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत् चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र वदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशक्तोपि गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंदीर्घं पुत्रकांताप्रतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्प्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपु सकुशलः सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणम् चतुष्पदात्तथारात्रौ विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आमिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभत्र नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेब्देच पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्दाताद्यान्तसमुद्भवः तृतीयेब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगंचक्रीड़िता सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच बालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राङ्कतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेवधनव्ययः षष्ठचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्ठहीनदशाभोगंश्चकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसी द्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायनम्पुनःदीर्घधनंलब्ध्वाकार्यचिंतावलीयसीहीनकार्यभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वितः आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधिं काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिंकाव्यचिंतः चापिदीर्घता. चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रंचमोदिता षष्टपंचगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गौदानं श्रद्धायुक्तोआपदु द्धारणंजपेत अल्पायुनश्यतेवत्सदानमंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायू भाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्रमें ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वालाहो मध्यम और श्रेष्ट दोनों दशा भोगे किसी समय कहींसे धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहोंके प्रभावसे चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ को सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक काम हीन बनजावे सो पीछे मनमें बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्रीकी चिताका ध्यान तथा जीवकी लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धनसंतान का सुख विशेष भोगे कुलकी रक्षाको संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ट बनजाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े२ दुख सुख भोगे परन्तु चित्तको दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी२ भ्रम सा हो जाया करे नई२ वार्ता भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बस्त्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश लाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गऊदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना [illegible] करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बच्छदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश लाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गऊदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणसुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत परनिंदाविरोधितंसुखाभिलाषितंसदा संतोष्यबृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचिन चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचितनं पश्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्त्वाकदाचन लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजातिमानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभंचचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपिड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्णपुण्येन नक्लिश्यंतिविशेषत्त कार्याणिमकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपंचमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भव अन्यचदीर्घरोगाणि दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा व्रणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ासमासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिप्रहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्चमध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणब्रत्वंजायतेध्रुवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाद्धमारभ्यत्रिंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलंचगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवन्हिःगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाऽव्यय पुनःदीर्घंधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेंसुखंगत्वांकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो दयमहत्फलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाब्दमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाब्दमारभ्यवन्हिषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तशरोकाऽव्ययप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ट रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रोंमें लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहै धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोषी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्तमें समुद्र कैसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घरमें पितृ पीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादानं मन्त्र करनेसे वंशको बृद्धिहो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईशके पूजन से विशेष लाभहो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्णहो हीन दशामें हानिभी हो परन्तु अन्तमें सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदीमें नाव चलाने वाला प्रधान था नवकाके कृत्य से बहुत धन प्राप्तकिया एकसमय एकसेठ श्री अयोध्याजी की यात्राको आया सो बहुत धन नवकामें भूलकर चलागया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्य कार्य में लगने वाला धन अपने घर में धरा तिससे पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवोंमें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धंसुखीनरः धनाध्यक्ष इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यबहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट समायातसर्ववोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये आयुपूर्णंनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवन्हिवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानञ्च शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोबालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मैणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसिविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकःतिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्धगेकाब्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठंचकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काब्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययंचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिंचवृहद्भाग्योभुवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपंचावधिंक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगावो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदंचगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षं सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यक ँतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोक्त्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्धमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यस्त्रिवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्धमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणाकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं विलम्बसे फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्टा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहें श्रेष्टकुल विद्यावान अवल तेज दूसरे की बातको तोले सत्या सत्यको पिछाने एक जीवकी आशा लगी रहा करे और जीवोंके खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहोंके दान मन्त्र जाप करनेसे मनोकामना पूर्णहो भाग्य और वंशकी वृद्धिहो येजीव तरह२ के दुख सुख गायत्री का जाप्य करानेसे घरकी पितृपीड़ा शांतिहो कितनेही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरूष हो हीन दशामें विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ट दशामें अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्याराहै एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरूषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय वन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत निजकृत्यसुदक्षश्चबहु सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टितःकुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृप मीसुपुत्रवान् कृपालुश्चशुभाक्रांतिप्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरंव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउदररोगप्रजायते पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे नसशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडशाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायागर्भयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजायते निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षेवामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियवस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा वधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्ठिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वांजातितोषयेत प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतमंहाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं भवेत्सौख्यंअग्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नमोअकाल पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणौवजपित्वा सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वालाहो विद्यासे बुद्धि विशेषहो कईबार धन इकट्ठा करे फिर खर्चहो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसामें रहे है उपाय दान मंत्रसे मनोकामना पूर्ण होगी और कहींसे धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभहो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिर मानता रहै पुण्य कर्मसे सब सुख मिले भूमि लाभहो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भलेमें रहै कभी किसीका आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें यह जीव शूद्र वर्ण था परंतु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुतसा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वसहो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसीसे पाप का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य
कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन
भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि
संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीत्तिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट
भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणा अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण
विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अंतलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति
कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता
सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम्
उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त
पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलंप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं
धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति
दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मोन्यधनंसर्वेंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे
चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेबृणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो
जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे
कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तञ्चाष्टदशेवर्षैनवनारीप्रियत्वताम सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्धित्रिंशेवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्धित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टंविजानीयात पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहेपिमंगलं कार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोत्राव्ययलाभञ्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोति अन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाद्धमारभ्य अकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापि अयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणः खवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताद्धमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल यहहै कि दो दफे रोजगार की वृद्धिहो और फिर मध्यम होजावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभालकर रोजगार के कामकरे परन्तु नाकिस दशामें चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनंदमें बीचे कभी किसीका आस्तीक नहो अपने कृत्यसे निर्वाहकरे एक समय ऐसा भाग्य उदयहो कि सर्व प्रकार के आनंद भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करनेसे सब प्रकारके सुख प्राप्तहों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपायसे सब शांत हो आयु बड़ीहो पुत्र तथा गृह सुखकी प्राप्तिके निमित्त संतान गोपालका जाप्य कराना श्रेष्ठहै वंशकी वृद्धिहो पुत्र पौत्रोंके सुख देखे एक जीवमें विशेष प्रीतिहो हीनदशामें विशेष चिंता और क्लेशहो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव कुरुक्षेत्र में जन्मले नगर का प्रधान अतिधनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जानकर देदेतेथे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी [illegible] परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर
वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके । विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्माननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणोरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रव्यशुभकार्येंधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोबार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणोयुक्तःसुशीलो क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशांतश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चक्रियावृत्तेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्मकीर्तिगुणांयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागत्रर्षक्रमंतथा बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाङ्कके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषोमित्रतांव्रजेत क्रीडितश्चविशेष विद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशा आदौयत्नमहत्फलं सर्वक्लेशश्चिनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राङ्ककंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राङ्कप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम नगविंशगतेवत्सत्रिंशव क्रमंतथा चित्तचिंत विशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चिन्तंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यंपूर्वलाभंचमंदता पुनदीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्वलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम अतःपश्चात्महलाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पण्यफलोदयंनत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाङ्कतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्यान्वितोभवत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेंपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपात्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीका फल यह है कि विलब से मनकी कामना पूर्णहो रोजगार लाभ बढ़े युवा वस्थामें विशेष भाग्य उदय होगा बड़े२ रोजगार करे किसीसे मिलकर धनका विशेष लाभहो प्रतिष्टा बढ़े पश्चातमें मनकी अभिलाषा पूर्णहो प्रथम बहुत जीवको दुखमाने फिर संतोष होजावे यह जीव विशेष छलछिद्री नहो और छलको पसंद नकरे नेक नियत के रोजगारसे पालन करने की अभिलाषाकरे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्तिहो एक अल्पसे बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहै फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े२ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीतिकरे किसीका बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चितवन करे कभी२ दर्दसा हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जातिथा अपने षटकर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथको मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक होगया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिञ्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराड्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यञ्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
मिष्टानलवणंभोज्यंपक्कमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत
शुभम् धर्मेणधनवृद्धिञ्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्टरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वैं परकृत्यञ्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते वृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानञ्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यञ्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंचकारयेत् वृहत्वोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूमप्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहूक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेंन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदवृत्तिस्याञ्चपलत्वंमनोहर
द्वादशाद्धोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहूद्रव्यव्ययोभवेत बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानञ्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रञ्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानञ्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिण कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षैस्त्रिंशवर्षा वर्धिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यञ्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्टाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णांसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावर्धितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् शून्यषष्ठमितिमायुपुण्य कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीमें ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टावाला भाग्यवानहो सब तारीफ करें सलूक करनेवाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्यके काम करे सूके कोदे ईश्वरका भक्त सत्यभाषण करने वाला कईबार बहुत धन प्राप्त करे रोगोंसे बचे सत्यासत्यको पहिचाने शरीरमें फोड़ेका चिन्हहो कामदेवकी उन्मत्ततामें न्यूनबुद्धि होजाया करे जीवकी चिंताको गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्नकिये अधिक क्लेश पावे धनका संदेह जीवकी चिंता आदिहो गुप्तशत्रु विशेष हानि पहुंचावे शरीरमें पीड़ारहै काम होता२ रुकजाय तथाअधूरा होजाया करे इस जीव को बड़े२ भारी खर्च के कामआवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़े२ दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्टितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतोलक चातुर्थबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधञ्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयेद्वंशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक बिनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुमहाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभुयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वाजितंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेत्रवर्षेसुखंगत तात्तलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राद्धकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य
व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्धमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदोस्थत अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संततकष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामभितेवर्षेत्राणत्रिंशाद्धकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुःखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेघृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्ठत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाद्धके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्ठया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाविधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताद्धपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहूलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यतः पञ्चसप्ताद्धिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैर्वाविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्मुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा नहो खर्च विशेष रहै रोजगार करे बड़ी हिम्मत वालाहो दूसरेकी बातको तोले श्रेष्ट आमदनीमें कुटंबका पालनकरे कैसीही धनकी न्यूनताहो परन्तु खर्चका काम कभी नरुके इज्जत से काम हो जाय चित्तमें भयसा रहा करे परन्तु भाई बंधु अपनी सम्मतिके नहों युवावस्थामें कई बार धनकी चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंशकी वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहै घरकी पीड़ाका यत्न करे एकबार कहींसे धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मंत्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्णहो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव क्षत्रि कुलमें नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेनाका अफसर था युद्ध विद्यामें अति चतुर था एक समय संग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसो निमित्त कोटीमाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंश्रनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृवाधायांमासेम्मासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातञ्चगतोद्रव्यंवृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणश्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंवृहत्वोपिसर्वैंपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टबाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुर्योगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यबृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेद्वेरुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देबृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागञ्चनंदके बालक्रीड़ा
क्रमंवर्षतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलञ्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय
पूर्वंदानंसुयत्नेनअल्पायुर्योगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घंउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययात्रत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वं पुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हिगतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंतिराजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथा त्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दंईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घंतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्यपौत्रजन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्बमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहनादिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपर्वं पापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणा सून्यसप्तमितिमायुभुञ्जीतोपरायमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े२ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनीरहै परन्तु खर्चके कारण धन जमा नहो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसाही भारीकाम हो ईश्वर की कृपासे सब इज्जत प्रतिष्टाके साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जतकरें किसीसे तृष्णा नरक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन नरक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोज़गार करे कईबार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रोंसे मेल रहै मिष्ट बाणी बोले किसीको कठोर वाक्य नकहे बहुत निष्प्रयोजन नबोले पंचम स्थानके ईशकी पूजा और दान मंत्रादिसे पुत्रोंका विशेष सुख मिले जीवकी आशा पूर्णहो अल्पोंके दान मन्त्रादि उपाय करानेसे आयुकी वृद्धि को श्रेष्टहै हे शुक्र पहिले जन्ममें ये ग्वालवंशीथा विशेष धनवान हो कुवां खुदवाताथा तिस भूमिसे परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होनेसे कुछ द्रव्य राजाने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाय सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना [illegible] सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूरग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं भवेत् उद्योगलाभकृत्यश्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशश्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीशंभानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्माद्भयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतंलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णंभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जोतोकर्मबंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्णभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच चोरभीतोपिगुप्तता आदौमौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्रसुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेव्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ामनंदिता सुवर्णरजिताभर्णवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नोयोगश्चश्रूयते नवनारोगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो कामाक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राकपंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षसुखंप्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंदृश्यतेगृहे बुहूविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्वगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीति आशक्तंमित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्यमात्रश्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंत्तिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुंजीतोलोकमानव विद्याबुद्धिविशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षितभार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवआशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षेभाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिंकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनागवेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितोयत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामंवापिकामन्द्रंदासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े२ भाग्यवान ग्रह पड़ेहैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यूनसा कर दिया नहीं तो पृथ्वीपै बड़े२ आनंद भोगता सो अबभी पापग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा आदि करनेसे फल प्राप्त होगा जीवकी चिंता मिटेगी शुद्ध चित्तसे मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ठ फलकी प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी येजीव लाभके उद्योग में रहे परन्तु मरजीके माफिक कार्य विलम्बसे बनेगा और काम की सिद्धी होगी बड़े२ खर्च सिरपै झेले घरमें पीड़ा क्लेश होजाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ हो न सके मित्रमें मन फंसारेहै और शुभकाममें विशेष धनखर्चहो बड़े२ फिक्र और आनंद देखे एकसमय नया जन्महो चित्तमें नई बातसोचे मित्रकी और लाभकी बातोंमें चित्तलगारहै यत्नसे आयुपूर्णहो हेपुत्र पूर्व जन्ममें येजीव शिवमन्द्र का पुजारीथा चर्सभंग बहुत पीता औरोंको पिलाता एकसमय शिवरात्रि को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके धनसे खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके धनसे खूब चर्समंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्धिजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेंशांशुभचिंतक उद्यमी साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच बहवोजना श्रेष्ठआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकाणोंभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते वन्हिसप्तमितेवर्षेंद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेंचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रञ्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेंसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि विशेषेणचञ्चलञ्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेंसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रञ्चसिद्धति त्रयोदशाद्धमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रञ्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसंविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाद्धत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोह्यानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयानाक्यमिदंतत्वंश्रेष्ठकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेण भयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्यमवाप्यते भागबृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्ठितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरागमगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्मपत्रीमें जो ग्रह पड़ेहैं उनका यह फलहै उच्चपदवीपावे किसीके चित्तको दुखनदे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वालाहो कैसाही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्यनमाने अपने लाभका ध्यान बनारहै चित्तमें प्यारे मित्रकी याद बनीरहै उत्तम आजीवकासे पालनकरे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वालाहो बहुतसे मनुष्य इसकी आशामेंरहैं अच्छे२ वस्त्राभूषण घरमें स्थितरहैं एकसमय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सोकुछ नसमझे पुत्रोंके विशेषसुख और लाभके कारण संतान गोपालके मन्त्रका जाप्य करातारहै तो वंशकी वृद्धिहो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजायाकरे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवों और इकतालिसवों वर्षमें कुछपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतहो हेशुक्र पूर्व येजीव ब्राह्मणथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

वषम कुछपीड़ाहो पीप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतिहो हयुक्र पुन यजावे ब्राह्मणोंथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तिकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र
मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वोधन
इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीनर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपालयतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेयत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांअन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेलाभंचित्तआशासुपूजितं बृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चित्हानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थितेमनः आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्यमनंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत् भ्रातृजन्मभवेंचापिमातृकष्टश्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिअंकाभ्यासश्चवर्द्धन बालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाद्धमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापि कामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं
तातमातअनन्दिता नगचंद्राद्धमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यश्च कार्यमात्रोभविश्यति अनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घंव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धते निजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आपदुद्धारणेमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता पद्दीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाप्तये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखलोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाब्दमागम्य शरच्चत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्यभूयसे सुतपौत्रसुखसर्वंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधिंतत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदत्वानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वंआशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेंआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताब्दमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहै कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहै तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहै चित्त में कपट न हो आनन्द में रहै एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहै अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र से विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे वृणव्याधि शरीरेचभूतछायाचविन्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भगनीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राङ्कवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये ग्रहवर्षयुतपुं समंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंमम: किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमडले कस्मिन्काल उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यवाणीचभाषणं भूमि लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेबंशवृद्धि विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्रराममितेऽब्देचबाणराममितेतथा सून्यनंदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयातस्वकुटंबोपिपालन नवीनोवातयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओंऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेंबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मणअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारणः बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाःकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिंलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाद्धकेवर्षेंपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिताचप्राप्तये मासेवर्षेंसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेऽब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयातस्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकृत् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापितहैं तिनका येफल है कि बड़े भागवाला जीवहो कुलदीपकहो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बीहो न्यून कारणसे चिंता विशेष मित्रसे मिलने की इच्छा रहे दो समय धनकी विशेष प्राप्तिहो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थानके ईशके कारण चित्त हटजाया करे दो ग्रह बलवान पड़ेहैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता२ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभके कारण एकादश स्थानके ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्पसे नया जन्महो ३४,४४,५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसीका बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्चझेले हेशुक्र पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यबादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घंआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयातघूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनरंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनश्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभ्रगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकंवर्षेबाणरामभितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्रोक्षये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा आतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपित्रपीड़ाचगुप्तता ॥ शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थंहेतवे एवंयत्नकृतेवत्ससर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशयः पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाञ्चकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्रायते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुन्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष आतयोग घरमें मंगलाचार खुशी जीवका ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थानके ईशकी पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चितवन संतोष वृत्तिहो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिलजाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिसके शाप के कारण जीवकी चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

उों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात भाग्य वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम् अर्थप्राप्तिनसशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्टा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतिष्टया रोगश्चप्रथमवर्षे द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेबृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग सप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम् नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येबातचित्तेनपीडनम् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनदानेन पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वार्तार्थयात्रकम् पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टंचनददेत साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यरामर्मितेतथा शरलोकाद्धकथ्यंतेबालबृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्वय

नसंशयः षष्टवेदाद्धकेवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभमयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यबृद्धिदिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंब्रारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्धेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंबृथा माघेशुक्लेनवम्यांच भृगु वारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मनकी कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ संपूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य संपूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमिलाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं वाच्यंबालबृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बालक्रीड़ाकिलोलश्चजीवबुद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिण्ठश्चविद्यायांअंतविद्याविसर्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रव गाथाचकथ्यते तातलाभभविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम् पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेब्देचव्योमराममितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्यविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेत्तथा अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापंचभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारण गोवच्छबधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम् पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचितायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चिन्नच

कारयेत पूर्णंयत्नेनभोक्तव्यनिश्रमञ्जायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वांअग्रजन्मपुनःपुनः चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेंव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मोंस्थितंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्ताचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदानञ्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसी विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेब्देचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखञ्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्त्रासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ट है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्यकरे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ट है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालबंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश होकर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित होकर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपावे तो मनोकामना पूर्ण हो
जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेब्देज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्र औषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंमम: तातलाभधनंबृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समबालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखञ्चदृष्टीचजीवनंसुफलंमम:
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेब्देचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामिमितेब्देचशररामिमितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनबांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाद्धकेवर्षें बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रह ंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूमकाणिकानिच: धर्मकार्यंभवेत्पुत्रकूपमन्द्रप्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षैशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिनसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् त्रिवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचारयेत् चंद्रषष्टमितेवर्षैशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयातकफवायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णापक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहे पश्चात् आराम मिले अल्प बीचकर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्टा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मनसे करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ट है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्टहै मित्र में विशेष मन रहै मीन रेखा हाथमें श्रेष्टहै एक बृणका चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्टहै किसी के चित्त को यह जीव न दुखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंशमें था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विज
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभगनीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेब्राजतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भगिनअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रश्चमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प
जीवीचबालकः जापमंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चन्द्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनन्दभूमिमण्डले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चन्द्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्केशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वंसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकत्रे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चंद्रवेद
मितेद्वेचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घचधनंव्ययंमिष्टवाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीनरः चंद्रसरमितेऽब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यवृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीनर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिर्भविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेऽब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्महत्व्याधिऔषधी सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधबंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापसुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस प्राणी की कुन्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डराकरे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमानसी हो जाया करे एक समय अचानक विपत्ति रंजसा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ठ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्टा वाला ग्राम पति जमीदार था दान पुन्य भी विशेष करता था एक समय इस जीवने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमत्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष बृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और जो जो एक चिंता से लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंब्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विजरतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्ष्णः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ा ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते वृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्रातोअथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात महाहर्षजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेंसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते कनिष्ठोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो बालक्रीड़ाकिल्लोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेंशून्ययुग्ममितेत्तथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येंचसिद्धति द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेत्तथा व्योमरामाङ्कमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुश्चबालकः चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाङ्केवर्षेंशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्यपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण वेदाङ्केत्तथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवास अकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वऐकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादंचधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंतौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपंचईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्रागवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृधिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन की प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष बृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की बृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उनका उपाय जो कुछ लिखाहै सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक२ प्रकार की बार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीवका दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्य प्रतिष्टा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फलभी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्रपर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवाकर और तांबे के कलश में घृत भरकर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रिके समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंशकी वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोअसत्यबचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदिने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतञ्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्तचिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यंखंडित पितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योगायकं कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः चंद्रराममितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्व गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचिंतवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयात्गुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम् अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मात्उपद्रोवाकिंचित् कालशांतये चंद्रवेदमितेब्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पंश्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेद्वेचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेतशुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्रीका फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेषरहा करे और हेशुक्र इस जीवका खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईशका पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो आत योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीवका दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युञ्जय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहै चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७२ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्टहै विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतःश्रीमान्जन्मबाधाविधानतः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं वृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिअथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिता शरीरजं षट्मेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवत्र भूलोभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधि हवनंब्राह्मणं भोज्यंवस्त्रआभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो वत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वआयुहर्षकम् पूर्णआयुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारा।त्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवा।किञ्चितकालशांतये चंद्रवाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिंलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकामबीजश्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिचतीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहै यह जीव धनका उद्योग बहुत करता रहै और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझै सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ट फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य बार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की बार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुलमें चित्र गुप्तवंशमें था और हस्ती घोड़े बाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्यायसे अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सरवस्व जाता रहा सो पंडाने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिसके कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुं सप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्याद्गुप्तचिंताचभित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसतकीर्ति कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोऽव्याधिकंतथा शीघ्रञ्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितीयेऽब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टऽव्याधीनसंदेहो ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेंत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनऽव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगञ्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलञ्चआनंदभूमि मंडले तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेश अनुष्ठानं पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रमित्रपरंप्रीतिंछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणञ्चसुताजन्मन संशयः पत्नीप्रसूतिकाऽव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंऽव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे ऽव्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये वृणऽव्याधि शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यधनंऽव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तऽव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते चंद्रराममितेवर्षेंबाणलोकमितेतथा शून्यवेदाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तंचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षें शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनऽव्ययविशेषतः किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनऽव्ययः मासेवर्षेंसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यंधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेऽब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केंद्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहै चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन बार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईशकी पूजा से कामना पूर्ण हो है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैकड़ों मनुष्यों को पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैलका अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिखे ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र: कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीत्रस्वल्पभाषीगुरुप्रियः शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुखदुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवातुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवोराज्यलाभके ।प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरोजातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभगनीभ्रातृप्राप्नुयात् तातमातमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यंमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भंनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्तव्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धमध्येतुसर्वगाथाच कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्रदानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाणकथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवाछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणनान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेव र्शरबाणमितेतथा व्योमरसाद्ध केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यंभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषट्मितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मात्महाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वाचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नश्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणाश्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फलहै कि ग्रह बलवान आनकर विराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्टा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े२ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बचकर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े२ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश होकर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में होगई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

पश्चात् से होगई सो पिछल पुण्य पाप के
कारण श्रेष्ट फल भी. भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंव्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्‌जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्‌औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वृण व्याधिशरीरेचभूतछायाचविह्वलम् उपकारकृतेमंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्येधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीतिममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानीयात्‌औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानञ्चशांतये पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाङ्कवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशञ्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्रराममितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाङ्ककंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते अर्धआयुगतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्‌अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव मंगलं पितुलाभविजानीयात्‌किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययोयोगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाङ्ककंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमामंत्रजाप्यञ्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत नवीनोवार्तयाचितवाहनादि सुखंलभेत चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यजाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगत्वनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तदद्देत्विप्रसंकल्पंनृपतिकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योगका यह फलहै कि बड़े२ खर्चके काम संपूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्चका भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीवकी आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक बार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हान हो चित्त में भय सा रहै फिर धनकी प्राप्तिहो स्त्री से प्रीत और घरमें पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्पसे बचे जीवका दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पंडा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से *निश्चय करके कामना पूर्ण हो* ॥

राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का शुभ दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तंमानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिन्ताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्योधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग वृणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेव त्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्च विद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविज़ानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश
अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यंकृतेनसंदेहा भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वा मंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यं व्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्यापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत बृणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्रराममितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाङ्कमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये बाणिज्योकार्यंकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्र भूमिमध्येच स्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्त वैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवात्मकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणां चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि इस जीवका चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं है किसीका बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एक ब्राह्मण तिसका मित्र था कुटम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मरगया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत मित्र पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेव॑ ज्वरपीड़ाच रेचनं मातृकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षे मंगलाचारकंतथा आदिपठनश्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरश्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोति पत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात् तातचिंताचमातकं गुप्तश्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया नानालाभकंप्राप्ति भाग्य वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंति भृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्राममितेवर्षे बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धमध्योपि मर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथा वर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंता शरीरेच रविदानश्चशांतये नवीनोमंद्रकरवना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधींचधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्टा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनंद दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तातका धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घरमें मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तातको लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्टहै नहीं तो जीवकी चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वालाहो इन्द्री में पीड़ा कामकी उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े२ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्पसे नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनीरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

बनोरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश कर दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहूभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यंश्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहूसेवीनराभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यात्तो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीश्चरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकं बालक्रीड़ाकिलोलश्चभग्नीभ्रातश्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रात्तसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगश्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचितवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यते शुभकार्य धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरज चंद्रराममितेवर्षे बाणराममिते तथा शून्यवेदाब्दमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचित्ताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेब्देच शून्यबाणमितेतथा चंद्रअल्पदुखंशुक्र दानमंत्रश्चशांतये करमानश्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानचशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेनथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखंच वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशांतमविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्ष सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थ ईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णविजानीयात व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा व्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय ॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धनका मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्टा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडाजी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर ग्रहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ठ वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगञ्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामांदीर्घभवेत्तशुक्रमित्रप्रीति विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पञ्च प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगञ्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोताततहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगञ्चप्राप्तये अल्प विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरञ्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रञ्च मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मातउपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता शरीरजं कार्यंमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तञ्चधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्राममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशञ्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभुमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अलपसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेंसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढसुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका यह फलहै कि ग्रह बहुत उम्दा आनंदसे अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदांत मतहो स्त्रीको चित्तमें पुत्रोंकी लालसा बनीरहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ठ है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभकी वृद्धि हो अकस्मात् प्राणोंका भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर नरहै गुप्त धन मिलें शत्रू हो जोर नचले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तटपर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहै लोग देखतमें पंडित साधु सभामें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंव्रजेत दयावंत
समाहस्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान् सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाव्रणंकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याश्चबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेरांतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवौनो
कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामभितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदोर्घचितनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनांत्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधोऔषधीसेवनंवृथा वेदसप्ताङ्केशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शत्भिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रतापके बैठेहैं मनका गुप्तभेद किसीको नदे विद्यासे बुद्धि विशेषहो सत्य बोलने वाला सबका भला चाहे पराये काम मनसे करे पिछली आयुमें बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीवकी तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईशकी पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्णहो एक जीवमें चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण आगम मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण
को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांक्रूपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेंगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणक दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यश्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षें पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत धनव्ययविशेषेणसुमार्गेंदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेंशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणकृयतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयातऔषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेंसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षें षट्रसआद्धमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोबाहनादिसुखंमहत उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्‌महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिता प्रमेह पीड़ा किसी कालमें हो सत्य वचन बोले श्रेष्ट जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह २ के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेषहो अकल तेजहो दूसरे की बातको तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनिका मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे काहो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी कालमें खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काममें खर्क हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूहका सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्ध भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दंड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की बृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः   ग्रहाश्रेष्ठश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत्   बृहत्कार्यंकृतेभूमौऽव्ययलाभविशेषतः   सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत   अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः   छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक   सुजनश्चऽव्ययदीर्घ सुकीर्तिंचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता चित्तचिंताभवेद्दीर्घपीड्यंतेचापदुखिता   साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः   आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत्   अल्पप्राणभयंप्राप्य पुनरन्तेसुरक्षण पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भबाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविऽहल कृष्यदेहोपिद्रष्टऽव्यातातमातोतिचिंतनं छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनदंकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंरुजंसर्व विनाशनं वेदवर्षाच्चपञ्चाब्देषष्टमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल मंगलजायतेग्रह कष्टऽव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा ऽव्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोत्तदा तातलाभ विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन ऽव्ययदीर्घसुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्य चचिंतनं शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यऽव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण लुभ्यतेजजनाजनै त्रियोविंशाष्टत्रिंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापाद्दुखंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योहर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं अहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहूचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखोलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणांश्चष्टनूतनंजायतेगृहे वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये वृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुण्यसुकर्मैणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात नगवेदमितेव शशिपश्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपश्चांतरोकाव्य व्यालपश्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वं प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमितिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फलहै कि ग्रह श्रेष्ट हैं और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुखदुख देखे इज्जतके साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीवकी चिंता रहै छलछिद्रसे जले सत्यासत्यको पिछाने किसीका बुरा नचाहे हीनदशामें फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्तिसे रहै आनंद मानकर बिताये एक अल्पसे प्राणोंका भयहो सुयत्नसे प्राणोंकी रक्षाहो पूर्णआयु भोगे तथा लाभेशके पूजन दान आदिसे विशेष लाभहो हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव ग्वालवंशी था बड़ा धनपात्र था मथरापुरीके समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकारका आनंद पाताथा एक समय भूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसको ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

एक समय भूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसकी व्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण्येनविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्वहुनित्यश कोपिकार्यविशेषेणसर्वपूर्णो भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यां वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता वृणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालबृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेदंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदबृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतमहोत्सवं विद्याबुद्धि बृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टोदशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसभव रूपयौवनद्रष्टव्या लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकोऽयविपाकेशोकदायक तस्मात्तसर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाऽव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्प्रभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहोमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावतकालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णभविश्यति सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिस्वजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चद्रचत्वारिवर्षाणि तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयातनृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान पुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणागतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानुसारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मैतथाभवं पुण्यकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवदिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवानहैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्टा तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े २ खर्च के हैं सो चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दौनो भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा पूर्ण हो बड़े २ सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म भ ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

पूण हो बड़े २ सदमे आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म मे ये जीव हरिद्वार मे रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्यैविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवञ्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेक्रुताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यंरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः बाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनितश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णातिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारेधीकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेव्रणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहञ्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचिन्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहेंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैप्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाद्वेसुतः
पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतन सत्यवादीगुरुभक्तनृपात्मामान्यभवेत्सदा द्विजदेवसुभक्तिश्चविचित्रोवाक्यं ब्रवीत्चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुसमागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वंपत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुखं
महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलश्चभ।षितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै प्रथम मध्यम भाग्यहो
पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो
जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे
लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्रसे गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहै तथा एक जीवकी चिंता से
क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया
जन्म माने आयु पूर्ण हों पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना
पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष
विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

हे गुरू पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ [illegible] था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाग्रधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्षमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदोर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचरणंयुतोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यग्रशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः वृणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुन्य प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालबृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथो कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बतसरोवृद्धि बाल क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्बके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमौदिता शशचिन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्रायचितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टताशनं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुण्येन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाब्दमायात शर विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणाद्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रपक्षविनश्यंति रोगापचौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण चितचिंताव्ययपुण्यं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलाण्येवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्द्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णात्रिकारेण महादानेनशांतये चत्वारिंशावधितांत अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याश्च आशासर्वत्रपूजितं विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामाधि विशेषेण भूमिमंद्रव्यनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वं स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फल नहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगल केतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्यकी बृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय नबनेगा मध्यम लाभहो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रताप से आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशा में कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसी की बुराई निन्दा न करे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्मभोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

भोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा [illegible] करने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यंते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहूकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदेहोपिदृश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालबृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं बृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालबृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यबृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वं भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राब्दमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वं यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवन्हिगतेकाव्य तथाचपचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वेषांशुभचितकः दानमन्त्रसुपुण्येन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द केतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुत कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसाख्याधिकारीत्र सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवधिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाच्चित राजद्वारेजयंजाप्य पददीर्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधोसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशागत अन्यसर्वसुखंदृश कुलभाग्यविवर्द्धनम् पञ्चपंचाद्धमारभ्य शून्यषष्ठ्यादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यमाचक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे मतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रस षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहताहै गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो ज़स्ता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के व्याजें से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं नूतनोजन्ममरणयते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदावजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं वृणचिन्हश्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम् उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मश्चमोदिता आदिवर्षांत्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिरहर्निशं मंगलसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सुयत्नंशांतिसर्वदा वेदाद्ध पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य षोड़षाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विंवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण लोकाचारश्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं ग्रहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सुतापुत्रसमायुक्तो लाभकृत्यावशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोह्यानंदतोपिस्याद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्यं सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र चिंतागतोगुप्तं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेम्सर्वंक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यं सिद्धिमनंदिता रसरामाङ्कमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यश्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाङ्ककेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मनेच्छापूर्णंतोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रश्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्व्ययमागम शशिपंचाङ्कगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगद रुग् रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्ते। वह्निसप्ताङ्कजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव को मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चितवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसेकरे किसीकाबुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमावे स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यं गूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयंप्राप्यप्रतिष्ठाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमनमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभंप्रभुत्व
जायतेकुल दुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोऽव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरं आयुपूर्णंपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वंमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुवृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविह्वल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षंसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे व्रणपीड़ाज्वरोतप्तंतथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिः सद्यशांतिभवेत्तेनआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रके विद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागोचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िता बुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमे श्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनागम द्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदान मंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंमद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितो रसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावर्णीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यत्तंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्धयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्ठित पददीर्घमुपस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्वत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांत्रिशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुण्येनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेदत्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेण किंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवा ग्रामभूमिगृहेरत्नंसुपत्नीञ्चमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोषोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धारुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्यप्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमासुजायतेपुण्यकर्मणा।त प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्रहो लाभ मध्यम रहे काम होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेशपावे सूर्य मंगल और राहुका दानमंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले_मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे प्रसन्न स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृत्तंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभुयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घग्रंग्रेचबहुदृष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवेयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातःसर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णंभवेनरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि व्रणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राङ्केकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीति रूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राङ्कमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राङ्केकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोह्यानंद तापिस्या

द्वहुलाभप्रभवन सुदुग्धंमहिषीगावदापदासिश्ववाहनंचंद्रत्रिंशाद्धमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोत्तसुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखान्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शनःतथा
विप्रवंकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचद्वकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशात्तकेनथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चावकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजातेअकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुणसर्वबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यञ्चप्राप्यतेनरनारीसुक्रीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगरेदगतेवर्षें पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसबैं मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतक्ष विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टाव्धिंचास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगञ्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का स्थान छोड़कर द्वितिय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीत रहे अपने दुखसुखका सब वृत्तान्त उससे कहदिया करे और विशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीति रक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त न दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभ खुशी देख और नाकिस दशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेष दीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंता सी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशाय नमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहा भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनिंयेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीते सर्वकर्मैंशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वैषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम् पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थैवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचयुक्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे द्वादशेवर्षे मध्यतद्वदाम्यहं पितुचिताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मणाशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविषेशेणनूतनवार्तयाचित मित्रपक्षोपिपीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम् पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात् भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहाविदाशत प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदिता दीर्घचिंताविनष्यंति जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माद्धकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़िता सुतःपत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेण अन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वच रूपयौवनविह्वल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रोड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नादिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुराय पुत्रपौत्र मनंदिता षष्टांषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्द में प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूछता ठाकुर के मंद में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते श्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता
विद्यावंतोसुबृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्ठित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिश्चितक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिबृहत्वता नूतनोवार्तयाचिन्तंउद्यमंगणधनाप्तय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोषणेरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंग्रर्द्धंकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसोउद्यमीपुंसश्चंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितःयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णंगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तबृहत्वोकार्यचिंतन व्रणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुज मातृक्लेशमहदुखंजीवआशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनश्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंत्रा।शिशुक्रीड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाद्धमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम् कामचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाद्धकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तंअजीर्णंनश्यतिच्छुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं बृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखश्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवह्निसुवर्षाणिपञ्च
त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यनेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कर्मा
श्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता
पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकान्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना
सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वच्छमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा अहल्लाभप्रभावेणचित्तोह्यानंदशीतल
मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंअहत्वोपदमाप्नुयात ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वंचित्त
वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय
दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरं ताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि
पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणंददेव विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुर्वृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते
पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चदासदासिश्ववाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंमिता आषाढशुक्लसप्तम्या!निधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुन्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करवे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत मान धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहैं मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े २ काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

ये जाव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा [illegible]
रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया [illegible] तो मार्गं में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने
अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुवा तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखोलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वंमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वंशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वंआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतेतविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अधानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाब्दमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राब्दमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंतेआशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंप्रंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राब्दमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावतकालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्धोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागमः फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचितयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेंश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनरैःकिंकार्यंनसिद्धति अपीतुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजांवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतेयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत्

शांतिव्रतिसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं   कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्यरतोसदा   तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता   अन्यसर्वंसुखंप्राप्य
धनसंतानप्रतिष्ठित   रसविशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत्   तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं   गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता
द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः   सुतापुत्रसमायुक्तदांतेमोदितदिने   शशित्रिंशगतेवर्षेंशरवह्नितथांतरे   गुप्तकष्टनपाड्यंतेअजीर्णं
बातसभवः   औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक   अकस्माद्रव्यमाप्नोतउद्वाहोमंगलंभव   व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन   क्षत्रचिंता
व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं   अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं   विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं   प्रायश्चितकृतेपूर्वेंधनपुत्रादिप्राप्यते
षष्ठत्रिंशाद्धमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा   नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः   निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेंपदस्थित   त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच
युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेंशून्यपश्चावधिंलभेत   पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या
भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासु ीनर   वन्हिपश्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं   पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः   वेदबाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं
औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये   नगबाणाद्धमारभ्यजायासौख्यविनश्यति   रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः   सर्वेच्छापूर्जितंलोकेचित्त
आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः   शून्यसप्ताद्धमायुष्यंनिधनंजायते ुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोज़गार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोज़गार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सी द्रव्य इकट्ठा हो गया
ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घत्रस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिंवृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलश्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेन्नितासदेहोला।महानिदं चिंतयेदीर्घयत्ना।निवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेचर्ततसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषे।सुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदि:मासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतौ
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनंमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहोद
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टो।नानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगत्रिं।गतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानंयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्भमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा भाग्यवृद्धिवलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातभूमिमंद्रव्य नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाद्भमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसर्वमानवृद्धि मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतःपरिसुखं सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वश्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रध ।क्षिचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसाख्यविशेषेणसर्वआज्ञा प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्भमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणोशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥ ६

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैऋत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्कृयायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्रिनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वंयाविन्मासेचसप्तमे प्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजुं तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वंशांतिसुखोद्भवं मंगलञ्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्ध
तिर्चदिनेदिने पितुदेहभवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचिव तेनसौख्यसमृद्धिस्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षंतथाचषोडशाब्दके कष्टञ्चजायतेदेहोदाघदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्य विशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखचैवहर्षयंतिदिनेदिने ब्रक्षाञ्चपतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यतेभयदारुणं
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत् स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जोवोमहाप्रीतीश्चाशक्तञ्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
रुनशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविंशेद्विविंशाब्दे पञ्चत्रिंशाष्टविंशके लाभश्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयातकन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलभश्चध्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंताममायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्च नूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवाममभागेवृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्ररामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेना।भूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्णां दानवृताचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानङ्कृतेसति वन्हिराममितेवर्षेंव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोपोडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाणयेवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णंभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीवकी चिंता रहे और बड़े २ लाभ के उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावे कभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में व्रन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत होगया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानवे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदं भाग्यवृद्धिश्चकारयेत मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च उपद्रवम् दीर्घचितान्वितोभूयात महच्छोत्रश्चजायते सहसीदृढ़संकल्पश्चन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसगात्रिनिर्मुख चौरभीति भवेच्चास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मंगलगृहमध्यश्चनृत्यगीतादिकंभवेत पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमंगलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यबृद्धिसुखं देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत् सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणाक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापांकूप तड़ागेशुआराममोदमंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेंब्रणपीडिनं नेत्ररोगणपीड्यते सूर्यदानश्चशांतये पञ्चमे सप्तमब्देषुमंत्रंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसंप्राप्तं पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं नवमेब्देजलोद्भीता दशमकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचितातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं प्रजायन मातृचितापराभूत्वा किंकरोमिकुतःसुखम् चतुपञ्चदशेब्देषु कांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनकाभर्णंप्राप्यतनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधोप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम् नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांथविंशे चकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित्रवेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगलगानश्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोष्यतेविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्विर्त्रिशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते
नगरामवाधिंतत यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांब्रजेत् विं चिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नाग।
त्रिंशमितेवर्षेंचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत गृहहाटधनंसर्वंविलगच्छप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेंनानाक्लेशसमुद्भवः
परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युंजयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं
ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यते मंत्रयंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण
मितेत्रर्षें तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था
धनीनरः शरपञ्चमितेवर्षें पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम् सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनन्दमंगलं
लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेंअथवापद्मसहति सर्वावस्थाविजानियात भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्यकी बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वालाहो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्यमार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जापसे विशेष सुखकी वृद्धि हो पुत्रकी इच्छा पूर्णहो एक अल्पसे अधिक भयहो पाप ग्रहोंका पूजन दान मंत्र करता रहे, तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा तिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्रसहित संकल्पकरें श्रेष्टब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान श्रौर वस्त्रसहित संकल्पकर अष्टब्राह्मण को द गोपाल मंत्रको जाप करावे श्रौर गऊ ब्राह्मणों
सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्रानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यःकामिनिप्रिय कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेकचित भोगमैश्वर्ययुक्तश्च कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिश्चहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्टुरोकटुभाषिणः साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चंपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोगप्रपीड्यं तेनचिरंविद्यतेसुखम शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापदुदुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः शौप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसंचिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च गंधपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनंपञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणां औषधेनप्रशांतिश्च जाप्यदानेतथैवच त्रयोदश मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणां महर्घवस्त्रपात्रंचवर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुःकिंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात किंचित्कष्टसमन्वित शशिविशेब्देद्विविंशे कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भौतसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्देंचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेवसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषविसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचित्खेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभबाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानताविज्ञेयाभृगुराजेणभाषितम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े२ आनंद भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्ज़त प्रतिष्टा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशको पूजादान करने से वंशकी वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटम्ब का पालन करे श्रेष्ट संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राणसे अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें जीवका भयहो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्तहो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत होजाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हे पुत्र पहिले जनम में ये जीव बडा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्थातक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अंत को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदावृत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यंत पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जन्म के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जन्म के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षेसुखंगता सवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सवैं हेमरत्नानिभूषित सकामश्च श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबुद्धिश्रेष्ट सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुर्भक्तभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्ठमेवर्षे पितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय व्रणव्याधीप्रपीड्यंते विस्फोटकभयंभवेत सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विंद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तंदेव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो सु त्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्रतिष्टोपिबुद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशत्तथैवच मानवृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोषिच वाहनादिसुखंज्ञात्वादाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविव्हलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मेण

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुण्यकर्माश्रयोयदा सुतपुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणपदुदीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोऽव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागताः शरीरोपीड़ितंगुल्म आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत सर्वबाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणाम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तेऽव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्धगेकाऽव्ययतथाचनभवेदकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवनं सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेन्नत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदंतथाकवे अतिलाभमहत्सौख्यंप्राप्नुर्यंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनी तस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंप्राप्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुण्यसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परंतु पूर्व पाप के कारण जीवको चिंता विशेष बनी रहे तिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल बंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परंतु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊको अत्यंत कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पापसे इस जन्ममें चिंता अधिक रहै घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहै लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न होतो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पापकी शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहे हवन करे ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लड्डू बनाय संध्या समय गोवो को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रःाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वं प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वें हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञोचधनाढ्यश्चसत्य वादीःुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयाकिंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम् बुद्धिमान्पंडितःशूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वें प्राप्यतेंचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागमम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मंचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददेहदीर्घं पूर्णमायुर्भवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था मध्यावस्थासुखीभवेत अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रञ्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षें द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेंच बृणज्वरप्रपीडिता पञ्चमेसप्तमेवर्षेंविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति दशमेकादशेवर्षेंगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्यथाभूयसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेंपञ्चचंद्राद्धकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्टविंशाद्धकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टाविंशति त्रिशचत्वारित्रिशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरंशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्रविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्टतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम् चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्मायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुरुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णामायुःभवेत्तत ।। भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्याबुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्री वंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुए तिसी से ये जीव महा पाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधी से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ।।

संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र को जाप कराव हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेऽब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचितातुरोभव द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेंव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत चक्षुरोगविजानीयात किचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो पीडयंतिपुनःपुनः उपायश्चास्यवक्षामि येनश्रेयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांप्रपूजनं अन्य विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनर्कष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगश्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभश्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे चत्रियोदशे विवाहेशर्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेंच याचमानापिनृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनंलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाद्धके संबन्धंचचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वंकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा गोधूमगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंमप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येश आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिंगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिंवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुखः हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनंद हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे। हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यंत युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

लिखे पू० न कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सदा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ।।

मृ०स०

फलित

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षतथापङ्क बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवितव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागमोनित्यं मध्यसौख्योह्यमाप्नुयात अदन्तारोहृदेगुप्तं लोभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिंवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वं दीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुणद्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोनसिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमन सत्यवक्तासुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभभोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमिलभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफलप्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासांश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पापकर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिंपूज्ये दोर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा वेदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महादानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दोर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित] शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा त्रस मन्दसौख्यं चक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोक्कृतेदीर्घ चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभुतस्वकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणात्त्रस सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा त्रित्त चिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेग५म् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहै कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युजय का जाप वेद की विधी से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेद पाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं [illegible] अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदत्ता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिंचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्भय समन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्य तेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दीचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिंचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितुर्द्रव्यविनाशीचसुयत्नेनविवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यंकरसदा। सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षब्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते ब्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणंमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामवाधाप्रपीडत मित्राणांचञ्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविव्हलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राब्दमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदबृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्टयुग्मयदारभ्य रामरामाब्दमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ओंऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाब्दकेतथा तावत्कालगतेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभं गुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तमे
कार्यंजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंक्कापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्तरम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोअजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञात्वादीर्घं कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टय: विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपञ्च अन्येचस्वल्पजीवनं रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणांशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णातोये नित्यश षष्टमासाद्धयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननर:सदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयम्रृयतेसापितदांते चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्या रामनामजपेन्सुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेत्तनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रेसुकुले जन्मनात्रकार्यंविचार्यं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतये शुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानञ्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकृतु महंसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वहबड़ा भागवाला हो दासदासी और सवारियों के सुखपावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुखपावे क्यों की इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बनगया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अंत में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय येजीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुवा था बहुतसा पुण्यदान किया परंतु एक समय बहुत सी मदराका पानकर उन्मत्तहो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वशहो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोधकर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यानको बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादिका नाशकरे क्लेश का अधिकारी हो हेशुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुखका नाशहो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे आनन्दंवर्द्धतेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूमदातव्यघृतञ्च लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घंतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात सर्वसौख्यागमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेण आशक्तमनः क्वचित भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात नारीभोगश्चस्वेच्छया चंद्रजीवपरंप्रीती आशक्तश्चविशेषता कामरोगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थंनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मथावा वयश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम् चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहिं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावार्द्धतंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधीविनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्धमारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोक्तवे क्रमेणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यक्रतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोक्तवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निजकृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्त आशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टभवेद्योपायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत् . गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात् मासेवर्षेसुखंजातंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्ममन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घंकार्यंवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्ठकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासीसमायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवत्पश्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वं प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुराय विशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहतेहैं हेपुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुखपावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता २ रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता २ रहजाय पुत्रके सुखमें विघ्न हो और कभी २ विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते २ उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभवश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हेपुत्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पाँच तोले स्वर्णकी गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत करे प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हो परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
ञ्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयञ्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेऽस्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चितातुरोग्यातोलोकंनिंदामवाप्नुयात लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचषपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुर्प्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभाच्चास्यवाणिज्यतप्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तेशोकवृद्धिदिनेदिने त्रियेऽब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गंप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घंबहुमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसयुक्तआशक्तश्चापिविन्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीड्यन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतये रामाब्देपञ्चवर्षाणिवृणापीड़ाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभुय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षेराजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्चथोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधिंतथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मेणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिश्च वंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे मप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपुर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवर्धिकाब्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहै सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मंत्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े २ खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहै प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जनम में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मंत्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दान ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ।।

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ता अग्रेफलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतत्रादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिकयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वे मातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यवहारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थेमोदतेभुवि कवित्वमतिसञ्ज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंकिंकरे
धूर्तेंनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजाचकारयेत घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रेत्रिंशाद्वेवेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
बृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वेवन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्ठमे
वर्षेव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंकविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीभतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्वेषुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसप्राप्यबाणमेकं तथैवच गुप्तचिंताहृदजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वेचविशूचिरोगसंभवम्

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगमंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तञ्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणाविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीड्यन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणे षष्ठाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणीतले कदाचित्समयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षट्त्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभंविजानीयास्थानञ्चवर्द्धते पूर्वयात्राभवेत्पश्चातधर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशातपुण्येननानासौख्यमगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेसून्यसप्ताद्धप्राप्तने मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसन्तानयानञ्चसर्वत्राशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्वलक्षणसंपन्नबातपीड़ विशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ भाषा ॥ इस अङ्ककी कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीनहो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्तहो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीनमन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुखभोगे हेशुक्र येजीव पूर्व जनम में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपती राजाकी तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परंतु कामवश होकर फिर वैश्या गामी होगया और जप दानादिक क्रिया सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर [illegible] हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेऽव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यःकामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातंसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धोनसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखंभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तेपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातंप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपालत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकेवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षेंचपंचमे षष्ठमसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राङ्ककंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वकष्टविनश्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वंलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत गुप्तशत्रुविरोधश्च प्रत्यत्तंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभश्चकस्माद्धनमागम चिन्तोह्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तञ्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकम्प्रिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिने नवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुम्वरूपंचलुब्धके षष्टवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्य गायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाशयेव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वं पौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबत्रदानंचशांतये नंद षष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्रके ग्रह कुछ विशेष बलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी २ घरमें पीड़ा करलावे भ्राताका सुखहो या प्रेमी मित्रहो खर्च विशेष हो कृपणता नहो सके एक जीवको चिंता बनीरहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्यावुद्धि विशेष बढ़े पुत्रोंका सुखमिले हीन ग्रहके योगसे काम अधूरा होता २ रहजाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्नहो अति परिश्रम करने परभी मनोर्थ पूर्ण नहो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवाकरे विशेष कार्य का अधिकारीहो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभहो कभी विशेषहो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबूसे बाहरहो प्राणोंका भय जानपड़े अधिक दानमंत्र उपाय करनेसे अवस्था दीर्घहो विशेषसुखभोगे पहले जन्ममें ये जीव स्वर्णकारथा स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छलकरे अन्यायसे अधिक द्रव्य लिया तिससे पापका भागी इस जन्ममें पीड़ित हुवा अति चितातुर रहे इस पापकी शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

- गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और [illegible] शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपापग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीर्मुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाऽन्यद्बुद्धिनसुस्थिरंभव उद्योगकुरुतेदीर्घंलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षणा ईशभक्तिसुसंचिंत्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुहलीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचारणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोर्पविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्यानंचसंमग्न यौवनंरूपचितनम श्रेष्टकर्मरतो चापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसिद्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेषुसंजातं भाग्योदय विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं बृणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंताचदारुणम् अनुष्ठानमहादानं महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्धचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम् द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि नूननंयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्रगतेऽव्य त्रिंशवर्षेक्रमंतथा नूतनंकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नत प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाऽव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताऽव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षावधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घ अजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणाञ्चहरितिक्यां सेऽव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणाऽव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वग्रहसुप्रतिष्ठित शत्रुपक्षविवादंचकार्य भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोह्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यऽव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियात्रापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलंसंप्राप्यचिंतंआशाप्रपूजिता ऽव्ययोपञ्चावधिवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगतिं कर्मभेदेनभोप्राज्ञसुखदुखसमाश्रय ।। भाषा ।।

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्टा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीवकी चिंता मिटे परन्तुइस जीवकी बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुंचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बातपर क्रोध आजावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्बका पालन करे पराया काम मनसे करे ईश्वर की भक्ति में मनलगावे परन्तु स्थिर न रहे हटजाया करे कामकी उन्मतता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ।।

ये जीव पूर्व जनम मे बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घंकत्याधिकारीत्वप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवःस स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थंविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वें दुष्टकर्मेणापिसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तंव्या गुप्तचिंता हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंअकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्टग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षैंसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः धर्मवार्तासदावृत्तिसज्ञातिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलवृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ द्वेषष्टमेवर्षें अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिहचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यविंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गेंधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपु ंसः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगी।बहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ कलोभिज्ञोनृपश्रयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरं निर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससंप्रीतिः पितृभक्तःसुतर्पित तुरगात्मनं ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षें चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येंव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेंतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगमोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीद।सश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपच। रोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिंवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्णं भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ठहो बड़े२ कारबार रोजगारकरे परन्तु न्यूनफल कारक ग्रहोंका दान मन्त्र उपाय करनेसे पुत्रोंका सुख और विशेष धनका लाभहो किसी समय कुटम्बसे विरोधहो धन खर्चमें आये शत्रु नुकसान पहुंचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर विशेषहो बड़े२ आदमी इज्जतकरें प्रतिष्टापावे ईश्वरका चिंतवनकरे अनर्थकी बातपर ध्यानकरे श्रेष्टसंमतिदे बुरेकामसे बचे श्रेष्ट मित्र में चित्तरहै खरचीला हो पोचबात न कहै चित्तमें गुप्तचिंता रहै इज्जतका विशेष ख्यालहो खर्च विशेषरहै एक समय प्राणों का भयहो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहोंके प्रभावसे प्राणोंकी रक्षाहो सारीअवस्था इज्जतके साथ आनंदमें बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मोंसे सुखपावे हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आगया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसीसे विशेष पापका भागी हुवा सो इसकी शांतिके निमित्त काशीके थालमें चावल भरकर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त कर श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाश्यंति स्वकुलंदीपकंतथा बहु कोर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुहृढश्चञ्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशांसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रंरक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारांविद्याच पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णंसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिक्प्रकोपीचकामाधिक्यवलान्वितः सुशीलश्चञ्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धनयुतःपुंसः मीननादपरंप्रिय वृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत् क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसशयः शूरोथवाग्रामे पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायते क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमंद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगश्चक्लेशिता पितुर्चिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम् ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुर्चितासमन्वित निजकृत्यलभेद्द्रव्यभवेद्बृद्धिदिनेदिने शुभकार्य धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठाग्रसंध्यासर्वंभविष्यति अष्टमाद्वादशेऽब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्यंव्ययोचापि यथालाभेतथव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेङ्कमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यत्तं नेवकथ्यत मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षंमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी चजोवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावर्धिवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रियत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्ठविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागंम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णाश्चवाजपः लक्षमकप्रमाणाञ्च सर्वकष्ट निवारयेत तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभुत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परिलोकं फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षं आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्रीके ग्रहोंका बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनंद भोगेगा और कुलमें दीपकके समान चांदनाकरे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भलेमें रहे एक जीवमें चित्त विशेष फंसारहे नई२ बातोंका चिंतवनकरेहै हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतुका पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थानके ईशकी पूजन दान वंशकी वृद्धिको अत्यन्त श्रेष्टहै गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होनेसे सब सुखपाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्टपावे प्राणोंका विशेष भयहो परन्तु पुण्य कर्मोंके प्रभावसे पूर्ण आयुहो कहीं अकस्मात धनकी प्राप्तीहो भूमी लाभहो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भलाचाहे मनकी विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हेशुक्र येजीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवानथा बद्रीनारायण के दर्शन को जाताथा सोते समय मार्गमें धनवस्त्र आदि चोर हरकर लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छ भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड के उसको खुब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छ भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेद दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविषेशेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात भयमागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोक उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीघमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यंधनव्यय सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशमित श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्यंयदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिका द्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शांतनीयोविशेषतः जन्मतेःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टबाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे सुखंजातमातृकष्टांवशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्याभ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यंसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभव: विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वंसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शरीनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुत्रापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतञ्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनकापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापं आनंदं जायतेध्रुवं सतःह्विमितेत्रषैंत्रिशेत्रोलाभजायते त्रिशाहोमंगलंकार्यं आनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणांशोचयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वंथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घं नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वें जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्धमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षें निधनंदेवसंभव दाहंप्राप्य नदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चित्तवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान् सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानश्चधनकीर्तित्रिवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका (यत्स्वगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत् केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिंकरोपाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छंतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य वर्षद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनायोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेब्देभयंप्राप्यपितृचिंतावली यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन पीडतम् पितुरंधनलब्धिवनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे वर्षेत्तरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छांपूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचित्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान् शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाब्दमारभ्यषष्टत्रिंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेच कुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तंनैवोपिसुस्थितः गुह्यपीड़ाविनश्यंति अन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनश्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकीर्तिश्चचित्तमोदमपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखंगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्टत्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाब्दमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीतादिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनश्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाब्दमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्मपत्रमें ऐसे ग्रह पड़ें पुत्रोंके जोड़ोंका ध्यानरहै कन्याभीहो वंशकी वृद्धिहो धनवान् लक्ष्मीवान् परोपकारी श्रेष्टहो लोग निंदाकरें तबभी बुरानमाने बड़ा प्रतिष्ठित नामीहो कईवर्ष विशेष धनकी प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्यकी न्यूनता करनेवाले आवें पुत्रोंकी चितारहै संतान गोपालका मन्त्र वंशकी वृद्धिको श्रेष्टहै लाभस्थानके ईशकी पूजा दान जापसे विशेष लाभहो और पृथ्वीपर बड़े२ कौतुक देखे चिंता औरभीहो अपने समझे वअपने कहे तथा समतिके नहों घरमें कभी पीड़ाहो जायाकरे एक अल्पभारीआवे प्राणोंका भय रहै आयु पूर्णहो कैसाही भारी खर्चहो कार्यहो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्णहोवे हे शुक्रपूर्व जन्ममें येजीव ब्रह्मवंशमें उत्पन्नहुवाथा सो नाट्यविद्यामें बड़ा चतुरथा राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्तहो गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यद्दानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्त्वतांम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य नूतनमागमः दीर्घकृत्योगृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य आमाविचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनक्षयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंमर्वलाभदं भाग्यवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति वर्द्धनं चंद्रशोकरिथताच्चितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यअकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्प विषेशेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिच्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजातो भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषश्चपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिमहोतले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्यं नाशनं दर्शनेअरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीर्यसि तथापिसौख्य संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तयेवर्षेंव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रहं नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भुमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेंतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिश्च पुण्यकृत्येसुखागम ,साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्धवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेंपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेंपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टे नभोप्राज्ञ अकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेयस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहैं श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षिणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रु वम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत् चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशक्तोपि गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंदीर्घ पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंप्राप्य स्वजातिमानवर्द्धनः सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्प्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणम् चतुष्पदात्तथारात्रौ विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आमिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभत्र नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेब्देच पितुप्राप्तिमहर्द्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्दाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगंचक्रीड़िता सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीव बालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेत्वधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्टहीनदशाभोगांअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसी द्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायनम्पुनःदीर्घधनंलब्ध्वाकार्यचिंतावलीयसीहीनकार्यभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेंधनपुत्रसुखान्वितः आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधिं काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिकाव्यचितः चापिदीर्घता. चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावृत्त भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रंचमोदिता षष्टपंचगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा, जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गौदानं श्रद्धायुक्तोआपदुःद्धारणंजपेत अल्पायुनश्यतेवत्सदानमंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वंपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायू भाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्रमें ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वालाहो मध्यम और श्रेष्ट दोनों दशा भोगे किसी समय कहींसे धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहोंके प्रभावसे चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ को सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक काम हीन बनजावे सो पीछे मनमें बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्रीकी चिंताका ध्यान तथा जीवकी लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धनसंतान का सुख विशेष भोगे कुलकी रक्षाको संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ट बनजाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े२ दुख सुख भोगे परन्तु चित्तको दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी२ भ्रम सा हो जाया करे नई२ वार्ता भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा. जो हाथी घोड़े आदि बस्त्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्तदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

हरिद्वार मे निवास करता रहा. जो हाथी घोड़े आदि बहुदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्तदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरं चेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चित्ततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता पश्चातेकुशलं भूयसुकर्मैणसुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत परनिंदाविरोधितंसुखाभिलाषितंसदा संतोष्यबृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचिन्न चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचितनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्त्वाकदाचन लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभंचचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपिड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत्त कार्याणिमकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपंचमेवर्षेंबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविन्हल दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेंसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणब्रन्वंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविन्हलः नगमेकाद्धमारभ्य त्रिंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलंचगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्योदयमहत्फलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्दतेसदा नंदवेदाद्धमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्वन्वस्त्रभूषणं सुकीर्तिख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाद्धमारभ्यवन्हिषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविषेशेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तञ्चरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपोत्रञ्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपोड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ।। भाषा ।। इस कुन्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रोंमें लिहाज़ परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहै धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोषी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्तमें समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घरमें पितृ पीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करनेसे वंशकी बृद्धिहो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईशके पूजन से विशेष लाभहो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्णहो हीन दशामें हानिभी हो परन्तु अन्तमें सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदीमें नाव चलाने वाला प्रधान था नवकाके कृत्य से बहुत धन प्राप्तकिया एकसमय एकसेठ श्री अयोध्याजी की यात्राको आया सो बहुत धन नवकामें भूलकर चलागया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्य कार्य में लगने वाला धन अपने घर में धरा तिससे पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवोंमें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ।।

तिसस पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डु वामें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ।।

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंत्रोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धंसुखीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यश्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्ठविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यबहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवन्हिवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानश्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोबालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राब्दमारभ्य नागचंद्राब्दकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं
नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माब्दमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घं जायापुत्रश्चमोदिता मानसिविविधाचिंत्यसुकर्मश्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यप्रददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुक.तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्धगेकाब्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठंचकारयेत् ततःसौख्यभवेत्कान्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंब्ययंचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिंचवृहद्भाग्योभुवितले शशिचत्वारिवर्षाणिब्योमपंचावधिंक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगावो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्सःहोनवनारीचमंगलं आनंदंचगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षं सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकीर्तिनूतनं पूर्वपुण्येनभो ःत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्धमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्धमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणाकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं विलम्बसे फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्टा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहें श्रेष्ठकुल विद्यावान अवल तेज दूसरे की बातको तोले सत्या सत्यको पिछाने एक जीवकी आशा लगी रहा करे और जीवोंके खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहोंके दान मन्त्र जाप करनेसे मनोकामना पूर्णहो भाग्य और वंशकी वृद्धिहो येजीव तरह२ के दुख सुख गायत्री का जाप्य करानेसे घरकी पितृपीड़ा शांतिहो कितनेही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरूष हो हीन दशामें विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ट दशामें अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्याराहै एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है। सो विशेष पुरूषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय, बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्स [illegible] को [illegible] दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचित्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टितःकुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाकांतिप्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरंव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतये: तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडशाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषंवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायागर्भयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजायते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षेवामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यश्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वाँरिंशा
वधिंततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्टिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वाजातितोषयेत
प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वंपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतमँहाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं
भवेत्सौख्यंश्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणचुधार्थोभोजनंददेत सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ओं नमोअकाल
पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणौवजपित्वा
सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ
स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच
महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वालाहो विद्यासे बुद्धि विशेषहो कईबार धन इकट्ठा करे फिर खर्चहो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसामें रहे है उपाय दान मंत्रसे मनोकामना पूर्ण होगी और कहींसे धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभहो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिर मानता रहै पुण्य कर्मसे सब सुख मिले भूमि लाभहो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भलेमें रहै कभी किसीका आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें यह जीव शूद्र वर्ण था परंतु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुतसा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वसहो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसीसे पाप का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थबुद्धिमान्नर निजकृत्य कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदैवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तश्चात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोलजीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणः अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानश्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम् उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त पिशुन्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं धनयानश्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति दारुणम् कदापिकुमतिप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मोन्यधनंसर्वंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रश्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेबृणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देच मंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलश्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभकृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभनसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्धित्रिंशेवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्यासमायुत पत्नीकष्टंविजानीयात पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहेपिमंगलंकार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् ग्रहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाद्धमारभ्य अकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापि अयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजापकुवेरस्यतस्यदोषनिवारणः खवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताद्धमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल यहहै कि दो दफे रोजगार की वृद्धिहो और फिर मध्यम होजावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभालकर रोजगार के कामकरे परन्तु नाकिस दशामें चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनंदमें बीचे कभी किसीका आस्तीक नहो अपने कृत्यसे निर्वाहकरे एक समय ऐसा भाग्य उदयहो कि सर्व प्रकार के आनंद भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करनेसे सब प्रकारके सुख प्राप्तहों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपायसे सब शांत हो आयु बड़ीहो पुत्र तथा गृह सुखकी प्राप्तिके निमित्त संतान गोपालका जाप्य कराना श्रेष्टहै वंशकी वृद्धिहो पुत्र पौत्रोंके सुख देखे एक जीवमें विशेष प्रीतिहो हीनदशामें विशेष चिंता और क्लेशहो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव कुरुक्षेत्र में जन्मले नगर का प्रधान अतिधनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जानकर देदेतेथे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोग [illegible] सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ।।

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलविदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्माननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रव्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणायुक्तसुशीलो
कांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रबलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्च क्रियावृत्तेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म
कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्धके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषोमित्रतांव्रजेत क्रीडितश्चविशेष विद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशा आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राद्धकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राद्धप्रांरंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

अहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिरवकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशव क्रमंतथा चित्तचिंता विशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वंपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चिन्नंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांतायुक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतयेनूतनंकार्यंपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्वलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योमचत्वारिंकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पण्यफलोदयंत्वसदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारीसुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाङ्ककेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्यान्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगतेवर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपात्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ।। भाषा ।। इस कुन्डलीका फल यह है कि विलब से मनकी कामना पूर्णहो रोजगार लाभ बढ़े युवा वस्थामें विशेष भाग्य उदय होगा बड़े२ रोजगार करे किसीसे मिलकर धनका विशेष लाभहो प्रतिष्टा बढ़े पश्चातमें मनकी अभिलाषा पूर्णहो प्रथम बहुत जीवको दुखमाने फिर संतोष होजावे यह जीव विशेष छलछिद्री नहो और छलको पसंद नकरे नेक नियत के रोजगारसे पालन करने की अभिलाषाकरे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्तिहो एक अल्पसे बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहै फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े२ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीतिकरे किसीका बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी२ दर्दसा हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जातिथा अपने षटकर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथको मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक होगया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ।।

कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानुरक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराड्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः मिष्टानलवणंभोज्यंपक्कमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत शुभम् धर्मैणधनवृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्टरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्मप्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरोधीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासवैं परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते वृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्यपरीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंतात्रिशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोगितथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोर्दिताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्माद्यत्नंचकारयेत् वृहत्वोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातमहाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत् मिष्टंमनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहूक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हितम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगानमहोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेणचित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेंन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोह्लानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर द्वादशाद्वोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहूद्रव्यव्ययोभवेत बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिण कदाकालेमहाकोपंचिच्चचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधितत: प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्टाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णंसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अत:परि सुखंदीर्घंदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् शून्यषष्टमितिमायुपुण्य कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीमें ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टावाला भाग्यवानहो सब तारीफ करें सलूक करनेवाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्यके काम करे भूके कोदे ईश्वरका भक्त सत्यभाषण करने वाला कईबार बहुत धन प्राप्त करे रोगोंसे बचे सत्यासत्यको पहिचाने शरीरमें फोड़ेका चिन्हहो कामदेवकी उन्मत्ततामें न्यूनबुद्धि होजाया करे जीवकी चिंताको गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्नकिये अधिक क्लेश पावे धनका संदेह जीवकी चिंता आदिहो गुप्तशत्रु विशेष हानि पहुंचावे शरीरमें पीड़ारहै काम होता२ रुकजाय तथाअधूरा होजाया करे इस जीव को बड़े२ भारी खर्च के कामआवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़े२ दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

ग्रति होते हैं हेतुका पूर्व जन्म में वजीर श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़ा दान पुण्य लेता और धन को ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दोनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्टितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुश्चितनं गृहबंधुविरोधञ्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्तमोदेनपूरिताः कारयेद्वंशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायुभोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणचिन्हभवेद्गात्रेमध्यजानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्थविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं रिपुणंकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवनलुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीतिरिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रत्तथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी स्वार्जितंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालोपिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्रमितेब्देतुशरचंद्राद्धकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्यव्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्धमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्तचिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदोस्थत अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्रराममितेवर्षेत्राणत्रिंशाद्धकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुक्खितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाद्धके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताङ्कपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहूलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यतः पञ्चसप्ताङ्कमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैर्वाविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्मुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा नहो खर्च विशेष रहै रोज़गार करे बड़ी हिम्मत वालाहो दूसरेकी बातको तोले श्रेष्ट आमदनीमें कुटंबका पालनकरे कैसीही धनकी न्यूनताहो परन्तु खर्चका काम कभी नरुके इज्जत से काम हो जाय चित्तमें भयसा रहा करे परन्तु भाई बंधु अपनी सम्मतिके नहों युवावस्थामें कई बार धनकी चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंशकी वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहै घरकी पीड़ाका यत्न करे एकबार कहींसे धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मंत्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्णहो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव क्षत्रि कुलमें नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेनाका अफसर था युद्ध विद्यामें अति चतुर था एक समय संग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे
उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसो निमित्त चौंटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृवाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातञ्चगतोद्रव्यंवृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणभ्रमोपिबहु मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यवृहत्वोपिसर्वेंपूर्णंसुखान्वितः सुमित्रमेलनं चापिमिष्टबाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यबृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धंप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो रूपचिंतनं प्रथमेद्वेरुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेंचपञ्चाब्देबृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीममायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा क्रमंवर्षंतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलञ्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुथोगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घंउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्त.मदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासत्राविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणांभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोंक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वं पुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हिगतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंतिराजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथा त्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्देईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घंतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्यपौत्रजन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्धमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहनादिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्तमितिमायुभुञ्जीतोपराग्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े२ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनीरहै परन्तु खर्चके कारण धन जमा नहो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसाही भारीकाम हो ईश्वर की कृपासे सब इज्जत प्रतिष्टाके साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जतकरैं किसीसे तृष्णा नरक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन नरक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोज़गार करे कईबार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रोंसे मेल रहै मिष्ट बाणी बोले किसीको कठोर वाक्य नकहे बहुत निष्प्रयोजन नबोले पंचम स्थानके ईशकी पूजा और दान मंत्रादिसे पुत्रोंका विशेष सुख मिले जीवकी आशा पूर्णहो अल्पोंके दान मन्त्रादि उपाय करानेसे आयुकी वृद्धि को श्रेष्टहै हे शुक्र पहिले जन्ममें ये ग्वालवंशीथा विशेष धनवान हो कुवां खुदवाताथा तिस भूमिसे परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होनेसे कुछ द्रव्य राजाने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाय सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाया सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर ग्रहापूज्यंविशेषोफलमाप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शभानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्माद्भयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतंलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जोतोकर्म बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्णभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीचं चोरभीतोपिगुप्तता आदौमौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतबाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेव्रणविस्फोटकादय मातृ चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा मनंदिता सुवर्णारजिताभर्णावेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मणाशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो कामात्कंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभावितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्रांकमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षसुखं प्रा प्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बुहूविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिग्राशक्तंमित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणालोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्य
मात्रञ्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंत्तिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि
विशेषेणावृहत्वोजायतेध्रु वं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षित
भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवग्राशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत्त पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिर्दिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे
भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिंकाव्यचित्तचिंताविनाशनम्
युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभुविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग
वेदाङ्केतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो
यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दृष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं
वापिकामन्द्रंदासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े२
भाग्यवान ग्रह पड़ेहैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यूनसा कर दिया नहीं तो पृथ्वीपै बड़े२ आनंद भोगता सो अबभी पापग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के
दान मंत्र उपाय पूजा आदि करनेसे फल प्राप्त होगा जीवकी चिंता मिटेगी शुद्ध चित्तसे मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप
कराने से श्रेष्ठ फलकी प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी येजीव लाभके उद्योग में रहे परन्तु मरज़ीके माफिक कार्य विलम्बसे बनेगा और
काम की सिद्धी होगी बड़े२ खर्च सिरपै झेले घरमें पीड़ा क्लेश होजाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ हो न सके मित्रमें
मन फंसारेहै और शुभकाममें विशेष धनखर्चहो बड़े२ फिक्र और आनंद देखे एकसमय नया जन्महो चित्तमें नई बातसोचे मित्रकी और लाभकी
बातोंमें चित्तलगारहै यत्नसे आयुपूर्णहो हेपुत्र पूर्व जन्ममें येजीव शिवमन्द्र का पुजारीथा चर्सभंग बहुत पीता औरोंको पिलाता एकसमय शिवरात्रि
को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके
धनसे खूब चर्ससंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

की फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हें बचआयो उसके
धनसे खूब चर्सगंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तदान दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्धिजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्ठआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकार्णोभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दं बालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्टतिगेहेकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशाद्धमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रश्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसंविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाद्धत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोद्यानंदतापिस्यात कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्यमवाप्यते भागवृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरागगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं ,कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेवापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वंआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमाशुभाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्मपत्रीमें जो ग्रह पड़ेहैं उनका यह फलहै उच्चपदवीपावे किसीके चित्तको दुखनदे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वालाहो कैसाही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्यनमाने अपने लाभका ध्यान बनारहै चित्तमें प्यारे मित्रकी याद बनीरहै उत्तम आजीवका से पालनकरे बड़ी इज्जत प्रतिष्टा वालाहो बहुतसे मनुष्य इसकी आशामेंरहैं अच्छे२ वस्त्राभूषण घरमें स्थितरहैं एकसमय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सोकुछ नसमझे पुत्रोंके विशेषसुख और लाभके कारण संतान गोपालके मन्त्रका जाप्य करातारहै तो वंशकी वृद्धिहो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजायाकरे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतहो हेशुक्र पूर्व येजीव ब्राह्मणथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया बोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

जन्म मुखपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतिहो हेतुके पुनः यजावे ब्राह्मणोंथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया बोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ।।

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपालयतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेद्यत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं पक्षिणांअन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेल्लाभंचित्तआशासुपूजितं बृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णभविष्यति शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चित्हानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थितेमनः आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्यमनंदिता प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट विनश्यति तातलाभविशेषेणमातगर्भान्वितोभवेत भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य व्योमचंद्राब्दकेतथा विद्यारंभकृतोचापिअंकाभ्यासश्चवर्द्धन बालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं तातमातअनन्दिता नगचंद्राब्दमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यश्च कार्यमात्रोभविश्यति अनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घंव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य तथाचपञ्चविंशति आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आपदुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाप्तये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखलोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाब्दमागम्य शरचत्वारिंशांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्यभूयसे सुतपौत्रसुखसर्वेजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्ठावधितत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदत्रानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वंआशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता अष्टसप्ताब्दमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहै कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहै तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ठ कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहै चित्त में कपट न हो आनन्द में रहैं एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहै अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव
अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविंह्लम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्वकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुं समंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयातमंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेबंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तबार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामसितेब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयातस्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ॐऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषित: सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेणअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तम: ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारण: बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकायोश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाद्धकेवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्ठया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवानोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशय: पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशय: चंद्रसप्तमितेब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापितहैं तिनका येफल है कि बड़े भागवाला जीवहो कुलदीपकहो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बीहो न्यून कारणसे चिंता विशेष मित्रसे मिलने की इच्छा रहे दो समय धनकी विशेष प्राप्तिहो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थानके ईशके कारण चित्त हटजाया करे दो ग्रह बलवान पड़ेहैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता२ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभके कारण एकादश स्थानके ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्पसे नया जन्महो ३४,४४,५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसीका बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्चझेले हेशुक्र पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यबादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद् सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयातघूटिकाप्रतिशांतये तातमात सुखंलोकेआनंदभुविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम् वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकलाभम्गुप्तधनश्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकवर्षेबाणरामभितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा भ्रातितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट विजानीयात्प्रितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥ शुक्रोवाच॥ केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवत्‌चरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत्‌ अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्याययददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्ससर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशयः पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम्‌ गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत्‌ चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम्‌ चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत्‌ पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम्‌ मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेऽब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम्‌ मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत्‌ चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्रायते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुन्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष आतयोग घरमें मंगलाचार खुशी जीवका ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थानके ईशकी पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चितवन संतोष वृत्तिहो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिलजाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिसके शाप के कारण जीवकी चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात भाग्य वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम् अर्थप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यंपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो वार्तयाचितः चंद्रस्त्रांमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतिष्टया रोगश्चप्रथमंवर्षे द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेव्रणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोगसप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम् नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवंमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशभितेद्वेचबाणनेत्रमिते तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येबातपित्तेनपीडनम् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनदानेन पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम् पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टंचनददेत साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यरामभितेतथा शरलोकाद्धकथ्यंतेबालबृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्धकेवर्षेव्योमवेदभितेतथा राजद्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्वय

नसंशयः षष्टवेदाङ्कवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रञ्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने परञ्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंब्राह्मणायप्रदापयेत् तेनरोगञ्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनञ्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्वेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महद्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुर्भवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मनकी कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ संपूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्टा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य संपूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छूवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमिलाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखंवाच्यंबालबृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बालक्रीड़ाकिलोलश्चजीवबुद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्याविसार्जनम् वहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रव गाथाचकथ्यते तातलाभभविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम् पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृतेदानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेब्देचव्योमराममितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्यविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा अकस्मात्उपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापंचभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारण गोवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षेशून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम् पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत पूर्णंयत्नेनभोकाव्यनिश्चमञ्जायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वांअग्रजन्मपुनःपुनः चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्ताधर्मेस्थितंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्ताचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदानञ्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसी विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेब्देचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखञ्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ट है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्यकरे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ट है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला ग्वालबंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश होकर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित होकर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो
जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ।।

श्रीगणेशायनमः एवग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेब्देज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्र औषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंममः तातलाभधनंबृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्य गाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समबालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेतकाव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेब्देचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामामितेब्देचशररामामितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिंमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाङ्केवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रह गलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूमकाणिकानिचः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्रप्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेंशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिनंसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः रौजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् त्रिवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचारयेत् चंद्रषष्टमितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयातकफवायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वंसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णापक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहे पश्चात् आराम मिले अल्प बीचकर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्टा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मनसे करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ट है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्टहै मित्र में विशेष मन रहै मीन रेखा हाथमें श्रेष्टहै एक बृणका चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्टहै किसी के चित्त को यह जीव न दुखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंशमें था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

चिता और एक अल्प आव सा तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पे गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वँश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विजरतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुसुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम् दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोर्चितनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेबाजतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेंकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा भगिनअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रश्चमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पजीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चन्द्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहापूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनन्दभूमिमण्डले जीवचिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चन्द्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्केशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभोभविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्तनान्यथावचनंकवे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टवाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्रस्वरमितेब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेनतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्कचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्महत्व्याधिऔषधी सेवनंबृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधबंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस प्राणी की कुन्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डराकरे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ट है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमानसी हो जाया करे एक समय अचानक विपत्ति रंजसा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ट हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्टा वाला ग्राम पति जमीदार था दान पुन्य भी विशेष करता था एक समय इस जीवने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमत्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष बृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्णहो और जो जो एक चिंता में [illegible] लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विजरतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्ष्णः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेऽदेचदंतपीड़ा ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकुष्यदेहश्चजायते वृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचितव्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो बालक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्मभितेत्तथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेत्तथा व्योमरामाङ्कमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुश्चबालकः चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रामाङ्केवर्षेशून्यवेदमितेत्तथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्चपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेवाणवेदाङ्केतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवास अकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णंताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वंएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वंविनश्यति शरबाणमितेऽब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादंचधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् अमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंतोलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वंगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपंचईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्रांगवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृधिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्ष्ण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन की प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष बृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की बृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उनका उपाय जो कुछ लिखाहै सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक२ प्रकार की बार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीवका दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वयं प्रतिष्टा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फलभी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्रपर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवाकर और तांबे के कलश में घृत भरकर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रिके समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंशकी वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोअसत्यबचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदिने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये वृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीवबृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडित पितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः चंद्ररामसमितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्व गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयात्गुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम् अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मात्उपद्रोवाकिंचित कालशांतये चंद्रवेदमितेब्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणश्चसंकल्पंश्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेद्वेचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेतशुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षैरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहद्रश्यते अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्रीका फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेषरहा करे और हेशुक्र इस जीवका खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईशका पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो आत योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीवका दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युञ्जय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहै चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्टहै विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर रहे ।

लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो
वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर हो ।

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतःश्रीमान्जन्मबाधाविधानतः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया दीर्घकार्योपिश्रागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति नवीनोचितवनंकृते प्रथमेऽब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं वृथाव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भगनीयोगश्चप्राप्नोतिश्रथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं सुफलंतथा श्रष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा परिभाषितः पञ्चदशेश्रष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंश्रथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयाद्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयाद्श्रौषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिता शरीरजं षट्मेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यश्रनुष्ठानयथाविधि हवनंब्राह्मणं भोज्यंवस्त्रश्राभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणश्रानंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते श्रानादरस्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडव्ययश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो वत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानबृद्धि करमीनश्चश्राकारीसर्वश्रायुहर्षकम् पूर्णश्रायुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिञ्चित्कालशांतये चंद्रवाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकामबीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगत्रनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहै यह जीव धनका उद्योग बहुत करता रहै और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ट फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य बार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की बार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्य पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुलमें चित्र गुप्तवंशमें था और हस्ती घोड़े बाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्यायसे अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सरवस्व जाता रहा सो पंडाने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिसके कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसतकीर्ति कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितीयेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो ज्वरपीड़ाज्वरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलश्चआनंदभूमि मंडले तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेश अनुष्ठानं पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखश्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणश्चसुताजन्मन संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानश्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टश्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये घृणव्याधि शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनंव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते चंद्राममितेवर्षेबाणलोकमितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नोपिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम् अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तंचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षे शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंसुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यंधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तश्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केंद्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहै चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्टा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो वृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन बार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईशकी पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैंकड़ों मनुष्यों को पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैलका अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रियः शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके ॥प्रथमेद्वितीयेवर्षेंमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो जातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेंभगनीभ्रातृप्राप्नुयात् तातमातमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितीतलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रेश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेंशून्यनेत्रमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने कार्यंकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेंबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचयुक्तता नवीनोकार्यंकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्तव्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया उों, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्ररामभितेवर्षेबाणरामभितेतथा शून्यवेदाद्वमध्येतुसर्वगाथाच कथ्यते; चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र दानंचशांतये नवीनोकार्यंकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणनान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाङ्के केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषट्मितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मातमहाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायप्रमनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने, चंद्रजीवमहादुखं गुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वाचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नश्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणश्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फलहै कि ग्रह बलवान आनकर विराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्टा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े२ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बचकर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े२ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश होकर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में होगई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंब्रजेत दयावंतसमाहस्योपरकार्योंपितत्परः सदाहर्षेमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीसुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तबृत्तिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृणव्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्येधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीतिममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानञ्चशांतये पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाङ्कवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशञ्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्रराममितेवर्षेबाणरामञ्चमध्यमा शून्यवेदाङ्ककंमध्येसर्वंगाथाचकथ्यते अर्धआयुगतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सवमंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययोयोगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाङ्ककंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमामंत्रजाप्यञ्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोभंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत नवीनोवार्त्तयाचितवाहनादि सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मातमहल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्ययसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यत्राभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वंप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगत्रनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णंश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तदत्त्विप्रसंकल्पंनृपतिकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचितथो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योगका यह फलहै कि बड़े२ खर्चके काम संपूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्चका भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीवकी आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक बार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हान हो चित्त में भय सा रहै फिर धनकी प्राप्तिहो स्त्री से प्रीत और घरमें पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्पसे बचे जीवका दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पंडा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

चित बहुत दुखी हुआ और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से
राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टवाणीचभाषणं लोकेसहस्त्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिश्चानंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तंमानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिन्ताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग व्रणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेत्रैं त्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्च विद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षें सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेशं
अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपश्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षें बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहा भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वा मंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यं व्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्यापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोत्रा धनव्यर्थविशेषत व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्रराममितेवर्षें बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाङ्कमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये बाणिज्योकार्यकंकृत्वो धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्र भूमिमध्येच स्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्त वैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रश्चप्राप्तये शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तश्चधनंप्राप्तिभूमिनाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवामकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारभितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि इस जीवका चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं है किसीका बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एक ब्राह्मण तिसका मित्र था कुटम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मरगया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रपुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवें ज्वरपीड़ाचरेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षें मंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किंलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षें शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोति पत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यतिं तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात् तातचिंताचमातकं गुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया नानालाभकंप्राप्ति भाग्य वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षें शून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंति भृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण. भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्रराममितेवर्षें बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्वमध्योपि सर्वंगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथा वर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षें बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंता शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात व्याधीवृद्धिदिनेदिने महाम्रृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधींचधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्र।प्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षें शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनंद दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छुटे आठवें में सगाई तातका धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घरमें मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तातको लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्टहै नहीं तो जीवकी चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वालाहो इन्द्री में पीड़ा कामकी उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े२ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्पसे नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनीरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यो का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

बड़े कार्यो का विचार पूर्ण हो पदवी बड़े प्रतिष्ठा बड़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहूभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहूसेवीनराभवेत मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यात्तो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीअरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् त्रिद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकं बालक्रीड़ाकिलोलञ्चभग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षें त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षें शून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचितवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षें शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यते शुभकार्य धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरज चंद्रराममितेवर्षें बाणराममिते तथा शून्यवेदाब्दमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेब्देच शून्यबाणमितेतथा चंद्र अल्पदुखंशुक्र दानमंत्रञ्चशांतये करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंतात्रशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षें शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखांव वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशांतमविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षं सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थ ईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णाविजानीयात व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा व्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय ॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता हैं भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धनका मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडाजी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर ग्रहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवीं नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामांदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नगीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्ययवामयोगश्चप्राप्तये अल्प विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रश्च मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नोप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्चपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मातउपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता शरीरजं कार्यंमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तश्चधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सव मंगलम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगश्चप्राप्तये गुप्तचितामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानश्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारश्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंद्दश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढसुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका यह फलहै कि ग्रह बहुत उम्दा आनंदसे अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदांत मतहो स्त्रीको चित्तमें पुत्रोंकी लालसा बनीरहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ठ है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभकी वृद्धि हो अकस्मात् प्राणोंका भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर नरहै गुप्त धन मिलें शत्रू हो जोर नचले राज्यद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तटपर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आसक्त रहते तथा देवतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत समाद्दश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान् सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा ज्वरपीड़ाबृणंकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेरांतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवौनो कार्यकंचिताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामामितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेऽव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवीचप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचितनं आदित्यहृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधोऔषधीसेवनंवृथा वेदसप्ताङ्केशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रतापके बैठेहैं मनका गुप्तभेद किसीको नदे विद्यासे बुद्धि विशेषहो सत्य बोलने वाला सबका भला चाहे पराये काम मनसे करे पिछली आयुमें बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीवकी तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईशकी पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्णहो एक जीवमें चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे थां परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण
को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोङ्गांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणा:परिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
मृ०स० संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानश्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
फलित विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
४५५ मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यरामभितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्राममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणक दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यश्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणकुर्यतमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयातऔषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षे षट्रसआद्धमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोबाहनादिसुखंमहत उच्चपदवोसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी कालमें हो सत्य वचन बोले श्रेष्ट जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह २ के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेषहो अकल तेजहो दूसरे की बातको तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनिका मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे काहो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी कालमें खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काममें खर्क हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूहका सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दंड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की बृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दामदे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् बृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं
सुकीर्तिंचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्य
पुनरन्तेसुरक्षण पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंवृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविन्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदंकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंरुजंसर्व
विनाशनं वेदवर्षाचपञ्चाब्देषष्टमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घंसुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्ध बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेजननाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवोमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभौजन्ने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थांविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योर्हर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाश्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहूचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखोलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रभूषणांश्चैवनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये बृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुण्यसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात नगवेदमितेवर्षे शशिपश्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययात्वंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चांतरोकाव्य व्यालपश्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वें प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्ट्यामितिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फलहै कि ग्रह श्रेष्ट हैं और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुखदुख देखे इज्जतके साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीवकी चिंता रहै छलछिद्रसे जले सत्यासत्यको पिछाने किसीका बुरा नचाहे हीनदशामें फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्तिसे रहै आनंद मानकर बिताये एक अल्पसे प्राणोंका भयहो सुयत्नसे प्राणोंकी रक्षाहो पूर्णआयु भोगे तथा लाभेशके पूजन दान आदिसे विशेष लाभहो हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव ग्वालवंशी था बड़ा धनपात्र था मथरापुरीके समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकारका आनंद पाताथा एक समय मूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसको ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

एक समय भूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसकी ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो
नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण्येनविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभश्चिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेक्त चित्तचिंतान्वितोभूयश्चिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयश्रनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ागृहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
व्रणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालवृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेरंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदबृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतमहोत्सवं विद्याबुद्धि
बृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाऽयविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुरायकर्मसुभक्तित: सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाऽयतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागम: गुप्तशत्रुविशेषेणभय भीतीभविष्यति आनंदश्चापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहेमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाद्बमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावतकालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यजायंतेसर्वपूर्णभविश्यति सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठित: चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेण आनंदश्चापिसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयावनृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान पुरायप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यश्चागतेवर्षैपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानुसारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुरायकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाद्बमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवदिश्यामिमयानघ: ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवानहैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े २ खर्च के हैं सो चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दौनो भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा पूर्ण हो बड़े २ सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म भ ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

हरिद्वार में रहता जल का शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविघ्नानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यबृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेकृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यंरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनितश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घंवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेबृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहञ्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचिन्नंचैवोपिव्यथाकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहेकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैष्वेश जायतेपुरायकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोस्सर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाद्धेसुता पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतन सत्यवादीगुरुभक्तनृपात्मामान्यभवेत्सदा द्विजदेवसुभक्तिश्चविचित्रोवाक्य ब्रवीत् चत्वारिंशा वर्विवत्सविशेषोभागवर्द्धन त्रिवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुप्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे मानकार्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाद्बसंजातंव्ययमपञ्चावधितत: मनेच्छापूजितंसर्व विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्धिमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वंपत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिमुंख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख महत् प्राप्ते चंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलश्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै प्रथम मध्यम भाग्यहो पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्रसे गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहै तथा एक जीवकी चिंता से क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हों पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में [illegible] शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठफलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहा अधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनत्तदा काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहश्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्यप्रतिष्ठत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्ठप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णायुतोजीव सर्वेशांशुभचितक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः वृणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुन्य प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालबृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बत्सरोवृद्धि बाल क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षें नगनागदशाब्दके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमौदिता शशचिन्द्राब्दमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्रायचितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेत्रषेंसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टताशनं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुण्येन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाब्दमायात शरविंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणाद्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण चितचिंताव्ययपुण्यं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलाण्येवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऋणात्रिकारेण महादानेनशांतये चत्वारिंशावधितात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामशाखिविशेषेण भूमिभंडश्चनूतनं वान्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वं स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फल नहीं करसक्ते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगल केतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्यकी बृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय नबनेगा मध्यम लाभहो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रताप से आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशा में कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसी की बुराई निन्दा न करे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्मभोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष बृद्धि हो ॥

शरीर में वृणोंका चिन्हहो या शस्त्रघातहो ह्युक पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दोसी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म भोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पुत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रक्रत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणापीड्यंते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहूकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तश्चशांतये कृष्यदहोपिदृश्यंते भूतछायाश्च
विन्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालबृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविन्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालबृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसाख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वं भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्धमारभ्य वह्निनेत्रांतरोनथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वं यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशाशुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवन्हिगतेकाव्य तथाचपचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वेषांशुभचितकः दानमन्त्रसुपुण्येन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नक.दाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्दकेतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुत कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दमर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसाख्याधिकारीच सुयत्नादिफलप्रद। शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवर्धितत: द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददीर्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधोसेवनिस्फल। स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगत अन्यसर्वसुखंदृश कुलभाग्यविवर्द्धनम् पञ्चपंचाद्बमारभ्य शून्यषष्ठादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंबत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्वसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे मतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रसषष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहताहै गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के व्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

कहा से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के व्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसो से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव यदालाभविशेषेण कदादीर्घंव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं नूतनोजन्ममण्यते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदावजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं वृणचिन्हश्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम् उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मश्चमोदिता आदिवर्षांत्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सुयत्नंशांतिसर्वदा वेदाद्ध पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविह्वलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण लोकाचारश्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं ग्रहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सुतापुत्रसमायुक्तो लाभकृत्यावशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोह्यानंदतोपिस्याद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्यं सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र चिंतागतोगुप्तं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यसिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यञ्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारो भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पञ्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मनेच्छापूर्णंतोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रञ्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्भयमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगद रुग्ण रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्ते वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीवको मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसेकरे किसीकाबुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमावे [illegible] सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ।।

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्ठईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान कथ्यं।गूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनदृश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्टाभंगचिंतयेत् जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौम नमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व जायतेकुल दुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरं आयुपूर्णपुनर्भवेत सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतच्छायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घटाकर्ण तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षंसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमगलंगेहनवनारिग्रहागमं तातभग्निसमायुक्तोमोदितं प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्तंतथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिः सद्यशांतिभवेत्तेन आनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स तथाचसरचंद्रके विद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिर्भीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्माज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाब्दसमारभ्यतथाविंशाब्दमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपोड़िता बुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमे श्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं विंशे ऽपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनागम द्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदान ंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंमद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितो रसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावर्द्धीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यत्तंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्वयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्टित पददीर्घमुपस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरितः मासेसम्वत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दान ऋसुपुण्येनक्कुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवा ग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता मासेवैसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाद्धमारभ्यवायुकोपोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा रुजंगतः शून्यषष्टाद्धपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुण्यकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्रहो लाभ मध्यम रहे काम होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेशपावे सूर्य मंगल और राहुका दानमंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे सो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

मृ०स०
फलित
४ १

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृत्तंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यंज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभञ्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुदृष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातःसर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेयुक्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललर्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्रागाभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णभवेनरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रञ्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रञ्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राङ्केकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीति रूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनरदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राङ्कमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राङ्केकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

द्रहुलाभप्रभावन सुदुग्धंमहिषीगावदापदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्धमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोक्तसमुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्येत्कार्यंसुप्रसिद्धसुखान्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शनःतथापिसर्वंकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचन्द्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशानकेनथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चावकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम् मासेवर्षेसुखंजातेअकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्टदारुण सर्ववाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यञ्चप्राप्यतेनरनारीसुक्रीड्यन्ते शोभिनेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतप्तंविशेषत दानपुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टात्रधिंचास्य आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितिय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीत रहे अपने दुखसुखका सब वृत्तान्त उससे कहदिया करे और विशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीति रक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त न दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभ खुशी देख और नाकिस दशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेष दीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंता सी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रौगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लठ्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

जमींदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तिकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यप्रतिकर उसे खाया करता यहदेख आप क्रोधितहो उस बिजार
को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशाय नमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्थजीवनं मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहा भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यंते मंगलश्च महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीते सर्वकर्मैंशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वैंषांशुभचितक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम् पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचयुक्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे द्वादशेवर्षे मध्यतद्धदाम्यहं पितुचिताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविषेशेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम् पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात् भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहाविदाशत प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदिता दीर्घचिंताविनष्यंति जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाब्य नगयुग्माद्धकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़िता सुतःपत्रसमुत्पन्नोमंगलंहि दिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेण अन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वच रूपयौवनविव्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रोड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुञ्ज दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नान्विवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र मनंदिता षष्टांषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्द में प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूछता ठाकुर के मंदिर में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते श्रमोपिजायतेदीर्घं ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्ठित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वैप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचिनंउद्यमेणधनाक्षय कुलश्रेष्ठसुभाषीचसर्वैषांतोणेरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते लाभंअर्द्धकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्ठपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसोउद्यमोपुंसञ्चंतेसौख्य विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्धितं:येचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णंगृहेपूज्यं उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुज मातृक्लेशमहद्दुखंजीवआशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम चञ्चलांचलंबा ।शिशुक्रीड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच कुलस्त्रियः वन्हिमेकाद्धमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम् कामेचेष्टाविशेषेण सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाद्वकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तंअजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनाञ्चकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवह्निसुवर्षाणिपञ्च त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कर्माश्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाद्धमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकाव्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वच्छमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाद्धमध्यमा बहलाभप्रभावेणचित्तोह्यानंदशीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंप्रहत्वोपदप्राप्नुयात ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्तवृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभयदीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरं ताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगयशांविता आषाढशुक्लसप्तम्यांनिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुन्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत मान धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ठ कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े २ काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने
अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्ठसुखोलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वँमानवृद्धिप्रशसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचकलशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्ठविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतेविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेऽब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेऽब्देवृणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्धमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षैतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्धमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंतेआशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्धमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावतकालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागमः फलमुलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपीतुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतेयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिर्दिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मप्रमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुपक्षञ्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यच्छनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत्

शांतिव्रतिसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य धनसंतानप्रतिष्ठित रसविशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवह्नितथांतरे गुप्तकष्टनपाड्यंतेअजीर्णं बातसभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्द्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेंधनपुत्रादिप्राप्यते षष्ठत्रिंशाद्धमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याश्च युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेंशून्यपञ्चावधिंलभेत पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासु ीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदवाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगवाणाद्धमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताद्धमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोज़गार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोज़गार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानने से बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो
ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घत्वस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिंवृहन्नित्यंदीर्घंभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलञ्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेच्चिंतासदेहोला महानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यञ्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यंधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्ततसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषे॥सुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतौ
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनंमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहाद
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनत्रिंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणवस्त्रप्राप्यतेशुभदशान सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानद्रश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगत्रिंगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतपुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घंमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानंयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिर्बलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातभूमिमंद्रञ्च
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यनेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंवर्धमानबुद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतःपरिसुखं
सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारीसुतंसत्यदासदासांश्चवाहनं भूमिमन्द्रच ।क्षितिचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोव्योमबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसाख्यविशेषेणसर्वआज्ञा.
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर [illegible] स्वर्ग की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः। पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नै॰त्रवमतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्कृयायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः -शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्रिनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेऽब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूत कलवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूमप्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेऽब्देमुखंसर्वंयाविन्मासेचसप्तमे प्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकांसलवणञ्च नश्यतिउदरेरुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते भातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलश्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्धि
तिश्चदिनेदिने पितुदेहभवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित तेनसौख्यसमृद्धिस्यात भृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षंतथाचषोडशाब्दके कष्टञ्चजायते होदाघदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्य विशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासुखचैव हर्षयंतिदिनेदिने ब्रक्षाचपतनंज्ञेयं अथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यतेभयदारुणां
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमिते तथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहायत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत् स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जोवोमहाप्रीतीआशक्तश्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
कनशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभश्चविविधंपुत्रभविष्यंति

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानंतथाविध चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा भाग्यवृद्धिर्बलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातभूमिमंद्रव्य नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यनेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसर्वमानबृद्धि मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिमजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अत परिसुखं सर्वेसुजनेभ्योप्रशसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः आज्ञाकारीसुतंसत्यदासदासांश्चवाहनं भूमिमन्द्रव्यप्राप्तिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसाख्यविशेषेणसर्वआज्ञा. प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणोशुक्लषष्ट्म्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे है शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर [illegible] स्वर्ग की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैःत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्कृयायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्रिनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूत कलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वंयाविन्मासेचसप्तमे प्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकांसलरणाश्च नश्यतिउदरेरुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतश्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुःप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलश्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्ध
तिचदिनेदिने पितुदेहभवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्कचित तेनसौख्यसमृद्धिस्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टश्चजायते देहोदाघदानेननश्यति योगश्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्य विशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविग्रापठतिमध्यमा मासेमाससुखचैवहर्षयंतिदिनेदिने ब्रक्षाच्चपतनंज्ञेयं अथवाउच्चमंदिरात जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यतेभयदारुणं
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहायत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतबाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठश्चकारयेत प्रेतबाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जीवोमहाप्रीतीग्राशक्तश्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्न्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
चनशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभश्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयातकन्याप्राप्तिमथोपित्रा भूलंभश्चध्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचिंतं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्च नूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिबामभागेबृणंयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भौमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्ररामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदते शा।भूतजे पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्णं दानवृताचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेंव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोमपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेंआयुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीवकी चिंता रहे और बड़े २ लाभ के उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावे कभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में व्रन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत होगया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

चत होन पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसो से इस जन्म मे महाक्लेश व अनेक दुखका भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेंननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात महच्छोत्रश्चजायते सहसीदृढसंकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसगात्रिनिर्मुख चौरभीति भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मंगलग्रहमध्यश्चनृत्यगीतादिकंभवेत पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसु प्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमंगलं पराक्रमीद्यशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहुप्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनत्रेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत् सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणाक्लेशितां प्रायशिचत्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापीकूपतड़ागेशुआरामेमोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगणपीड्यते सूर्यदानश्चशांतये पञ्चमेसप्तमब्देषुमंत्रबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसंप्राप्तं पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं नवमेब्देजलोद्भोता दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचितातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा किंकरोमिकुतःसुखम् चतुपञ्चदशेब्देषु कांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनकाभर्णांप्राप्यतेनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधीप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम् नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित्रवेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्देकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगलगानश्चनववनारिसमागमः यतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोषयतेविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिंशेद्वित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते नगरामवाधिंतत यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांब्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यंसद्विजोनतुतुष्यति नाग। त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत गृहहाटधनंसर्वविलगञ्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः परन्तुधनलाभञ्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युंजयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणेंदमितेवर्षेमंगलं ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्य याचकानांधनंददेत सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यते मंत्रयंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाणमितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्थाधनीनरः शरपञ्चमितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम् सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनन्दमंगलं लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात भृगुराजेनभाषितम् ।।

भाषा ।। इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्यकी बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वालाहो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्यमार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों कीं संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जापसे विशेष सुखकी वृद्धि हो पुत्रकी इच्छा पूर्णहो एक अल्पसे अधिक भयहो पाप ग्रहोंका पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा तिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्रसहित संकल्पकरे श्रेष्टब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ।।

लाल चंदनसे लिखवाय घृत चावल मिष्टान्न और वस्त्रसहित संकल्पकर श्रेष्ठब्राह्मण को दे गोपाल मंत्रका जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों को
सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन संतान का सुखदेखे अल्प नष्टहो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आय वाला हो मनेच्छा फलकी सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मआनन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहल्लाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यःकामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेकचित भोगमैश्वर्ययुक्तश्च
कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिद्रुहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्टुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोगप्रपीड्यंतेनचिरंविद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रकं विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात
व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापदुदुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते
सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रौप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं
चिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च
गंधपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगृहपंडनंपञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणां औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णाभूषणं महार्घवस्त्रपात्रंचवर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगंजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुकिंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भोंतसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्दे चन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेत्रसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानश्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीवकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े२ आनंद भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्ज़त प्रतिष्टा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशको पूजादान करने से वंशकी वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटम्ब का पालन करे श्रेष्ट संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राणसे अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें जीवका भयहो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्तहो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत होजाय मान्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हे पुत्र पहिले जनम में ये जीव बडा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्यातक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अंत को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यंत पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सन्मानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जन्म के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे

दान सन्मानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व [illegible] और अनेक प्रकार के सुख और आनंद भोगे ।

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीडायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीस्त्रिया भूषण भूषित रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षैसुखंगता सवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सवैं हेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबुद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुभक्तभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षैंभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्ठमेवर्षै पितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
व्रणव्याधीप्रपीड्यंते विस्फोटकभयंभवेत सप्तमेनवमेवर्षैंविवाहोर्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवैं तातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तंदेव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दंसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्ठोपिबुद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रत्रिंशमितेवर्षैवेदविंशतथैवच मानवृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वादाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविह्वलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मेण

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुण्यकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणपद्ददीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागताः शरीरोपीड़ितंगुप्त आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत सर्वबाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्धगेकाव्यतथाचनभवेदकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवनं सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेन्नत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौख्यंप्राप्नुयंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनी तस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिमत्तम मंत्रदानमहापुण्यसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परंतु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे तिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल बंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परंतु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊको अत्यंत कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पापसे इस जन्ममें चिंता अधिक रहै घरसें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहै लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न होतो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पापकी शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

करावे और आप भी अपने इष्ट देव को प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय संध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्राचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वं प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वं हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्यवादी तुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम् बुद्धिमान्पंडितःशूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वं प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोऽयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागमम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मचक्रोशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपराजय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददेहेदीर्घं पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घं चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था मध्यावस्थासुखीभवेत अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रञ्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणज्वरप्रपीडिता पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्यथाभूयसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेंपञ्चचंद्राब्दकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्टविंशाब्दकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवत्र एतद्वर्षान्तरंशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्रविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम् चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनऽयशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्मायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुरुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णमायुःभवेतत ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्यवाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्याबुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्री वंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुए तिसी से ये जीव महा पाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधी से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महा मन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

। ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे ओंशी पूर्ण हो सब सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभव
द्रव्यलाभविजानीयातबालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेंव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत चक्षुरोगविजानीयात किंचिऽज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनर्कष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाचेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे
चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राङ्ककेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्त्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माङ्ककेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेंच याचमानापितृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाद्धके संब्रन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचितायदाकदा गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्वबाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्धारं नवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंमप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येश आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिंगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिंवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुखः हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनंद हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे । हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यंत युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधू मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

पावे और चित्तमें संतापितरहे कायहोकर बिगड़ जाय सो इसपापका यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचंदनसे उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वरका भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षंतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् घृणाबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवितव्यंनभूयसे मध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागमोनित्यं मध्यसौख्योह्यमाप्नुयात अदन्तारोहदेगुप्तं लोभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिंवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वं दीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुणद्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यंमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्द्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमन सत्यवक्ता सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभभोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमिलभेद्द्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफलप्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासोश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पापकर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत्त नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा वदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महादानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोंपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा त्रस मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घ चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेकचित् अभुतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणात्त्रस सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेगा५म् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभत्रिश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहै कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युजय का जाप वेद की विधी से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेद पाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं [illegible] अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वाभाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्वयसमन्वित दुष्टकर्मेणानपीड्य तेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दीचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितुद्रव्यविनाशीचसुयत्नेनविवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणंमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामवाधाप्रपीडत मित्राणांचश्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्टयुग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ऊँऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्धकेतथा तावत्कालगतेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभं गुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तमे
कार्यजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंकापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोअजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात रामपंचाब्दमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञात्वादीर्घं कार्योंसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टय: विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोंपिजायते आज्ञाकारी सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुशीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणंशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णातोये नित्यश षष्टमासाब्दयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितदांते चमहोत्सवं षष्टोषष्टाब्दमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्या रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेत्तनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रेसुकुले जन्मनात्रकार्यंविचार्यं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतये शुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं मर्हसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वहबड़ा भागवाला हो दासदासी और सवारियों के सुखपावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुखपावे क्यों की इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बनगया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अंत में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय येजीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुवा था बहुतसा पुण्यदान किया परंतु एक समय बहुत सी मदराका पानकर उन्मत्तहो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वशहो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोधकर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यानको बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादिका नाशकरे क्लेश का अधिकारी हो हेशुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुखका नाशहो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्रमें स्थापित कर वेदकी विधीसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो ।

ब्राह्मणको दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको। सब प्रकार संतुष्ट करै तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे
द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे
आनन्दंवर्द्धतेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च
लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात सर्वसौख्या
गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः
क्वचित भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयातनारीभोगश्चस्वेच्छया चंद्रजीवपरंप्रीती
आशक्तश्चविशेषता कामरंगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाश्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मथावा
क्यश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम्
चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहि अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्धंतंदुवख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ
कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधीविनाशार्थंदानपुरायरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्ध
मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोक्वे क्रमेणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन
पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यक्रतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व
पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज
कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्ठत व्योमवेदाविधिवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टभवैद्यो
पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्द्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योद्यमाप्नुयात् मासेवर्षैसुखंजातंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्ममन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घंकार्यवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्ठकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासीसमायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंमवें प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचना मन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ता विनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहतेहैं हेपुत्र इस योगखें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुखपावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता २ रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता २ रहजाय पुत्रके सुखमें विघ्न हो और कभी २ विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते २ उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभवश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हेशुक ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पाँच तोले स्वर्णकी गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत करे प्रेम से चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित्त सुशीलश्च अलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयञ्चारी कुमतिबहू सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान् मनश्चिंतातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीरेरक्षणार्थाय भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचषपातिता शुभग्रहा प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यञ्चजायते शुभकांतिसमायुक्तोनिजधर्मपरायणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्योदयभश्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरं धनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि वेष्टित मातृरोगसमायुक्तेशोत्रवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्धोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्राचँनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी भागसयुक्तआशक्तश्चापिविह्वलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायप्रपीड्यन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने चशांतये रामाब्देपञ्चवर्षाणिवृणपीड़ाचदारुणम् गुडगोधूमप्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षेराजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोऽव्याधिपीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्चयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधिंतथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयंविजानीयात्पापकर्मणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिध्रुवंयातोऽययोपिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे मप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वलपदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायते द्वात्रिंशमिताब्देचशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपुर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाऽव्य आयुपूर्णंभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहै सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मंत्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े २ खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहै प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जनम में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मंत्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ता ग्रग्रेफलयथाविधिः

॥ पतित हो। इस जनम-म पाप का भागी हुवा सो हीन ब्राह्मणों को भोजन [illegible] करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ता अग्रेफलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिकयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्युन चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्रोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वे मातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यवहारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थेमोदतेभुवि कवित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यमममागमः सेवितंकिंकरे
धूर्तैंनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजाचकारयेत घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रेचत्रिंशाद्वेवेद नेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
बृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिवुजापूज्यं धनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वेवन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्ठमे
वर्षेव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंकविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमेकादशेद्वेषुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसप्राप्यबाणामेकं तथैवच गुप्तचिताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वेचविशूचिरोगसंभवम्

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगमंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षैवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीड्यन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणे षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाङ्के आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाङ्केतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेघरणांतजे कदाचित्समयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षट्त्रिंशाङ्कसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानञ्चवर्द्धते पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशातपुण्येननानासौख्यमंगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाङ्केतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घंसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेसून्यसप्ताङ्कप्राप्तने मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसन्तानयानश्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्व लक्षणसंपन्नबातपीड़ा विशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ भाषा ॥ इस अङ्ककी कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीनहो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्तहो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीनमन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुखभोगे हेशुक्र येजीव पूर्व जनम में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपती राजाकी तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परंतु कामवश होकर फिर वैश्या गामी होगया और जप दानादिक क्रिया सब लोप करदी और दीन साधू ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ कालमें पुनःमन संगतिसे ज्ञान उदय हुवा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्गमें लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

प्रवर्त हुवा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख [illegible] लगा रहनेसे पापका फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यःकामनीप्रिया कामक्रीड़ासप्रायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातंसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धोनसंशय अति
मानसमायुक्तःनिजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
खतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तेपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातंप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपालत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकेवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षंचपंचमे षष्ठमसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वंकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसप्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रश्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभश्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत गुप्तशत्रुविरोधश्च अत्यन्तंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभअकस्माद्धनमागम चिन्तोह्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तश्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकमिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिने नवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुखरूपंचलुब्धके षष्टवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्य गायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाण्येव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वंपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबज्रदानंचशांतये नंद षष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्रके ग्रह कुछ विशेष बलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी २ घरमें पीड़ा करलावे भ्राताका सुखहो या प्रेमी मित्रहो खर्च विशेष हो कृपणता नहो सके एक जीवकी चिंता बनीरहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्याबुद्धि विशेष बढ़े पुत्रोंका सुखमिले हीन ग्रहके योगसे काम अधूरा होता २ रहजाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्नहो अति परिश्रम करने परभी मनोर्थ पूर्ण नहो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवाकरे विशेष कार्य का अधिकारीहो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभहो कभी विशेषहो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबूसे बाहरहो प्राणोंका भय जानपड़े अधिक दानमंत्र उपाय करनेसे अवस्था दीर्घहो विशेषसुखभोगे पहले जन्ममें ये जीव स्वर्णकारथा स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छलकरे अन्यायसे अधिक द्रव्य लिया तिससे पापका भागी इस जन्ममें पीड़ित हुवा अति चितातुर रहे इस पापकी शांतिके निमित्त चांदीके पात्रमें स्वेत चावल भरकर उसमें गुप्तस्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मणको दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवावे तो पाप शांतिहो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

फलित
मृ०स०
५०५

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपापग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीर्मुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाव्यग्रबुद्धिनसुस्थिरंभव उद्योगकुरुतेदीर्घलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिश्चिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचित्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुहलीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्वौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचारणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्यानंचसंमग्न यौवनंरूपचिंतनम श्रेष्टकर्मरतोचापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसिद्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मचंद्रामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेसुसंजातं भाग्योदयविशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षंच दन्तपीड्यज्वरादिकं व्रणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंताचदारुणम् अनुष्ठानमहादानं महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषांद्वचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम् द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्रगताव्य त्रिशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नत प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताऽव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा वधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणाश्चहरितिक्यं सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणाऽव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वग्रहसुप्रतिष्ठित शत्रुपक्षविवादंचकार्य भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोल्हानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणासिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रश्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलंसंप्राप्यचित्तंआशाप्रपूजिता व्ययोपश्चावधिवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वेंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेंआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगतिं कर्मभेदेनभोप्राज्ञसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्टा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीवकी चिंता मिटे परन्तुइस जीवकी बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुंचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बातपर क्रोध आजावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्बका पालन करे पराया काम मनसे करे ईश्वर की भक्ति में मनलगावे परन्तु स्थिर न रहे हटजाया करे कामकी उन्मतता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

तिसी कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों को खीरखांड के [illegible] तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजात शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीतिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकत नध्यात्वा चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणापिसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यं अकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यचसिद्धति कष्टव्याधि विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्टग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान नगनेत्रद्वयोवह्निपश्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे, राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः धर्मवार्तासदावृत्तिसज्ञतिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलवृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ द्वेषष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्ठविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिंवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोताताचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यविंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गेंधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्य:सर्वजनैपु स: सर्वसंग्रहतत्पर: स्वयंधर्मरतोभोगी।बहुभृत्यप्रसेवित: श्रीमान्विचक्षण:प्राज्ञ कलाभिज्ञोनृपश्चय: अत:परंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरं निर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससंप्रीति: पितृभक्त.सुतर्पित तुरगात्मनं ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षें चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येंव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुत: कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेंतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगमोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीद।सश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणाउपचारोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिंवत्स: पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्णं भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्टहो बड़े२ कारबार रोजगारकरे परन्तु न्यूनफल कारक ग्रहोंका दान मन्त्र उपाय करनेसे पुत्रोंका सुख और विशेष धनका लाभहो किसी समय कुटम्बसे विरोधहो धन खर्चमें आये शत्रु नुकसान पहुंचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर विशेषहो बड़े२ आदमी इज्जतकरें प्रतिष्ठापावे ईश्वरका चिंतवनकरे अनर्थकी बातपर ध्यानकरे श्रेष्टसंमतिदे बुरेकामसे बचे श्रेष्ट मित्र में चित्तरहै खरचीला हो पोचबात न कहै चित्तमें गुप्तचिंता रहै इज्जतका विशेष ख्यालहो खर्च विशेषरहै एक समय प्राणों का भयहो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहोंके प्रभावसे प्राणोंकी रक्षाहो सारीअवस्था इज्जतके साथ आनंदमें बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मोंसे सुखपावे हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांत धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आगया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसीसे विशेष पापका भागी हुवा सो इसकी शांतिके निमित्त काशीके थालमें चावल भरकर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढक कर ब्राह्मण को भोजनादिसे तृप्त करे श्रद्धा भक्तिसे दानदे तो पाप नष्टहो परम आनंदपावे निश्चय सुखीरहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अग्रवंशप्रकाशयंति श्वकुलंदीपकंतथा बहुकीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुहृढश्चश्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुखवर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशांसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गोविप्रंरक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याचपर्यटनंप्रियसदा द्वयोरल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा भूमिलाभविशेषेणरचनामद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिक्प्रकोपीचकामाधिक्यवलान्वितः सुशीलश्चश्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धनयुतःपुंसः मीननादपरंप्रिय वृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत् क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदाकदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसशयः शूरोथवाग्रामेपुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायतेक्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगश्चक्लेशिता पितुर्चिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम् ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेनसुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्युभीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुर्चितासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्यधनंधातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यश्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठाग्रसंध्यासवंभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्यंव्ययोचापि यथालाभेतथ व्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यत्तंनैवकथ्यत मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षंमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभार्गो चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिंवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रियत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्ठविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षमकप्रमाणश्च सर्वकष्ट निवारयेत् तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परिलोकं फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षं आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्रीके ग्रहोंका बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनंद भोगेगा और कुलमें दीपकके समान चांदनाकरे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भलेमें रहे एक जीवमें चित्त विशेष फंसारहे नई२ बातोंका चिंतवनकरेहै हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतुका पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थानके ईशको पूजन दान वंशकी वृद्धिको अत्यन्त श्रेष्टहै गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होनेसे सब सुखपाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्टपावे प्राणोंका विशेष भयहो परन्तु पुण्य कर्मोंके प्रभावसे पूर्णं आयुहो कहीं अकस्मात धनकी प्राप्तीहो भूमी लाभहो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भलाचाहे मनकी विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हेशुक्र येजीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवानथा बद्रीनारायण के दर्शन को जाताथा सोते समय मार्गमें धनवस्त्र आदि चोर हरकर लेगये प्रातःकाल उठकर चोरके भ्रमसे एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनेच्छ भोजनादिसे तृप्तकरे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णंहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेद दीर्घमान्योप्रतिष्ठित पत्रदारादिसंचित्य स्वकुलपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण

दोषविषय हुवा सो ब्राह्मणोंको मनच्छ भोजनादिसे तृप्तकर वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादिसे तृप्त करे तो सर्वपाप शांतिहो सम्पूर्णइच्छा पूर्णहो ॥ ६

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्ठत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविषेशेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात भयभागम दीर्घंद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोक उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीघमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यंधनव्यय: सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा केचित्कार्यंकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणाम् द्रव्यआशामन स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिन्न सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंमित श्रेष्ठलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्यंयदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिका द्रयानञ्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं पुत्रंकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषञ्चतथाअश्वंलाभदाभवेत सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वंप्रयत्नेन शांतनीयोविशेषतः जन्मतेःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टत्राधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयन्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे सुखंजातमातृकष्टांवशेषत षष्टमेचाष्टमवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्याभ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भद्रयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शरीरनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुत्रापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतञ्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनकापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापं आनंदं जायतेध्रुवं सतअद्धिमिनेत्रर्षेत्रिशेशोज्ञाम जायते त्रिवाहोमंगलं कार्य आनन्दञ्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेन्नूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभुत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभुत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभुयसे अतःपरंसुखंसर्वें जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकात्यनानासौख्यसमागम चितोह्यानंदतापित्स्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्धमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षें निधनंदेवसंभव दाहंप्राप्य नदीतीरे स्वदेशे कुशलं विधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीयहो स्त्री पुत्रादिका चित्तवनकरे अपने कुटम्बका पालनकरे सारी अवस्थामें दोबार विशेष कष्टहो एक भारी अल्पआवे नया जन्ममाने फिर दीर्घायुहो धनप्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्चके काम आवें पूर्णहो चिंता विशेषरहे सप्तमेश का पूजन दानादि करनेसे स्त्रीसुख पूर्णहो कामसंकल्प सिद्धहो बड़े २ आदमी खातरकरें जीवकी लालसा बनीरहे अन्तमें पूर्णहो एक कार्यमें हानि विशेष हो दानपुण्य करनेसे तथा ईश्वर का भजन करनेसे पूर्णसुख मिले हेशुक्र पहिले जन्ममें ये जीव कायस्थ कुलमें उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अतिप्रतिष्ठित ओहदापाया देवताओं का पूजन तथा दानधर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बनगया मृग के तीर मारा वह बचगया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदयमें लगा और मरगया तिसी पापसे अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांतिके निमित्त स्वर्णकापत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

बनाकर ब्राह्मण की मूर्तिका आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृतभर तांबे के कलशमें गुप्त रखकर विधि पूर्वक दानकर ब्राह्मणको दे और वस्त्रआभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्टकरे और विशेष भक्तिसे ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान् सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तित्रिवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज यावत्खेचरसंतानेसंयुतञ्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्रृगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत् केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिंकरोपाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादिकंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छंतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितसश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य वर्षद्वितीयेऽब्देज्वरबाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनबृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनायोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भंपीड़ाऽज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन पीडतम् पितुरंधनलब्धिंचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोन्नरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेऽब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेंच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचित्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य तदारम्भ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलंचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत् शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टत्रिंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तंनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ा।विनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोऽयदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकीर्तिश्चचित्तमोदभपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणां औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्टत्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीतादिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्मपत्रमें ऐसे ग्रह पड़ें पुत्रोंके जोड़ोंका ध्यानरहै कन्याभीहो वंशकी वृद्धिहो धनवान् लक्ष्मीवान् परोपकारी श्रेष्टहो लोग निंदाकरें तबभी बुरानमाने बड़ा प्रतिष्ठित नामीहो कईवर्ष विशेष धनकी प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्यकी न्यूनता करनेवाले आवें पुत्रोंकी चितारहै संतान गोपालका मन्त्र वंशकी वृद्धिको श्रेष्टहै लाभस्थानके ईशकी पूजा दान जापसे विशेष लाभहो और पृथ्वीपर बड़े२ कौतुक देखे चिंता औरभीहो अपने समझे वअपने कहे तथा समतिके नहों घरमें कभी पीड़ाहो जायाकरे एक अल्पभारीआवे प्राणोंका भय रहै आयु पूर्णहो कैसाही भारी खर्चहो कार्यहो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्णहोवे हे शुक्रपूर्व जन्ममें येजीव ब्रह्मवंशमें उत्पन्नहुवाथा सो नाट्यविद्यामें बड़ा चतुरथा राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्तहो गई तिसे संग लेकर प्रदेशको भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसीसे पापका भागी हुवा स्वर्णके पत्रपर स्त्रीको मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसा धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

स्त्रीकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखकर बहुतसी धन तथा अन्नमें गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दान करके देवे पापशांतिहो और निश्चयकरके आनंद पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नीसौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्यनूतनमागमः दीर्घकृत्योगृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्यआगमाविचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्तिवर्द्धनं चंद्रशोकरिथताच्चितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यअकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्य नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्पविषेशेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्नवदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्तकौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिच्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहोद्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजातो भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृतमहर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषश्चपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिमहोतले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्यनाशनं दर्शनेअरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुर्चिंतावलीर्यसि तथापिसौख्यसंजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तयेवर्षेंव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रहं नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रंध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथात्रिंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाञ्चत्रिंशाद्धेतन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके त्रिदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थित जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम ,साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनष्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिहचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेंपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेंपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेंधनरत्नानिवाहनं एवंसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञ अकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परमश्रेयस्करहै विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रोंकी प्राप्तिहो सुखमिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहै गुप्तचिता बनी रहै धनका लाभ विशेषहो परन्तु खर्च बड़े २ लगेरहैं आनन्द भोगे बहुतसे कार्य पूर्णहों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मतवालाहो सूरप्रतापी काम की प्रबलतामें न्यूनबुद्धि होजाय नीचकार्य बनजाय कहींसे आशा लगी रहै अकस्मात इच्छापूर्ण होजाय पापक्रूर ग्रहोंकी शांतिसे विशेष सुखमिले एकशोक विशेषमाने जलभयहो या पावकसे जले चौपाये या उच्चस्थान से गिरकर चोटलगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्ठदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत

…शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मणों को
पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा [illegible] संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ।।

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्राभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहोप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत् चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्रवदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति बृहत्वोधनमागम सत्यवक्तासुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशक्तोपिगुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यंइष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंदीर्घ पुत्रकांताप्रतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः सभायाञ्चपलोधीमान् गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुर्प्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलःसर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणम् चतुष्पदात्तथारात्रौविकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आप्तिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गेव्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभत्र नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेब्देचपितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याच्चसमुद्भवः तृतीयेब्देचसंप्राप्त चतुर्थेपंचमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंव्रणोद्भवः तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पंचमात्षष्टमंवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगंचक्रीड़िता सुविद्यायांपाठनोबालचंचलत्वंविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यंचकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबन्धयोगसंप्राप्यदीर्घभागीचबालक शून्यचन्द्रगतेवर्षेपंचचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घंतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेत्वधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्टहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसी द्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायनम्पुनःदीर्घधनंलब्ध्वाकार्यचिंतावलीयसीहीनकार्यभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वे धनपुत्रसुखान्वितः आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधिं काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिंकाव्यचिंतः चापिदीर्घता. चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रंचमोदिता षष्टपंचगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गौदानं श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणंजपेत अल्पायुनश्यतेवत्सदानमंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायू भाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्रमें ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वालाहो मध्यम और श्रेष्ट दोनों दशा भोगे किसी समय कहींसे धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहोंके प्रभावसे चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ को सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक काम हीन बनजावे सो पीछे मनमें बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्रीकी चिंताका ध्यान तथा जीवकी लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धनसंतान का सुख विशेष भोगे कुलकी रक्षाको संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ट बनजाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े२ दुख सुख भोगे परन्तु चित्तको दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी२ भ्रम सा हो जाया करे नई२ वार्ता भोगे नाकिस ग्रहोंका दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करनेसे आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्तदान दे गायत्री मंत्रका जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्म

आधी कामत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का
विशेष अंश खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुरुदान दे गायत्री मंत्रको जाप्य करावे ब्राह्मणोंको संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणसुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यबृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचिन
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचितनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्त्वाकदाचन लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभंचचित्तआशात्रपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपिड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत्त कार्याणिमकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपंचमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणअन्वंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाद्धमारभ्य
त्रिंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलंचगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवन्हिगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाऽव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेंसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्योदयमहत्फलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद.तेसदा नंदवेदाद्क्रमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्तिख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाद्क्रमारभ्यवन्हिषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविषेशेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तश्चरोकाऽव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपोत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपाड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवैं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ट रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रोंमें लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्टा के कारण चिंता विशेष रहै धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोषी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्टा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्तमें समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घरमें पितृ पीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करनेसे वंशकी बृद्धिहो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईशके पूजन से विशेष लाभहो प्रतिष्टा पावे मनेच्छा पूर्णहो हीन दशामें हानिभी हो परन्तु अन्तमें सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदीमें नाव चलाने वाला प्रधान था नवकाके कृत्य से बहुत धन प्राप्तकिया एकसमय एकसेठ श्री अयोध्याजी की यात्राको आया सो बहुत धन नवकामें भूलकर चलागया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्य कार्य में लगने वाला धन अपने घर में धरा तिससे पापका भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवोंमें गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धन

तो धनकी वृद्धिहो सबप्रकार के आनन्द प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धंसुधीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्ठविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविन्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यबहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ठ
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवन्हिवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानश्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोबालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं
नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविन्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्णे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसिविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्वगेकाव्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठंचकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययंचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिचवृहद्भाग्योभुवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपंचावधिंक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगावो दासदासिश्चमोदित। ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदंचगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षं सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकृतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोगत्सस्सुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्वमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यक्रिवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवस् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्वमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणाकारयेत्कष्टशांतये आयुपूर्णंभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं विलम्बसे फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्टा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहें श्रेष्टकुल विद्यावान अवल तेज दूसरे की बातको तोले सत्या सत्यको पिछाने एक जीवकी आशा लगी रहा करे और जीवोंके खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहोंके दान मन्त्र जाप करनेसे मनोकामना पूर्णहो भाग्य और वंशकी वृद्धिहो येजीव तरह२ के दुख सुख गायत्री का जाप्य करानेसे घरकी पितृपीड़ा शांतिहो कितनेही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरूष हो हीन दशामें विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ट दशामें अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्याराहै एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरूषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्रका पालन किया हुवा था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् [illegible] वृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धप्रतिष्ठितं

अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित गौ वत्सों को [illegible] तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धंप्रतिष्ठितं परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत निजकृत्यसुदक्षश्चबहु सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविह्वलोकदा उपायंदानमत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षबृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टितःकुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान् कृपालुश्चशुभाक्रांतिप्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य सर्वसौख्यान्वितोभवेत पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरंव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडशाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायागर्भयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजायते निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षेवामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रञ्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशावधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्ठिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वाजातितोषयेत प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतमँहाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं भवेत्सौख्यंश्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोंभोजनंददेत सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं ॐ नमोअकालपुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मात्सर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेवजपित्वा सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंञ्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगञ्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभस्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घंवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वालाहो विद्यासे बुद्धि विशेषहो कईबार धन इकट्ठा करे फिर खर्चहो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसामें रहे है उपाय दान मंत्रसे मनोकामना पूर्ण होगी और कहींसे धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभहो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिर मानता रहै पुण्य कर्मसे सब सुख मिले भूमि लाभहो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भलेमें रहै कभी किसीका आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें यह जीव शूद्र वर्ण था परंतु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुतसा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वसहो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसीसे पाप का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवाकर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवे

का भागी हुवा सो श्रद्धा पूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा नित्य नियम [illegible] मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणोंको जिमाय गुप्तदान देतो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिकश्चोपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीत्तिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोलजीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणा अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण विशेषेण सर्वसौभाग्यसंयुत आंतलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानश्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम् उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त पिशुन्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं धनयानश्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाऽटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति दारुणम् कदापिकुमतिप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मोन्यधनंसर्वंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभरणंवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेव्रणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देच मंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलश्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षे नवनारीप्रियत्वताम सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशेवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टंविजानीयात पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहेपिमंगलं कार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाद्धमारभ्य अकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापि अयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणः खवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येनसून्यसप्ताद्धमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्यानिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का फल यहहै कि दो दफे रोजगार की वृद्धिहो और फिर मध्यम होजावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभालकर रोजगार के कामकरे परन्तु नाकिस दशामें चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनंदमें बीचे कभी किसीका आस्तीक नहो अपने कृत्यसे निर्वाहकरे एक समय ऐसा भाग्य उदयहो कि सर्व प्रकार के आनंद भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करनेसे सब प्रकारके सुख प्राप्तहों और कैसीहो प्रबल पीड़ाहो उपायसे सब शांत हो आयु बड़ीहो पुत्र तथा गृह सुखकी प्राप्तिके निमित्त संतान गोपालका जाप्य कराना श्रेष्टहै वंशकी वृद्धिहो पुत्र पौत्रोंके सुख देखे एक जीवमें विशेष प्रीतिहो हीनदशामें विशेष चिंता और क्लेशहो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हेतुक पूर्व जन्ममें येजीव कुरुक्षेत्र में जन्मले नगर का प्रधान अतिधनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेताथा वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जानकर देदेतेथे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्षकी आयु भोग मृत्युको प्राप्त हुआ दानका धन भोगा ब्राह्मणोंसे क्लेशपाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा

तिसका प्रायश्चित कर सूर्यकी आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्तहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्माननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रव्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोबार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणेयुक्तसुशीलो क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत कफाधिकप्रशांतश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्च क्रियावृक्षेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपश्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्धके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषोमित्रतांद्रशेत क्रीडितश्चविशेष विद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशा आदौयत्नमहत्फलं सर्वक्लेशत्रिनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राद्धकंतथो तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं घहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राद्धप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशव क्रमंतथा चित्तचिंता विशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चिन्नंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पण्यफलोदयंचत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाद्धकेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्यान्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीका फल यह है कि विलब से मनकी कामना पूर्णहो रोजगार लाभ बढ़े युवा वस्थामें विशेष भाग्य उदय होगा बड़े२ रोजगार करे किसीसे मिलकर धनका विशेष लाभहो प्रतिष्टा बढ़े पश्चातमें मनकी अभिलाषा पूर्णहो प्रथम बहुत जीवको दुखमाने फिर संतोष होजावे यह जीव विशेष छलछिद्री नहो और छलको पसंद नकरे नेक नियत के रोजगारसे पालन करने की अभिलाषाकरे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्तिहो एक अल्पसे बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहै फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े२ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीतिकरे किसीका बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी२ दर्दसा हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जातिथा अपने षटकर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथको मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक होगया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पापका भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं

कुमारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानुरक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराड्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः मिष्टानलवणंभोज्यंपक्कमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणतशुभम् धर्मेणधनबृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्ठरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्मप्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरोधीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वैं परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते बृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्यपरीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपितथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मायत्नंचकारयेत् बृहत्वोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातमहाचिंतोबालबृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंभवेत मिष्टंमनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहूक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगानमहोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेणचित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेंन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोह्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहरद्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहूद्रव्यव्ययोभवेत बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंताविशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणा कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षैंत्रिंशवर्षावधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णांसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरिसुखंदीर्घंदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यंमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घंपुरायकर्माणिसंचय पूर्णंसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् शून्यषष्ठमितिमायुपुरायकर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस कुन्डलीमें ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टावाला भाग्यवानहो सब तारीफ करें सलूक करनेवाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्यके काम करे भूके कोदे ईश्वरका भक्त सत्यभाषण करने वाला कईबार बहुत धन प्राप्त करे रोगोंसे बचे सत्यासत्यको पहिचाने शरीरमें फोड़ेका चिन्हहो कामदेवकी उन्मत्ततामें न्यूनबुद्धि होजाया करे जीवकी चिंताको गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करनेसे मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्नकिये अधिक क्लेश पावे धनका संदेह जीवकी चिंता आदिहो गुप्तशत्रु विशेष हानि पहुंचावे शरीरमें पीड़ारहै काम होता२ रुकजाय तथाअधूरा होजाया करे इस जीव को बड़े२ भारी खर्च के कामआवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुराय के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव श्री अयोध्या जीके पंडा के घर में जन्मा बड़े२ दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

कुछ भजन न किया तिससे दोषका भागी हुवा सो अब दोनों को यथाश्रद्धा दानदे और अपने इष्टदेव का भजन करे तो सब काम पूर्ण होवें ॥

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्ठितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी चैवअन्यवार्ताचतौलकः चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यंहानिनद्रश्यते मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधञ्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त मोदेनपूरिताः कारयेद्वंशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक बिनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा व्रणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य जानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभुयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी स्वाजतंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्ठमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेत्रवर्षेसुखंगत तात्तलाभभवेल्लोके बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्ठाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र मितेऽब्देतुशरचंद्राङ्केतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्वमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्ठति मानसीगुप्त चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंते गुप्तचिंताहृदोस्थत अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोवहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्रराममितेवर्षेत्राणत्रिंशाद्धकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुक्खितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाद्धके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिर्दिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वावाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताद्धपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहूलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यतः पञ्चसप्ताद्धमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैर्वावरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्मुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा नहो खर्च विशेष रहै रोजगार करे बड़ी हिम्मत वालाहो दूसरेकी बातको तोले श्रेष्ठ आमदनीमें कुटंबका पालनकरे कैसीही धनकी न्यूनताहो परन्तु खर्चका काम कभी नरुके इज्जत से काम हो जाय चित्तमें अयसा रहा करे परन्तु भाई बंधु अपनी सम्मतिके नहों युवावस्थामें कई बार धनकी चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंशकी वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहै घरकी पीड़ाका यत्न करे एकबार कहींसे धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मंत्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्णहो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव क्षत्रि कुलमें नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेनाका अफसर था युद्ध विद्यामें अति चतुर था एक समय संग्राममें बलवान शत्रुसे हार होती जान छलसे उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि देदी तिससे उस राजाका सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पापका भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

उस राजाको सम्पूर्ण देश नष्ट हो गया और पापको भागी हुवा तिसा निमित्त चोटीनाल जिमाव और ब्राह्मणों को विशेष दानदे तो पाप शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृवाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातञ्जगतोद्रव्यंबृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणभ्रमोपिबहु मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंबृहत्वोपिसर्वैंपूर्णंसुखान्वितः सुमित्रमेलनं चापिमिष्टबाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुर्योगनाशनं पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यबृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धंप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो रूपचिंतनं प्रथमेद्वेरुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षैंचपञ्चाब्देबृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागञ्चनंदके बालक्रीड़ा क्रमंवर्षंतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलञ्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय पूर्वंदानंसुयत्नेनअल्पायुर्योगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घंउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तांमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासत्रविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणांभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययात्रत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हिगतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहञ्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंतिराजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथा त्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेंचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दंईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घंतीर्थदेवालयेरत सूर्न्यपञ्चावधिकाव्यपौत्रजन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्धमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहनादिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्तमितिमायुभुञ्जीतोपरायमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े२ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनीरहै परन्तु खर्चके कारण धन जमा नहो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसाही भारीकाम हो ईश्वर की कृपासे सब इज्जत प्रतिष्ठाके साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जतकरें किसीसे तृष्णा नरक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन नरक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करे कईबार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रोंसे मेल रहै मिष्ट बाणी बोले किसीको कठोर वाक्य नकहे बहुत निष्प्रयोजन नबोले पंचम स्थानके ईशकी पूजा और दान मंत्रादिसे पुत्रोंका विशेष सुख मिले जीवकी आशा पूर्णहो अल्पोंके दान मन्त्रादि उपाय करानेसे आयुकी वृद्धि को श्रेष्टहै हे शुक्र पहिले जन्ममें ये ग्वालवंशीथा विशेष धनवान हो कुवां खुदवाताथा तिस भूमिसे परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होनेसे कुछ द्रव्य राजाने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रमसे प्राप्तहुवा धन पुण्यमें कुछन लगाय सब भोगमें खर्च किया तिसीसे पापका भागी हुवा तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवाँछित फल मिले धन संतान की वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

तिस निमित्त भूखोंको अन्नदानदे ब्राह्मणों को तिलोंमें स्वर्ण छिपाकर [illegible] मिले धन संतान को वृद्धिहो ग्रह पीड़ा शांतहो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर ग्रहापूज्यंविशेषोफलमाप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेंदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीशंभानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्माद्भयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतंलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जोतोकर्म बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच चोरभीतोपिगुप्तता आदौमौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचव्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ामनंदिता सुवर्णरजिताभर्णवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो कामासक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिवंद्रगतेवर्षेसरचंद्राकमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षसुखं प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बुद्धविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिश्राशक्तंमित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्य
मात्रञ्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि
विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षित
भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवश्राशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत्त पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे
भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिंकाव्यचित्तचिंताविनाशनम्
युग्मकन्यात्रिपुत्रञ्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग
वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो
यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुर्बृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं
वापिकामन्द्रंदासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े२
भाग्यवान ग्रह पड़ेहैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यूनसा कर दिया नहीं तो पृथ्वीपै बड़े२ आनंद भोगता सो अबभी पापग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के
दान मंत्र उपाय पूजा आदि करनेसे फल प्राप्त होगा जीवकी चिंता मिटेगी शुद्ध चित्तसे मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप
कराने से श्रेष्ट फलकी प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी येजीव लाभके उद्योग में रहे परन्तु मरजीके माफिक कार्य विलम्बसे बनेगा और
काम की सिद्धी होगी बड़े२ खर्च सिरपै झेले घरमें पीड़ा क्लेश होजाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ हो न सके मित्रमें
मन फंसारेहै और शुभकाममें विशेष धनखर्चहो बड़े२ फिक्र और आनंद देखे एकसमय नया जन्महो चित्तमें नई बातसोचे मित्रकी और लाभकी
बातोंमें चित्तलगारहै यत्नसे आयुपूर्णहो हेपुत्र पूर्व जन्ममें येजीव शिवमन्द्र का पुजारीथा चर्सभंग बहुत पीता औरोंको पिलाता एकसमय शिवरात्रि
को फाल्गुनके महीने एक राजाने शिवजीके निमित्त स्नान करनेको स्वर्णके घट प्रदान किए सोकुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेचआया उसके
धनसे खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

धनसे खूब दसअंग दिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त [illegible] ब्राह्मणोंको प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्धिजायते पद्दीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिंप्राप्यतेलोकेआशाच बहवोजना श्रेष्टआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकाणोंभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते वन्हिसप्तमितेवर्षेंद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेंचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेंसप्तमाब्दं बालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणावृणाविस्फोटकादथ अयत्नेनतदाकाव्य स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि विशेषेणचञ्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेंसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशाद्धमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रश्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसंविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाद्धत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोह्यानंदतापिस्यात कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्यमवाप्यते भागबृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्मपत्रीमें जो ग्रह पड़ेहैं उनका यह फलहै उच्चपदवीपावे किसीके चित्तको दुखनदे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वालाहो कैसाही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्यनमाने अपने लाभका ध्यान बनारहै चित्तमें प्यारे मित्रकी याद बनीरहै उत्तम आजीवका से पालनकरे बड़ी इज्जत प्रतिष्टा वालाहो बहुतसे मनुष्य इसकी आशामेंरहैं अच्छे२ वस्त्राभूषण घरमें स्थितरहैं एकसमय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सोकुछ नसमझे पुत्रोंके विशेषसुख और लाभके कारण संतान गोपालके मन्त्रका जाप्य करातारहै तो वंशकी वृद्धिहो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजायाकरे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछपीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दानमन्त्रसे शांतहो हेशुक्र पूर्व येजीव ब्राह्मणथा अत्यन्त प्रतिष्ठा औरधन प्राप्तकिया ज्योतिषविद्यामें निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिकाज्ञाता दानपुण्य बहुतलिया संतान नहुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वोधन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त शिवजीका पूजनकरे मन्त्रजपे गायत्रीके अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

इस पुत्रने कुमार्गमे खोया सो पापका भागीहुआ तिसनिमित्त [illegible] अनुष्ठानकरावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभुमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेग्रर्द्धप्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेयत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांग्रन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेलाभंचित्तग्राशासुपूजितं वृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णंभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चित्हानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थितेमनः ग्रानंदेनगतेकालग्रकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
ग्रल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्यमनंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत भ्रातृजन्मभवेचापिमातृकष्टश्चदारुणा भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिग्रंकाभ्यासश्चवर्द्धन बालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाद्धमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेचापिकामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा ग्रन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्य
तातमातग्रनन्दिता नगचंद्राद्धमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यश्च कार्यमात्रोभविश्यति ग्रनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घंव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षणा पुनःभागोविवर्द्धंतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति ग्रानंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे ग्रकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते ग्रापदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आपदुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वंकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता ५ददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवक्ष्यति सुतापुत्रसुखलोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाब्दमागम्य शरचत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्यभूयसे सुतपौत्रसुखसर्वंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधितत रामनामजपंनित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदत्तानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वआशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताब्दमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहै कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहै तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहै चित्त में कपट न हो आनन्द में रहै एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहै अन्त में सब प्रकार कुशल हो है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीडाज्वरादिकम् मातकष्टंविजानीयात औषधीप्रतिशांतये

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे वृणव्याधि शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भगनीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यंधनव्यय तातलाभविजानीयातविद्यायोगञ्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रञ्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्धकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये ग्रहवर्षयुतपुंसमंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतञ्चव्ययदीर्घो नसंशय जीवयोगञ्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानञ्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामञ्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यवाणीचभाषणं भूमि लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेबंशवृद्धि विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि कष्टञ्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामभितेब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयातस्वकुटंबोपिपालन नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओंऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मणाअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारणः बहुहिंसावधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकायोश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाब्दकेवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाब्दकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवानोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेऽब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापितहैं तिनका येफल है कि बड़े भागवाला जीवहो कुलदीपकहो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बीहो न्यून कारणसे चिंता विशेष मित्रसे मिलने की इच्छा रहे दो समय धनकी विशेष प्राप्तिहो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थानके ईशके कारण चित्त हटजाया करे दो ग्रह बलवान पड़ेहैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता२ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभके कारण एकादश स्थानके ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्पसे नया जन्महो ३४,४४,५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसीका बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्चझेले हेशुक्र पूर्व जन्ममें यहजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्न हुवाथा सो मृगोंकी बहुतसी हिंसा बनी तिसके शापके निमित्त ये उपाय करे स्वर्णकापत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रद्धामाहि तिसपर मृगकी मूर्ति लिख तांबके कलशमें घृतभरें मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्पनष्टहोवे वंशकी वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यबादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घंआयुस्याद् सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमातसुखंलोकेआनंदभुविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम् वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनश्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्रामाद्धंकवर्षेबाणरामभितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अर्ततेजोप्रतिष्टोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥ शुक्रोवाच॥ केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्तिं विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहस्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्ससर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशयः पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेद्ध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेऽब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगतनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुन्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घरमें मंगलाचार खुशी जीवका ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ठ पुत्र स्थानके ईशकी पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्तिहो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिलजाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिसके शाप के कारण जीवकी चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात भाग्य वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम् अर्घप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतिष्ठया रोगश्चप्रथमेवर्षे द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेव्रणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत संबंधयोग सप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम् नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवंमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहप्रीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपश्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येबातपित्तेनपीडनम् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनदानेन पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रुणुपुत्रकथामर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागतवार्तार्थयात्रकम् पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाद्धकथ्यंतेबालबृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राजद्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

नसंशयः षष्टवेदाद्धकेवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यबृद्धिदिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणाषरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंब्रारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्वेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंबृथा माघेशुक्लेनवंम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मनकी कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ संपूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्टा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य संपूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागोचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं
वाच्यंबालबृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बाल
क्रीड़ाकिलोलश्चजीवबुद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रव गाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम् पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालबृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेब्देचव्योमराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं· पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्यविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेत्तथा
अकस्मात्उपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापंचभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गोवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वंसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम् पुत्रहीनवृथासर्वदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

फलित
नृ०स०
५४७

कारयेत पूर्णयत्नेनभोकाव्यनिश्चमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वांअग्रजन्मपुनःपुनः चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्ताधर्मोस्थितंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्ताचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदानश्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसी विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेब्देचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखश्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु पश्चात भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ट है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्यकरे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ट है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला ग्वालबंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश होकर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित होकर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्णके पत्रपर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावें और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

और धनकी विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेऽब्देज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात् रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंममः तातलाभधनंबृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसर्जनम् समबालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेऽब्देचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन् कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्रराममितेऽब्देचशरराममितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य लाभप्रतीततः षट्रामाङ्केवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाङ्केवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रह गलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूमकाणिकांनिच: धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशय: पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशय: राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधञ्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजय: देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वंसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्ण पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहे पश्चात् आराम मिले अल्प बीचकर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्टा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मनसे करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ट है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्टहै मित्र में विशेष मन रहै मीन रेखा हाथमें श्रेष्टहै एक बृणका चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्टहै किसी के चित्त को यह जीव न दुखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंशमें था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

ब्राह्मण को द मूल मन्त्र गायत्री जपवावे [illegible] चन्दन से लिख सो
[illegible] पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विजरतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुसुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम् दीर्घकार्यव्ययंदृष्टासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोर्चितनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणापरिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेप्राजतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा भगिनअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रश्चमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक द्विरागमन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पजीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चन्द्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनन्दभूमिमण्डले जीवचिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चन्द्रराममितेवर्षे बाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्केशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वंसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्तं नान्यथावचनंकरे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टबाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्रसरमितेऽब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिवनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेनथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेऽब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्महत्व्याधिऔषधी सेवनंबृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधबंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस प्राणी की कुन्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डराकरे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ट है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमानसी हो जाया करे एक समय अचानक विपत्ति रंजसा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ट हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्टा वाला ग्राम पति जमीदार था दान पुन्य भी विशेष करता था एक समय इस जीवने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमत्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष बृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्णहो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुं ससुतदारासमन्वितः देवद्विजरतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेऽब्देचदंतपीड़ा ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहञ्चजायते वृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभग्नीचयुक्तयोगञ्चनान्यथा तातमात महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो बालंक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्मभितेत्तथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगञ्चप्राप्नोतिअल्पयोगञ्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगञ्च चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरबृषमितेत्तथा व्योमरामाङ्कमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधञ्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाङ्केवर्षेशून्यवेदमितेत्तथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्यपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण वेदाङ्केत्तथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवासअकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यमघृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वंऐकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वविनश्यति शरबाणमितेऽब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादंचधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् अमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्थायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंतौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षैंशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपंचईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्रागवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृधिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन की प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दग्न जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष बृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की बृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उनका उपाय जो कुछ लिखाहै सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक२ प्रकार की बार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीवका दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वयं प्रतिष्टा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फलभी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्रपर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवाकर और तांबे के कलश में घृत भरकर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रिके समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंशकी वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीवकी स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादी

खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनीरहै ।।

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोअसत्यबचनंब्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदिने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये वृणव्याधीशरीरेचउपरअपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिंचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडित पितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः चंद्रराममितेऽब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्ककंमध्येसर्व गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचिंतवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्लाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयात्गुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम्अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मात्उपद्रोवाकिंचित् कालशांतये चंद्रवेदमितेऽब्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणश्चसंकल्पंश्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेद्वेचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो
सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं बाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपश्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट
मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूलिलाभ
फलित भवेतशुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहद्रश्यते
नृ०स० अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ।। भाषा ।। हे शुक्र इस प्राणी की पत्रीका फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान पड़े हैं परन्तु
५५६ इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेषरहा करे और हेशुक्र इस जीवका खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्टा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईशका पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो आत योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीवका दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युञ्जय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहै चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्टहै विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्योंकि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवाकर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ।।

वश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे [illegible] सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतःश्रीमान्जन्मबाधाविधानतः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया दीर्घकार्योपिश्रागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षै बालक्रीड़ाकिलोलकं वृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं सुफलंतथा श्रष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा परिभाषितः पञ्चदशेश्रष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंश्रथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयाद्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते कृतेजीवर्किंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयाद्श्रौषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिता शरीरजं षट्मेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्ययोगनसंदेहोशुभकार्यंस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घंछायागात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यश्रनुष्ठानयथाविधि हवनंब्राह्मणं भोज्यंवस्त्रश्राभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणश्रानंदजायतेध्रुवम् चंद्राममितेवर्षेंसून्यराममितेतथा द्रव्य प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते श्रानादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो वत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेंसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चश्राकारीसर्वश्रायुहर्षकम् पूर्णश्रायुदशांरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोत्रारा।त्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवा।किञ्चित्कालशांतये चंद्रबाणमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रृणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलश्नानकम् तनमध्येकामबीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेवविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिंभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिचतीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगत्रनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहै यह जीव धनका उद्योग बहुत करता रहै और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ट फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य बार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की बार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च्य पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुलमें चित्र गुप्तवंशमें था और हस्ती घोड़े बाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्यायसे अन्याय कर दिया सो इसी चिता में पंडा मरा सरवस्व जाता रहा सो पंडाने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिसके कारण स्वर्णका पत्र बनवाकर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

सकल्प कर तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणिायः शुभकर्मरतःपुं सप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसतकीर्ति कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेऽब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो ज्वरपीड़ाज्वरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिश्चमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलश्चआनंदभूमि मंडले तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेऽब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखश्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेऽब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणश्चसुताजन्मन संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानश्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टश्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यधनंव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते चंद्रराममितेवर्षेबाणलोकमितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तंचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षे शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनाबाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेंव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनबांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयातश्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणागवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केंद्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहै चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्ष्म हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन बार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईशकी पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैकड़ों मनुष्यों को पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैलका अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनंद भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रियः शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुखदुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिर्विद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके ॥प्रथमेद्वितीयेवर्षेंमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरोजातारेचनंव्याधीलिक्षवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेंभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तातमातमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेंशून्यनेत्रमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भंनसंदेहोसुताप्राप्तिर्भविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेंबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाचकथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्तव्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते॥ चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्रदानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाणकथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणनान्यथावचनंमम शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षे शरबाणमितेतथा व्योमरसाद्धकेमध्यसर्वंगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यंभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसभायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषट्मितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मातमहाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यंधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वाचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नश्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोत्राभक्षणश्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फलहै कि ग्रह बलवान आनकर विराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े२ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बचकर नया जन्म हो है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े२ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश होकर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में होगई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीवका अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ठ फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ।।

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंब्रजेत दयावंतसमाहृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चमृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृणकार्यम् व्याधिशरीरेचभूतछायाचविह्वलम् उपकारकृतेसंतसर्वंकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्येधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभुमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीतिममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचित्व्याधीशरीरेचमन्त्रदानञ्चशांतये पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाङ्कवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्रराममितेवर्षेबाणरामञ्चमध्यमा शून्यवेदाङ्ककंमध्येसर्वंगाथाचकथ्यते अर्धआयुगतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सवमंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययोयोगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाङ्ककंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमा मंत्रजाप्यञ्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषित: देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत नवीनोवार्तयाचितवाहनादि सुखंलभेत चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषत: धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशय: अकस्मातमहल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यज्ञाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वंक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्यं पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगमनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरित:दासकांचनं ताम्रगुप्तदद्देत्विप्रसंकल्पंनृपतिकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचितयो वर्षमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योगका यह फलहै कि बड़े२ खर्चके काम संपूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्चका भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीवकी आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक बार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हान हो चित्त में भय सा रहै फिर धनकी प्राप्तिहो स्त्री से प्रीत और घरमें पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्पसे बचे जीवका दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पंडा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्ठपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालकं प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदं भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तंमानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिन्ताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे काव्य भ्रातभगिनचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग वृणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं अष्टमेद्वादशेवँ त्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्च विद्या प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीभीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान् चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहा भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वा मंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यं व्याधीनष्टंदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्ठञ्चफलप्राप्नुयात पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत वृणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्रराममितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य वेदाङ्केमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि प्राप्तये वाणिज्योकार्यकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्र भूमिमध्येस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्त वैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेंसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोभंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि इस जीवका चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं है किसीका बुरा नहीं चाहता सबका भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प मारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एक ब्राह्मण तिसका मित्र था कुटम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मरगया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिसके निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्रकी वृद्धि विशेष हो कामना पूर्णहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

पूरीहो पिछली अन्त आयुमें विशेष सुख भोगे सबके भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रपुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेव″ ज्वरपीड़ाचरेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षें मंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षें मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षें शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोति पत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात् तातचिंताचमातकं गुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तया नानालाभकंप्राप्ति भाग्यवृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षें शून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंति भृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्रराममितेवर्षे बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धमध्योपि मर्वंगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथा वर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंता शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीचधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुन्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनंद दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छूटे आठवें में सगाई तातका धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घरमें मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तातको लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ठहै नहीं तो जीवकी चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वालाहो इन्द्री में पीड़ा कामकी उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े२ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्पसे नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनीरहै तिस निमित्त तांबेके कलश में घृत भरकर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंशकी वृद्धि हो और बड़े कार्यो का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्तिसे जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहूभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहूसेवीनराभवेत मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यात्तो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेऽब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीञ्चरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकं बालक्रीड़ाकिलोलञ्चभग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यते शुभकार्य धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रराममितेवर्षे बाणराममिते तथा शून्यवेदाब्दमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेऽब्देच शून्यबाणमितेतथा चंद्रअल्पदुखंशुक्र दानमंत्रञ्चशांतये करमानञ्चआकारो सर्वंआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्रसुखावं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णाविजानीयात व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा व्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय ॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धनका मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडाजी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर ग्रहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ठ वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगञ्चप्राप्नोतिग्रहभागीचबालकः

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामांदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नगीनोचितवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपुजनं कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेंदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात औषधी प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेंमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगश्चप्राप्तये अल्प विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेंव्योमनेत्रश्च मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्चपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मातउपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र मितेवर्षेंसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता शरीरजं कार्यंमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तश्चधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेंशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव मंगलम् मासेवर्षेंसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेंशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगश्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेंसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेंशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुःखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषःढसुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका यह फलहै कि ग्रह बहुत उम्दा आनंदसे अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदांत मतहो स्त्रीको चित्तमें पुत्रोंकी लालसा बनीरहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभकी वृद्धि हो अकस्मात् प्राणोंका भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर नरहै गुप्त धन मिलें शत्रू हो जोर नचले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तटपर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियोंकी चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखतमें पंडित साधु मनमें कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतानकी बृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संपत्ति की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्ट हो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दय:वंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान् सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेऽब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणंकाऽयकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्धविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेरांतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा। सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवौनो
कार्यंकंचिताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुक्षचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यंकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधोऔषधीसेवनंवृथा वेदसप्ताद्धकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शत्भिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्रीका फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रतापके बैठेहैं मनका गुप्तभेद किसीको नदे विद्यासे बुद्धि विशेषहो सत्य बोलने वाला सबका भला चाहे पराये काम मनसे करे पिछली आयुमें बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीवकी तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईशकी पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्णहो एक जीवमें चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालोंको दुखित मनसे देताथा इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजन दे तो धन संतान की वृद्धि हो चिंता मिटे मनोकामना पूर्ण हो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दानसे मनोर्थ पूर्ण हो ॥

मृ०स०
फलित
५७५

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चञ्चलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यञ्चभृगुणा:परिभाषितः सुदृढश्चञ्चलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सदुगुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेंगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वंयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणकृत्यतंमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयातऔषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वंसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षे षट्रसश्राद्धमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोबाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधींसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी कालमें हो सत्य वचन बोले श्रेष्ट जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह २ के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेषहो अकल तेजहो दूसरे की बातको तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनिका मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे काहो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी कालमें खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काममें खर्क हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूहका सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दंड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमनले और भोजन जिमावे दानदे तो धन संतान की बृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् वृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घ
सुकीर्तिचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्य
मृ०स० पुनरन्तेसुरक्षण पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंवृहल्लाभदिनेदिने आदौवर्षा
फलित द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनदंकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंरुजंसर्व
५७७ विनाशनं वेदवर्षांचपञ्चाब्देषष्टमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्य चचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्ध बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेजननाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुखंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योर्हर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं अद्रनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहूचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेत्रमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणांश्रेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये हृद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुःखिता दानपुण्यसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात नगवेदमितेवर्षे शशिपञ्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चांतरोकाव्य व्यालपञ्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वं प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टांमितमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फलहै कि ग्रह श्रेष्ट हैं और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुखदुख देखे इज्जतके साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीवकी चिंता रहै छलछिद्रसे जले सत्यासत्यको पिछाने किसीका बुरा नचाहे हीनदशामें फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्तिसे रहै आनंद मानकर बिताये एक अल्पसे प्राणोंका भयहो सुयत्नसे प्राणोंकी रक्षाहो पूर्णआयु भोगे तथा लाभेशके पूजन दान आदिसे विशेष लाभहो हेयुक्त पूर्व जन्म में येजीव ग्वालवंशी था बड़ा धनपात्र था मथरापुरीके समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकारका आनंद पाताथा एक समय भूलवश हो ग्याभन गायको तालेमें बंदकर चौरासी कोसको ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मरगई आकर देखातो अतिशोक माना बहुतकुछ दानपुण्य करने परभी पापका भागी रहा सो स्वर्णकी गऊ बनाय दान करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

करेतो मनेच्छाफलपावे धनसंतान कुलकी वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण्येनविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्ठित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभचिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्यययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यविशेषेणसर्वपूर्णो भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यान्वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता व्रणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालबृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोवादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदबृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्याबुद्धि बृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टोदशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगंअंगनाप्रीतिसभव रूपयौवनद्रष्टव्या लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं
सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्य भवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय
भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहोमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण
स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाद्धमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावतकालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वंपूर्णंभविश्यति
सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह
नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेण आनंदचापिसर्वदा चद्रचत्वारिवर्षाणि
तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयातनृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान
पुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणागतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु
सारत लाभोलाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुण्यकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाद्धमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण
निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवानहैं पांच ग्रह श्रेष्ठ चार
मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा
तथा बड़ाई पावे श्रेष्ठ कर्म करे नीच कर्म से बचे सबके भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े २ खर्च के हैं सो
चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ठ दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और
न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दौनो भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो
श्रेष्ठ है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा
पूर्ण हो बड़े २ सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म भ ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रखकर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को न्यौता [illegible] मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
[illegible] गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविघ्नानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवञ्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेकृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः बाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनितश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारेधीकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेबृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहञ्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचिन्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्य अन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैप्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाद्वेसुता
पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनं सत्यवादीगुरुभक्तनृपात्मामान्यभवेत्सदा द्विजदेवसुभक्तिश्चविचित्रोवाक्यं ब्रवीत्चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धनं विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुसमागम व्ययधनमसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहुसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचदृश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वंपत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख
महत् प्राप्ते चंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति सर्वकर्मानुकूलश्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका यह फलहै प्रथम मध्यम भाग्यहो
पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो
जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे
लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्रसे गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मनकी बात कहै तथा एक जीवकी चिंता से
क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया
जन्म माने आयु पूर्ण हों पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना
पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष
विवाद रहा उसका हराभरा बाग कटवादिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुतसा स्वर्ण भरके दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाअधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापृजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्षमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्यप्रतिष्ठत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्ठप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णायुतोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः घृणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुन्य प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालबृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता विशेषेण कष्टीभुतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बतसरोवृद्धि बाल क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्धके विद्या भक्ततोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनश्यन्ति द्रव्यलाभ व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंका तदांतेबहुमोदिता शशचिन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्रायचितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाशनं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुण्येन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाब्दमायात शर
विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे
सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यंचितयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा
द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं
बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षणा
चितचिताव्ययपुण्यं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलाण्येवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग
लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा। लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऋणाग्निकारेण महादा
नेनशांतये चत्वारिंशावधिंतात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं
विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामाधि
विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वान्हिनगाब्दमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वं स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत
श्रेष्ठ और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फल नहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगल केतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और
भाग्यकी बृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय नबनेगा मध्यम लाभहो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार
जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च
और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रताप से आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशा में कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे
किसी की बुराई निन्दा न करे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघातहो हेतुक पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ
दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा नथी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म
भोज आदि न किए एक ब्राह्मण का गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज कराने से धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

धन सन्तान का विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवश्राशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रक्त्योतिलालसः तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यंते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यश्चमोदिता बहूकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
मृ०स० गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तश्चशांतये कृष्यदहोपिदृश्यंते भुतछायाश्च
फलित विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालबृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
५८२ गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालबृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यश्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसाख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वं भुयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्धमारभ्य वह्निनेत्रांतरोनथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वं यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशानुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवन्हिगतेकाव्य तथाचपचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले। सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वैषांशुभचितकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नक.दाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्दकेतथा भूमिलाभविशेषेणामन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुतकष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदेता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसाख्याधिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवधितत: द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददीर्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशागत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम् पञ्चपंचाद्धमारभ्य शून्यषष्ट्यादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्मरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यमाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारेमतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते ;तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रसषष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहताहै गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के व्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

तासे महा पापको भोगी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान देतो पाप शांतहो परमसुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं नूतनोजन्ममण्यते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदावजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं वृणचिन्हश्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम् उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षें विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सुयत्नंशांतिसर्वदा वेदाद्ध पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं ग्रहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सुतापुत्रसमायुक्तो लाभकृत्यावशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेंधनागम चित्तोह्यानंदतोपिस्याद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्यं सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र चिंतागतोगुप्तं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिश्चिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्य सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यञ्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पञ्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मनेच्छापूर्णंतोषित। द्विकन्यानेत्रपुत्रञ्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्व्ययमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगद रुग् रामनाम जपेन्नित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्ते। वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव को मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चितवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसेकरे किसीकाबुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियों को भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्ठईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यं।गूढतत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयंप्राप्यप्रतिष्ठाभंगचिंतयेत्
जीवश्चिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमनमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्ठसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभंप्रभुत्व
जायतेकुल दुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरं आयुपूर्णपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुवृद्धिधनागम गुह्यरोगेणपीड्यंतेभूतच्छायाश्चविह्वल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षंसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्तंतथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिः सद्यशांतिभवेत्तेनआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रके विद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागोंचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्धागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िता बुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्ठसंगप्रभावेणपनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपञ्चविंशाब्देतयोरंतरधनागम द्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नववनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितो रसत्रिंशेचत्रिंशाब्दे चित्तचिंतावरीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यत्तंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्वयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्ठित पददीर्घमुपस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्वत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्व वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यंचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दान ंत्रसुपुण्येनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेण किंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवा ग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता मासेवैंसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोषोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्ठाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुण्यकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्रहो लाभ मध्यम रहे काम होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेशपावे सूर्य मंगल और राहुका दानमंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति मैं आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में येजीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

कार्य विधि विशेष सुख भोग सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृत्तंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमप्राप्य बुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुदृष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातःसर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललजितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णंभवेनरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तकमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानश्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राङ्केकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीति रूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनरदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राङ्कमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राङ्केकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोह्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभ:वन सुदुग्धंमहिषीगावदासदासिश्ववाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेनतथा तात्रत्कालान्तरोत्रत्ससुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्येत्कार्यंसुप्रसिद्धसुखान्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शनःतथापिसर्वेकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशातकेनतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेत्रहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चावकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम् मासेवर्षेसुखंजातेअकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्टदारुण सर्वबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यश्चप्राप्यतेनरनारीसुकीड्यन्ते शोभितेशुभमंदिरे नगरेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वं मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतप्तविशेषत दान पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टात्रधिंचास्य आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितिय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीत रहे अपने दुखसुखका सब वृत्तान्त उससे कहदिया करे और विशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीति रक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त न दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभ खुशी देख और नाकिस दशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेष दीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंता सी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशाय नमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहा भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्द्रव्यमाप्नुयात जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनिंयेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मैंशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचितक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम् पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतवाधाज्वरादिकं वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेंवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड़्यंचगुप्तता तातचिताविशेषेण मातृक्लेश समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे द्वादशेवर्षे मध्यतद्ददाम्यहं पितुचिताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मैणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविषेशेणनूतनवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड़्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम् पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात् भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहाविदाशत प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदिता दीर्घचिंताविनश्यंति जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माद्धकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतःपत्रसमुत्पन्नोमंगलंहि दिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेण अन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वच रूपयौवनविन्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंवृद्धि पितुसौख्यश्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्बमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रोड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्बमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं ग्रामप्राप्तिग्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीममायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि. व्योमपञ्चाद्बकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र मनंदिता षष्टांषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्द में प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें व्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो। हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुखपावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्च [illegible] तमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता

श्रीगणेशायनमः कुंडलीम्यफलश्चेदंयथालाभतथान्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतांतमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिश्चिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचिनंउद्यमेणधनाप्तय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोणोरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंअर्द्धकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसोउद्यमोपुंसश्रंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्धितं:येचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीडागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीडाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहद्दुखंजीवआशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनश्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचलंचा।शिशुक्रीडामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाद्धनारभ्यत्रिंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम् कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाद्धकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तं अजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीडापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणां बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवह्निसुवर्षाणिपञ्चत्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मणासर्वसौख्यविनश्यति कर्माश्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाद्धमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुतापुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकान्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वच्छमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाद्धमध्यमा ब्रहल्लाभप्रभावेणचित्तोद्यानंदशीतलं मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापुजितोसर्वचित्तवृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभयदीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरं ताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधिपूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणंददेत विष्णुवर्मपठेन्नियंमहाकष्टनिवारणं आयुर्वृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चदासदासिश्ववाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढशुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुन्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत मान धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत सें अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े २ काम करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और वह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसवावस्थासुमोदिता भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्ठसुखोलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वंमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहुचिंताचकलशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्ठविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्रमहापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिमहामोदंव्योपारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धिभवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्णंसुपुण्येनविशेषोधनमागम अत्रानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देबृणचत्वारिपीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाब्दमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहोतातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगोपिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राब्दमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंतेआशक्तंचयदाकदा विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राब्दमागत्यविंशवर्षादनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेत्रसुखागमः फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंताविशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रयसुसंगातश्रेष्टपुण्येन किंकिंकार्यंनसिद्धति अपोतुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्वतोदिशिमंगलं शशिविंशगतंयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंताविशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चकलशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यत्नंनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत

शांतिव्रतिसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य धनसंतानप्रतिष्टित रसविशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेंशरवह्नितथांतरे गुप्तकष्टनपाड्यंतेअजीर्णं बातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्द्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेंधनपुत्रादिप्राप्यते षष्ठत्रिंशाद्धमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच्च युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेंशून्यपञ्चावधिलभेत पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदबाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगबाणाद्धमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताद्धमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृत्ति हो गई सो [illegible] के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घेत्रस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिंवृहन्नित्यंदीर्घंभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलञ्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेच्चिंतासदेहोला महानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यञ्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्ततसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
मृ०स० हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषे।सुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
फलित शिशुवृद्धिनसंदेहोदिमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतौ
५६६ सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनंमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहाद
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीडामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीडाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदशन सुन्दरंचेष्ट्यायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदंहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्ठोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगत्रिंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतपुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविधि चित्तचिंताविनष्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाब्दमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा भाग्यवृद्धिवलंदीर्घंगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनष्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातभूमिमंद्रव्य चूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय औरभीतिभवेद्रामेरात्रो निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिर्भविष्यति पञ्चवेदाब्दमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंमर्वमानवृद्धि मनंदिता चित्तचिंताविनष्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देमर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतःपरिसुखं सर्वैसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रधाक्षिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सराणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिमसाब्दमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणोशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यतां से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्य जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥